

अक्टूबर 2021 | अंक 21



संस्कृति

“साहस्रिक अभियान विशेषांक”



॥ हिंदी केवल भाषा का ही
प्रचार नहीं करती,
वरन् संस्कृति, सभ्यता और
भारतीयता की भी अग्रदूत है। ॥

हिंदी विभाग, सिंधिया स्कूल, दुर्ग, रावालियर– 474008 (मध्यप्रदेश)

हिन्दी-विभाग



बाएँ से:- श्री गणपत स्वरूप पाठक, श्री जगदीश जोशी, श्रीमती अहिल्या शिंदे, श्री धीरेन्द्र शर्मा (डीन ऑफ एक्टीविटीज),
डॉ. माधव देव सारस्वत (प्राचार्य), सुश्री स्मिता चतुर्वेदी (उपप्राचार्या), श्री मनोज कुमार मिश्रा (विभागाध्यक्ष),
श्रीमती रक्षा सीरिया, श्री सत्यकाम तोमर



शुभकामना-संदेश

हिंदी विभाग की वार्षिक पत्रिका 'उपलब्धि' के 21वें अंक के प्रकाशन से मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि समाज में चेतना की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम मातृभाषाएँ ही होती हैं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, निराला जी आदि महापुरुषों के साहित्य में अपनी भाषा के प्रति उत्कट प्रेम को बखूबी देखा जा सकता है। 'उपलब्धि' पत्रिका विद्यालय में देश के विभिन्न भागों से आए छात्रों में हिंदी के प्रति रूचि उत्पन्न करने में सफल रही है। इस पत्रिका को अपनी रचनाओं से पुष्टि-पल्लवित कर छात्रों ने यह सिद्ध कर दिया है कि हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

गुरुदेव की वह पंक्तियाँ मुझे आज भी याद हैं जिसमें उन्होंने कहा था- “हम चाहते हैं कि सारी प्रांतीय बोलियाँ जिनमें सुन्दर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने-अपने घर में रानी बनकर रहें और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिंदी 'भारत भारती' होकर विराजती रहे।” इस सूक्ति को चरितार्थ करती हुई हिंदी के बढ़ते कदमों की आहट मुझे इन युवा छात्रों की कलम में दिखाई देती है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस प्रकार की रचनात्मकता से देश की सांस्कृतिक और बहुभाषिक एकता में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी।

'उपलब्धि' को अपनी रचनाओं से आलोकित करने के लिए सभी रचनाकारों को, पूर्व छात्रों को, सहयोगी अध्यापकों को तथा संपादक मंडल को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसके सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ!

शुभकामनाओं सहित -----

मालव देव सारस्वत
डॉ. माधव देव सारस्वत
(प्राचार्य)
द सिंधिया स्कूल, दुर्ग, ग्वालियर



शुभकामना-संदेश

यह हर्ष का विषय है कि देश की आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर हिंदी विभाग की वार्षिक पत्रिका 'उपलब्धि' का 21वां संस्करण ऑनलाइन प्रकाशित होने जा रहा है। छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने और उसमें निखार लाने का सबसे प्रभावशाली माध्यम साबित हुई है विभाग की यह पत्रिका।

मेरा व्यक्तिगत रूप से मानना है कि प्रत्येक बच्चे में रचनात्मक प्रतिभा जन्म से ही होती है लेकिन आज आवश्यकता इस बात की है कि उन्हें उचित मार्गदर्शन मिले। नटखट बच्चों को यदि रचनात्मकता की दिशा में मोड़ दिया जाए तो वे बड़ी आसानी से अपनी मंजिल की ओर अग्रसर हो जाते हैं। बच्चों को अपनी मौलिक अभिव्यक्ति के लिए पूरी आजादी होनी चाहिए तभी तो वे अपने मन की बात लिखना सीख सकेंगे। बच्चों की रचनाओं में अपरिपक्वता तो रहती ही है परन्तु यह अपरिपक्वता ही उनकी मौलिकता का परिचायक है।

'उपलब्धि' का यह प्रयास रहा है कि छात्रों को मौलिक रचनाएँ लिखने हेतु प्रेरित किया जाता है। विद्यालय द्वारा आयोजित अनेक प्रतियोगिता के विजेताओं की रचनाएँ, वाद-विवाद प्रतियोगिता के श्रेष्ठ वक्ताओं की प्रस्तुति को इस अंक में विशेष स्थान दिया गया है। पत्रिका के इस अंक में छात्रों की मौलिक रचनाएँ ही प्रकाशित हो सकें इस बात का भी विशेष ध्यान रखा गया है। विद्यार्थियों द्वारा लिखे गए लेखों को पढ़कर सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि बच्चों में अनोखी लेखन क्षमता होती है।

विभाग की पत्रिका 'उपलब्धि' का बेब संस्करण का यह दूसरा अंक प्रकाशित किया जा रहा है, यह कम्प्यूटर और इंटरनेट के युग में नई तकनीकी को आसानी से अपनाने का सराहनीय प्रयास है। पत्रिका के इस प्रयास से छात्रों में छिपी हुई रचनात्मक प्रतिभा उभरकर सामने आ सकेगी तथा वे भविष्य में अपने विद्यालय का तथा देश का नाम रोशन करेंगे, यह मेरा विश्वास है।

संपादक मंडल को मेरी और से हार्दिक बधाई!

शुभकामनाओं सहित

द्विरेन्द्र शर्मा

(डीन ऑफ कोकरिकुलर एक्टीविटीज)

द सिंधिया स्कूल, दुर्ग, ग्वालियर



शुभकामना-संदेश

मुझे यह जानकार बहुत प्रसन्नता हो रही है कि विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हिंदी विभाग की वार्षिक पत्रिका 'उपलब्धि' का ऑनलाइन संस्करण विद्यालय के स्थापना दिवस के अवसर पर प्रकाशित होने जा रहा है इस अवसर पर मैं पूरे 'उपलब्धि' परिवार को बधाई देती हूँ।

हिंदी भाषा मात्र भाषा नहीं बल्कि ज्ञान और संस्कारों का आधार है। सांस्कृतिक विभिन्नता में एकता की प्रतीक है हमारी राजभाषा हिंदी... यह भाषा विभिन्न भाषा-भाषियों तथा विभिन्न संस्कृतियों के बीच एक मजबूत सेतु का कार्य करती है। यह भाषा भारत के जन-जन के मन में बसी हुई है।

'उपलब्धि' का विगत 20 वर्षों से निरंतर प्रकाशन अपने आप में ही इसकी सफलता को परिलक्षित करता है। आज विभिन्न माध्यमों द्वारा हिंदी भाषा को प्रत्येक जन तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। यह पत्रिका भी अपने नाम को सार्थक करते हुए इस दिशा में ज्ञान का प्रकाश फैला रही है। हमारे विद्यार्थियों का अपनी राजभाषा के प्रति प्रेम व साहित्य के प्रति विशेष लगाव का ही परिणाम है कि आज 'उपलब्धि' इस मुकाम पर है। छात्रों में हिंदी भाषा के प्रति लगाव पैदा करने में इस पत्रिका की अहम भूमिका रही है। इस अंक के प्रकाशन में सहभागी संपादक मंडल तथा सभी अध्यापकगण प्रशंसा के पात्र हैं।

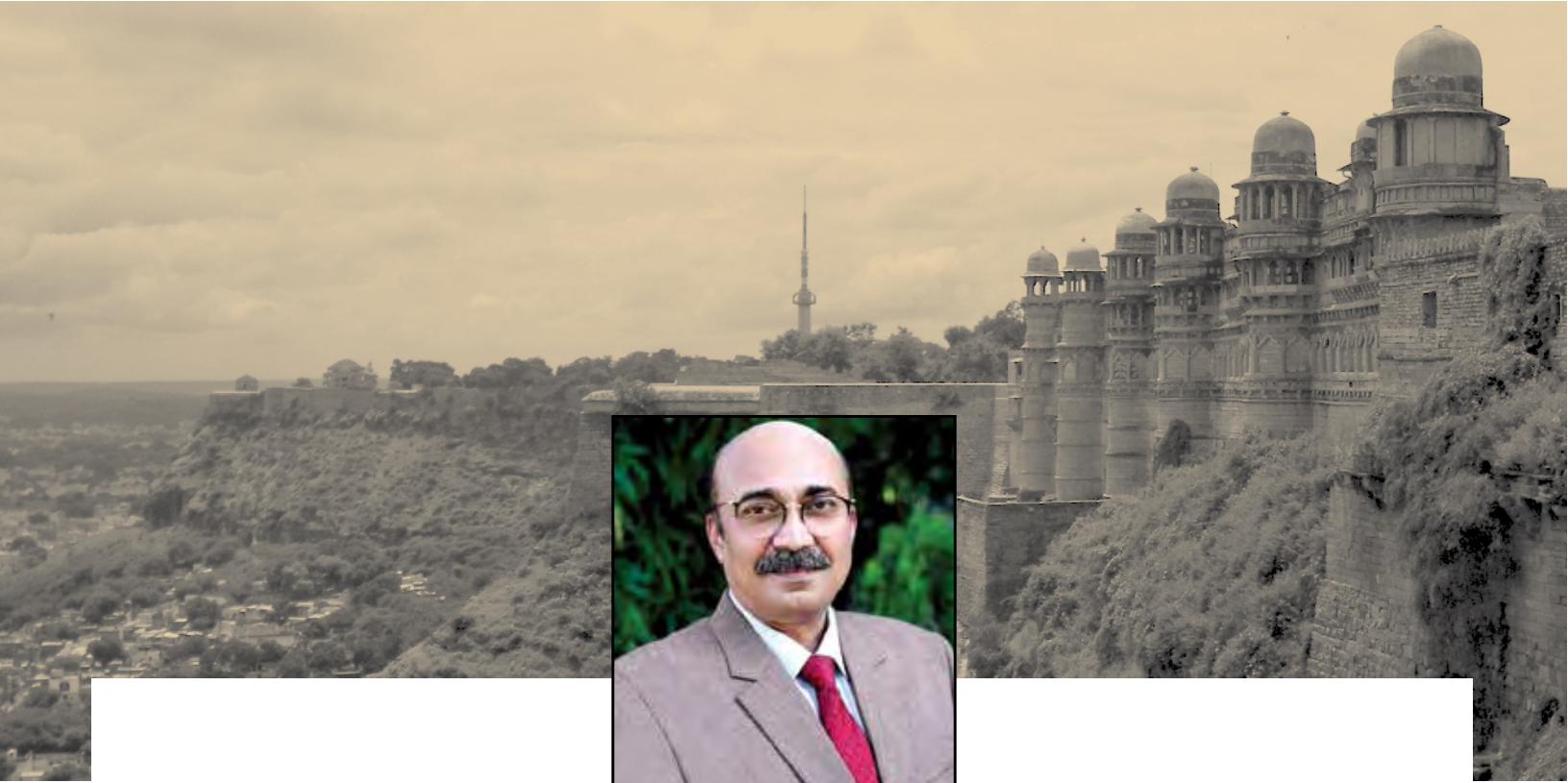
मुझे विश्वास है कि 'उपलब्धि' का यह अंक अपने उद्देश्य को पूरा करने में सफल होगा। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी अनंत शुभकामनाएँ।

शुभकामनाओं सहित....

सुश्री स्मिता चतुर्वेदी

उपप्राचार्या

द सिंधिया स्कूल, दुर्ग, ग्वालियर



शुभकामना-संदेश

किसी भी विद्यालय की पत्रिका उस विद्यालय का दर्पण होती है। उसी से विद्यालय की सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक रुचि का भी पता चलता है। विद्यालय की पत्रिका 'उपलब्धि' इस बात का प्रमाण है कि यहाँ विद्यार्थियों के भाषायी विकास के लिए विद्यालय तथा हिंदी विभाग प्रतिबद्ध है। वे इस क्षेत्र में निरंतर सकारात्मक प्रयास कर रहे हैं। 'उपलब्धि' का प्रत्येक अंक एक मील का पत्थर है जो हमारी वृद्धि को दर्शाता है, हमारी कल्पनाओं को उजागर करता है, हमारे विचारों और आकांक्षाओं को जीवन देता है।

'उपलब्धि' के 21वें अंक का 'ऑनलाइन' प्रकाशन वैश्विक महामारी की स्थिति में निश्चित तौर पर एक सराहनीय प्रयास है। इस संकट काल में विद्यार्थियों के सकारात्मक विचारों को प्रकाशित करने का प्रयास इस पत्रिका के माध्यम से किया गया है। 'उपलब्धि' न केवल हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है बल्कि देश की सांस्कृतिक धरोहर के प्रति भी जागरूकता पैदा करती है। इस अंक में कोरोना महामारी पर भी लेख प्रकाशित किए गए हैं। इससे बच्चों में शब्द शक्ति और नवसृजन की कला को बढ़ावा मिला है। इसका निरंतर बने रहना जरूरी है।

मैं 'उपलब्धि' के संपादक मंडल से जुड़े प्रत्येक सदस्य को बधाई देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका पाठकों में भविष्य में भी इसी प्रकार के उत्साह का संचार करेगी। सफल प्रकाशन के लिए अग्रिम शुभकामनाएँ!

शुभकामनाओं सहित.....


राजकुमार कपूर

(हेड ऑफ अकैडमिक्स)

द सिंधिया स्कूल, फोर्ट, ग्वालियर



संपादक की कलम से....

विकास की अंधी दौड़ ने हमारी जीवन शैली को बिल्कुल बदल कर रख दिया है। आज हमारे जीवन के मानवीय एवं नैतिक मूल्यों का पतन हो चुका है। मनुष्य अपने निहित स्वार्थों के लिए कितना गिर सकता है, कोरोना महामारी में हम सबने देखा। यदि हमें विकास के सोपानों को तय करना है तो सबसे आवश्यक है- श्रेष्ठ जीवन मूल्यों को अपनाना।

मेरे दृष्टिकोण में 'उपलब्धि' पत्रिका सार्थक अभिव्यक्ति की एक सशक्त माध्यम है। यह पत्रिका एक ऐसा मंच है जिसमें विद्यालय की उभरती प्रतिभाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान किया जाता है। छात्रों में पठन-पाठन के प्रति रुचि के साथ-साथ हिंदी भाषा के प्रति रुझान उत्पन्न करने की प्रेरणा इस पत्रिका में समाहित है। भाषा किसी भी संस्कृति का केंद्र बिंदु होती है। इस नजरिए से हिंदी और भारतीय संस्कृति का एक अटूट रिश्ता है। यदि हम इस सम्बन्ध को और मजबूत बनाना चाहते हैं तो हमें अपने राजभाषा की महत्ता समझनी होगी। उसकी महत्ता समझकर ही हम अपनी सभ्यता और संस्कृति से न्याय करने में सक्षम होंगे। यदि हमें विश्व गुरु के पद पर पुनः प्रतिष्ठित होना है तो अपनी राजभाषा का सम्मान करना ही होगा।

प्रत्येक अंक में हमारा यह प्रयास रहा है कि छात्रों की संकोची प्रवृत्ति को दूर कर आत्मविश्वास तथा सकारात्मक सोच का संचरण करने में उपलब्धि सहायक होगी।

मैं प्राचार्य डॉ. माधव देव सारस्वत का हृदय से आभारी हूँ जिनके मार्गदर्शन में विपरीत परिस्थितियों में भी इस पत्रिका का कार्य समय सीमा में पूर्ण हुआ। मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ श्रीमती अहिल्या शिंदे, विभागाध्यक्ष श्री मनोज मिश्रा जी, वरिष्ठ सहयोगी श्रीमती रक्षा सीरिया, श्री गणपत स्वरूप पाठक के प्रति जिन्होंने इस पत्रिका को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया।

सम्पूर्ण संपादक मंडल के प्रति विनम्र आभार प्रकट करता हूँ जिनके प्रयास से यह अंक पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है।

जगदीश जोशी
हिंदी विभाग

संरक्षक

डॉ. माधव देव सारस्वत
(प्राचार्य)

विभागाध्यक्ष

श्री मनोज कुमार मिश्रा

संपादक

श्री जगदीश जोशी

संपादक-मंडल

सत्यमराज (मुख्य संपादक)
आराध्य शिव शुक्ला (वरिष्ठ संपादक)
आयुष्मान राय, दीपक कुमार, विवेक सिंह, अंश गर्ग
दिवस चहल, ओमित्य सिंह, आन्या पिल्लई, आदित्य सिंह

रिपोर्टर

शुभम कुमार अग्रवाल

तकनीकी सहयोग

गैलैक्सी प्रिन्टर्स

एक निवेदन - 'उपलब्धि' का यह अंक ऑनलाइन प्रकाशित किया जा रहा है। हमारी कोशिश रहती है कि मामूली गलती भी इस पत्रिका में न रह जाए। अगर इसके बावजूद भी कोई मानवीय भूल हो जाती है तो संपादक मंडल इसके लिए क्षमा प्रार्थी है।

अभियान में अभियान



यूँ तो हम कई अभियानों का हिस्सा रहे हैं पर एक अभियान में एक और अभियान के समागम का अनुभव पहली बार हुआ था। घटना अक्टूबर 2016 की है, जब स्कूल के पूर्व वरिष्ठ छात्र, माननीय गगन खोसला जी लेह से कन्याकुमारी तक की चार हजार किलोमीटर की साइकिल यात्रा पर निकले थे। उनका साथ दे रहे थे 2012 के स्कूल के पूर्व कप्तान अर्जुन सारस्वत। उनके ग्वालियर आगमन की जोर-शोर से तैयारियाँ चल रही थीं। स्कूल से तीन अध्यापक एवं सोलह छात्रों ने निश्चय किया, क्यों न आगरा से ग्वालियर, साइकिलों पर उनका साथ दिया जाए।

ऐसे सुविचार के साथ हमने पैसेंजर ट्रेन से एक दिन पहले साइकिलें ग्वालियर से आगरा के लिए मालगाड़ी में बुक कर दी। ट्रेन के निकलने का समय सुबह का था, जो दोपहर तक आगरा पहुँचने वाली थी। सभी अध्यापक एवं छात्र ताज एक्सप्रेस से सायं 5:00 बजे आगरा के निकल

पड़े 7:00 बजे तक आगरा पहुँचने पर पूर्व छात्रों के 'आगरा संगठन' ने सभी का स्वागत किया, खूब दिलचस्प बातें हुई। माननीय गगन जी एवं उनके साथियों से मुलाकात हुई। अच्छी खातिरदारी के बीच एक व्यक्ति को रेलवे स्टेशन रवाना किया गया कि साइकिलों को वहाँ से लिया जाए।

अब जिस तरह से एक मोटी रस्सी पर जब बल पड़ते हैं और उसमें से रेशे अलग-अलग होने शुरू होते हैं। उसी तरह हमारे कार्यक्रम के अलग-अलग टुकड़े होने शुरू हुए। पता लगा पैसेंजर ट्रेन जिसे दोपहर 4:00 बजे पहुँचना था, अभी तक पहुँची ही नहीं है। हमने सोचा कोई बात नहीं भारतीय रेल अक्सर एकाध घंटा इधर-उधर हो ही जाती है। हमने और इंतजार किया, रात के 8:00 बजे आगरा स्टेशन मास्टर से बात की तो पता लगा कि ट्रेन रास्ते में कहीं रुकी हुई है। रफ्ता-रफ्ता ट्रेन रात के 12:00 बजे आगरा पहुँच गई। तुरंत भागकर रेलवे स्टेशन पहुँचे, परन्तु ये क्या? एक भी साइकिल नहीं पहुँची।

तुरंत ग्वालियर स्टेशन मास्टर को फोन लगाया। महाशय का जवाब था “कुछ और जरूरी सामान ले जाना था इसलिए साइकिल चढ़ाई ही नहीं गई। रात को आने वाली सारी ट्रेनें सुपरफास्ट हैं, जिनका ग्वालियर में 2 मिनट से ज्यादा का स्टॉपेज नहीं है, इसलिए इतनी सारी साइकिलें किसी भी हालत में ट्रेन में नहीं चढ़ा सकते हैं। दूसरे दिन दोपहर में पैसेंजर ट्रेन से साइकिलों को जरूर पहुँचा सकते हैं।”





वाह! भाई साहब हमारे अभियान का तो मटियामेट कर दिया।

सभी पूर्व छात्रों के साथ गहन विचार-विमर्श शुरू हुआ कि क्या किया जाए? किसी ने कहा हम आगरा से आपको साइकिल दिलवा देते हैं, पर इतनी साइकिल कहाँ से आएँगी? जाहिर है सिंधिया स्कूल के पूर्व छात्रों के घर गाड़ियाँ तो मिल सकती हैं पर साइकिलें कहाँ से आएँगी? वो भी सुबह पाँच बजे। फैक्टरी में काम करने वाले मजदूर भी सात बजे आते हैं। अब कुछ नहीं हो सकता, लगता है कि प्रोग्राम स्थगित करना पड़ेगा।

हमारा गगन जी का साथ देने का अभियान अस्थगित सा ही हुआ समझो। रात के एक बजे चले थे। हम मायूसी में, विचारों में मग्न खड़े थे कि तभी मानो पुराने कर्मों का फल देने पाँच देवदूत, पूर्व छात्रों के रूप में प्रकट हुए। सर, आपने हमें पहचानना क्या? आपको याद है मैं आपके गणित सुधार क्लास में आया करता था? मैं भी, मैं भी सर। आपने हमारे साथ बड़ी मेहनत की थी, और बगैरह बगैरह बगैरह। बहुत अच्छा लगा उन्हें उन्नति की राह पर बढ़ते देख। चलो कुछ तो अच्छा सुनने को मिला। तभी उनमें से एक छात्र मयंक ने पूछा सर, क्या बात है? आप परेशान नजर आ रहे हैं? आप लोगों की तैयारी तो हो गयी न? मैंने उन्हें सारा हाल कह सुनाया।

वस्तु स्थिति सुनने पर उन्होंने कहा, सर, एक मौका हमें भी दीजिए। तुरंत ग्वालियर फोन लगाया गया। मैंने कहाँ-क्यों किसी को रात को परेशान कर रहे हो? तपाक से उत्तर आया, सर इसने भी गणित में आपको परेशान किया था? आज आपके लिए परेशानी नहीं उठा सकता है क्या? पाँच मिनट बाद मुझसे कहा गया सर आप सोने जाइए, सुबह आपको सौ किलोमीटर साइकिल चलानी है। आपकी साइकिलें पहुँच जाएँगी। आप निश्चन्त रहिए। मैंने पूछा-कैसे? सर, वो लड़का ग्वालियर स्टेशन से सारी साइकिलें ट्रेन में चढ़ाकर कर ही घर वापस जाएगा।

अगले दिन सुबह 5:00 बजे सुनाई दिया “सर,” सारी साइकिलें पहुँच गई हैं, आप अपनी टीम के साथ तैयार हो जाइए।

जिसने कभी रेलवे स्टेशन से सामान लदवाया हो, वही जान सकता है कि कैसे रातभर में सुपरफास्ट ट्रेन में दो मिनट के स्टॉपेज में साइकिलें चार-पाँच के जर्तीयों में लादी गई होंगी।

उस मोटे रस्से के तार-तार हुए रेशे अब फिर जुड़ने लगे थे। सुबह छः बजे उन्नीस साइकिलें जिनकी लोडिंग अनलोडिंग में पेंच ढीले हो गए थे, उन्हें कसने के लिए एक मैकेनिक भी मौजूद था। अब हम गगन जी के साथ चलने को तैयार थे पर एक आखिरी रेशा अभी भी जुड़ना बाकी था। साइकिलें थीं उन्नीस पर सवार बीस। ग्वालियर से निकलते हुए आखिरी मौके पर एक छात्र बहुत विनती करके हमसे जुड़ गया था। हमने भी सोचा सौ किलोमीटर की ही तो बात है। परन्तु इस ताम-झाम में हम उसकी गिनती भूल चुके थे। बहरहाल, उसी वक्त फटाफट एक और साइकिल का इंतजाम किया गया। अब हमारा वास्तविक अभियान शुरू हुआ। बड़े उत्साह से हमें विदा किया गया। बताया गया, आप चलो गगन जी का काफिला थोड़ी देर में निकलेगा, और आपको रास्ते में ही पकड़ लेगा। दस किलोमीटर के बाद अल्पाहार के लिए रोका गया। गगन जी अभी निकले नहीं थे। दस किलोमीटर और आगे जाने के बाद अचानक गगन जी का काफिला फरटी से हमसे आगे निकल गया। साइकिल थी या मोटर साइकिल! इतनी तेजी से जाते हुए हमने किसी साइकिल



को नहीं देखा था। बाद में हमें बताया गया कि उनकी खास तरह की साइकिल थी, कम वजन और ज्यादा कीमत की। हमारी साइकिल की कीमत अगर तीन हजार थी तो उनकी साइकिल एक लाख तीस हजार की थी। हम अभी भी 2014 में। 1996 की खरीदी हुई साइकिल चला रहे थे, जिसे आजकल दूधवाले की साइकिल कहा जाने लगा था। कुछ दूर आगे हमें गगन जी का काफिला अल्प आहार ग्रहण करते हुए मिला। वो हमसे प्यार से मिले, और एक बार फिर अपने सुरक्षा कर्मियों के काफिले के साथ दृतगति

से आँखों से ओझल हो गए। उनका काफिला हमसे तीन घंटे पहले ही ग्वालियर पहुँच गया था। और इस प्रकार हमारे अभियान का पटाक्षेप हो गया। उन गणितज्ञों ने कैसे साइकिलों को ग्वालियर से आगरा अवतरित करवाया, इसका आज भी मेरे लिए एक आश्चर्य है।

श्री धीरेन्द्र शर्मा
प्रभारी, सह-शैक्षणिक गतिविधि

साहसिक अभियानः आनंद और रोमांच का संगम

आत्माशक्ति, आत्मविश्वास, त्याग, धैर्य जैसे मानव मूल्यों को परखने के अतिरिक्त स्वयं की चुनौती को भी परखने का सर्वोत्तम साधन है- साहसिक अभियान। किसी ने कहा है-

“कोई अपनेएब से वाकिफ नहीं होता कभी,
जैसे बू अपने दहन की आती है कब नाक में।”

अर्थात् कोई भी अपनी कमियों से परिचित नहीं होता जैसे कि मुँह तो नाक के इतने समीप रहता है पर अपने मुँह की गंध अपने नाक में नहीं आती है। ऐब ही क्यों अपनी अच्छाइयों को भी हम नहीं पहचान पाते जब तक दूसरा नहीं बताता या जब तक किसी साधन का प्रयोग नहीं किया जाता। इसी प्रकार साहसिक अभियान भी अपने आप को पहचानने का एक साधन है, एक आईना है जिसमें हम अपनी वास्तविकता को देख पाते हैं।

रोमांच और आनंद, जादू देखने जैसा अनुभव साहसिक अभियानों की आत्मा है। इसमें सहयोग, त्याग आत्म नियंत्रण, धैर्य से लेकर पाक कला तक का परीक्षण हो जाता है। कठिनाइयों से जूझने की शक्ति हो या एकाग्रता, भय से लड़ने की क्षमता या भय को हराने का आत्मविश्वास यह सभी साहसिक अभियानों के सार हैं।

किसी भी साहसिक अभियान की योजना आपको विभिन्न पहलुओं पर सोचने को बाध्य करती है। इसमें अपने दल की सुरक्षा के विभिन्न मानकों का ध्यान रखना पड़ता है, अभियान दल के सदस्यों की आयु, उनकी शारीरिक क्षमता, उनके अनुभव, अभियान के क्षेत्र का वातावरण, तापमान, रहने का स्थान, चिकित्सीय सुविधा, आपदा प्रबंधन तथा दल के सभी सदस्यों के प्रशिक्षण का भी ध्यान रखना पड़ता है।

पर्वतारोहण हो या मैदानी साइकिलिंग अथवा पर्वतीय साइकिलिंग अभियान, स्नो ट्रैक हो, जंगल ट्रैक हो या पहाड़ी ट्रैक, बंजी जंगिंग, स्कूबा डाइविंग, स्किंग हो या राफिंग इन सभी अभियानों का रोमांच आनंदित करता है। इसके साथ ही इनसे मिलने वाला अनुभव वास्तविक जीवन की अमूल्य धरोहर होते हैं जो आपके व्यक्तित्व में रच-बस जाते हैं। जो कार्य हमें अत्यंत कठिन दिखते हैं या जिन्हें

देख कर भय लगता है, तो ऐसे में जब आप स्वयं उस कार्य को करते हैं तो विभिन्न प्रकार की भ्रांतियाँ दूर होती हैं, वास्तव में जो कार्य असाध्य लगता है उसके लिए जब आप क्रिया करते हैं और सफलता मिल जाती है तो ऐसे में आपका आत्मविश्वास आसमान छूने लगता है।

यदि जीवन को बहुत करीब से देखना हो, संस्कृति को जानना हो, लोगों के सामान्य आचार-विचार, व्यवहार को जानना हो तो मैदानी क्षेत्रों में साइकिलिंग करना अत्यंत लाभदायक व आनंददायक है। सिंधिया स्कूल की ओर से द्वितीय साइकिलिंग अभियान जिसमें ग्वालियर से अहमदाबाद तक ग्यारह सौ किलोमीटर की दूरी दस दिनों में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया था उसमें कक्षा आठ से लेकर ग्यारहवीं तक के बारह बच्चे सम्मिलित हुए थे। इस अभियान में हमारे साथ एक तेरह-चौदह वर्ष का बालक भी था जिसके माता-पिता ने बमुश्किल इस अभियान के लिए मात्र हमारे विश्वास पर भेजा था क्योंकि उन्हें संदेह था कि वह बालक ग्यारह सौ किलोमीटर की यात्रा संपन्न कर पाएगा। लेकिन वही बालक जब इस अभियान को पूरा करके लौटा तो उन्होंने इस बात को माना कि उन्होंने बच्चे को बहुत कम आंका।

इतने वर्षों बाद भी इनमें से कुछ बच्चे आज भी साइकिल अभियानों का आयोजन कर उसमें हिस्सा ले रहे हैं और दूसरों का आत्मविश्वास बढ़ा रहे हैं। पंद्रह अभियानों और दस हजार किलोमीटर से अधिक की साइकिल यात्रा ने देश के विभिन्न भागों की संस्कृति को अत्यंत निकट से देखने का अवसर दिया। कई बार हमने अपने लिए कई चुनौतियाँ पेश की और उसमें सफलता पाकर आनंद का अनुभव किया। रास्ते में घटे विभिन्न घटनाओं की एक लंबी सूची तैयार की जा सकती है जिसने हम सब पर कमोबेश प्रभाव छोड़ा और जो आज भी हमारे जीवन वह हमारी सोच को प्रभावित कर रही हैं।

इसी प्रकार उत्तराखण्ड के एक प्रसिद्ध स्नो-ट्रैक “केदार कांठा” जाते हुए पर्वतीय साइकिलिंग अभियान का अनुभव भी अत्यंत सुखदायक रहा है यहाँ प्रकृति के साथ निरंतर आगे बढ़ते जाइए, जीवन की ऊँचाइयाँ चढ़ने के लिए हमें प्रतिक्षण मेहनत करनी चाहिए यहीं सीख हमें यहाँ से मिली। मंजिल से अधिक आनंददायक मंजिल तक पहुँचने का रास्ता होता है। इन पहाड़ों और उनके बीच निरंतर बहती हुई नदियों से हम विनम्रता और निरंतरता का पाठ पढ़ते हैं।

पर्वतीय क्षेत्र में साइकिलिंग करते हुए वास्तव में आप अपनी शारीरिक क्षमता और तकनीकी दक्षता को चुनौती देते हैं। लक्ष्य तक पहुँचने का संकल्प आपको आपके भीतर छिपी शक्तियों से भर देता है। ऐसे अभियानों में जब आप एक दल के रूप में कार्य करते हैं तो आपसी भाई चारे और स्नेह-प्रेम तथा त्याग का संदेश मिलता है। आप दूसरों की गलतियों से सीखते हैं, अपने अनुभव दूसरों को बताते हैं ताकि उनसे गलतियां न हो।

पहली बार रुद्रप्रयाग से ऋषिकेश तक पाँच दिनों की कक्षा नौ के विद्यार्थियों के साथ राफिटिंग अपने आप में एक अद्वितीय अनुभव था। पानी से डरने की प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए तो यह बड़ा भयावह था। रुद्रप्रयाग में कल-कल का शोर करती हुई अलकनंदा नदी को देखकर भयभीत होना स्वाभाविक था परंतु सहयोगियों और मित्रों के साथ ने इस डर को थोड़ा कम कर दिया था। हिचकोले खाता हुआ राफट जब तीव्र रफ्तार से दूधिया जल से संग्राम करता था तो दिल “धक” से रह जाता था और पूरी ताकत से राफट की रस्सी को पकड़कर अपने आप को बचाने का प्रयास करने की क्रिया को याद करने से आज भी रोमांचित हो उठता हूँ। सोचता हूँ कि लहरों के इन्हीं उत्थान-पतन में जीवन का रहस्य छिपा है। छात्रों का जल से अठखेलियाँ करना, सुरक्षित रूप से चट्ठानों से छलाँग लगाना, डर की स्थिति में जोर-जोर से गीत गाना या नारे लगाना, वहाँ के परिदृश्य को एक अनुपम छटा से भर देता था। पहाड़ों के बीच जीवंत नदियों में मानो वसंत आ जाता था। इस साहसिक अभियान में मनोरंजन का विशेष स्थान रहता है।

प्रत्येक साहसिक अभियान की अपनी अलग विशेषताएँ होती हैं, उनमें साहस का स्तर भी अलग-अलग होता है। इन अभियानों में पर्वतारोहण अपना एक विशेष स्थान रखता है। इसके लिए विशेष कौशल की आवश्यकता पड़ती है। लेकिन कहा गया है न कि :-

‘मंजिलें उन्हों को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है।
पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।’

हालाँकि सभी साहसिक अभियानों में हौसले की आवश्यकता होती है लेकिन पर्वतारोहण में हौसले के उच्च स्तर की आवश्यकता होती है। कई बार ऐसे स्थल भी आते हैं जहाँ उस समय आपकी कोई मदद नहीं कर सकता, आपको स्वयं पूरी कोशिश से वहाँ से निकलना पड़ता है या अपनी

मदद स्वयं करनी पड़ती है। लेकिन शिखर पर पहुँचकर जो आनंद आता है उसके विषय में बात करना व्यर्थ है क्योंकि वह अनुभव का विषय है। जब तक आप स्वयं अनुभव नहीं करेंगे तब तक आप इसे जान नहीं पाएँगे क्योंकि शब्द उसका वर्णन नहीं कर सकते।

जीवन में हमेशा आपको बने बनाए रास्ते नहीं मिलते बल्कि कई बार हमें अपना रास्ता स्वयं बनाना पड़ता है और यही होता है जब हम जंगल में ट्रैकिंग पर जाते हैं। इसमें हमें उन पेड़ों की भी पहचान हो जाती है जो हमारे लिए घातक हैं, कष्टदायक है। रानीखेत में उरोली के जंगलों में एक मानचित्र लेकर अपने लक्ष्य को खोजने का उत्साह अत्यंत आनंददायक था। एक नायक के रूप में दूसरों के लिए रास्ता बनाना तथा उन्हें मंजिल तक पहुँचाने का प्रभार मन को संतोष से भर देता है। इस पथ पर चलने वाले यात्रियों को समय का भी विशेष ध्यान रखना पड़ता है कि हम कितने आगे तक जाएँगे? और कब तक लौटेंगे?, कितनी देर में हम कितना चल पाए हैं? और कितना चल पाएँगे? आदि। चढ़ाई पर चढ़ते हुए किस प्रकार हमारी हर साँस हमें चुनौती देकर आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करती है और लौटते समय किस प्रकार ऊँचाइयों को छूने के बाद की संतुष्टि हमारे पैरों में पंख बांध देती है। सफर से लौटकर उसकी चर्चा साहस, उत्साह और आत्मविश्वास से भर देती है।

“जंगल ट्रैकिंग” से अलग हटकर “स्नो ट्रैकिंग” की अपनी अलग ही विशेषता होती है। एक विशेष ऊँचाई पर जाने के पश्चात धीरे-धीरे बर्फ की छोटी-छोटी पट्टियाँ मिलनी प्रारंभ होती हैं और जैसे-जैसे आप ऊपर चढ़ते जाइए बर्फ की चादर धीरे-धीरे पूरे पहाड़ को ढँक लेती है। जैसे-जैसे आप और ऊपर जाएँगे, या तो बर्फबारी हो रही होगी या रात में पड़ी बर्फ पेड़ों की लंबी डालियों और पत्तियों पर बिखरी मिलेगी, रात के बक्क बर्फ के भार से पेड़ों के तनों के टूटने की ध्वनि आपका ध्यान आकर्षित करती है। मंजिल तक पहुँचने के पश्चात ऊँचाई से धरती की सीमाएँ मिट जाती हैं एक बहुत बड़ा और मनमोहक परिदृश्य आपके सामने होता है जिसको बस आप अपने हृदय में समेट लेना चाहते हैं। उस समय का चित्र ऐसा होता है कि -“हल्की-सी एक छुअन, बनता हर जीवित क्षण।” और यह चित्र आजीवन आप के मानस पटल पर अंकित हो जाता है। “केदारकांठा” में बिताए पिचहत्तर

घंटे का वह समय मेरे जीवन के कुछ विशेष क्षणों में से एक है। निरंतर ऊँचाइयाँ छूते हुए पहाड़ों पर पाँच घंटे की वह पैदल यात्रा अविस्मरणीय रहेगी।

सिंधिया स्कूल में साहसिक अभियानों के आयोजन की अटूट परंपरा असंख्य छात्रों और अध्यापकों के जीवन में रोमांच और आनंद का अनुभव करवा रही हैं। जब हम साहसिक अभियानों की बात करते हैं तो निश्चित रूप से हमारे मन में, विशेषकर अभिभावकों के मन में एक भ्रम रहता है, एक चिंता रहती है जो कि स्वाभाविक है क्योंकि तुलसीदास ने लिखा है- “अधिक प्रीति मन भा संदेहा” अर्थात् जिससे अधिक प्रेम होता है उसकी सुरक्षा को लेकर मन में विभिन्न प्रकार के संदेह पैदा होते हैं। परंतु यह ध्यान रखना आवश्यक है कि इन सब के लिए प्रशिक्षित अध्यापकों व प्रशिक्षकों का एक पूरा समूह होता है जो विभिन्न परिस्थितियों का गहन अध्ययन करने के पश्चात ही निश्चय करता है कि किसे, कब और किन परिस्थितियों में साहसिक अभियानों में भाग लेना है।

जीवन में यदि वास्तविक आनंद और रोमांचकारी अनुभव पाना चाहते हैं तो साहसिक अभियानों का हिस्सा अवश्य बनें। इसके लिए कोई निर्धारित आयु नहीं है परंतु इसके लिए शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बहुत आवश्यक है और जब स्वास्थ्य है तो साहसिक अभियान भी है, आनंद भी है और रोमांच भी।

मनोज कुमार मिश्रा
अध्यापक, हिंदी-विभाग

भारत प्राकृतिक आपदाओं से लड़ने में सक्षम है-

प्राचीन काल से ही भारत-भूमि ऋषि-मुनियों की तपस्थली रही है। इस पावन भूमि पर संतो और महापुरुषों ने ‘परहित सरिस धर्म नहीं भाई’ को अपने जीवन का आधार बनाया। कष्टों और विपत्ति में धैर्य न खोना हमारी विशेषता रही है। विपत्तियाँ चाहे मानव द्वारा दी हों या प्रकृति द्वारा, विपत्ति ही होती हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम भगवान राम के ही वंशज हैं जिन्होंने समूद्र पर विजय प्राप्त की थी, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम भगवान श्रीकृष्ण के वंशज हैं, जिन्होंने इंद्र के प्रकोप से बचाने के लिए पूरा गोवर्धन पर्वत ही उठा लिया था। वे हमारे ही पूर्वज

थे जो समूद्र का सीना चीर कर अमृत निकाल लाए थे। कैसे भूल सकते हैं भगवान शिव की लीला का जिसमें उन्होंने गंगा को अपनी जटाओं में उलझा लिया था। यह सब मेरे भारत में ही हुआ और हुआ भी तब, जब आज की तरह न विज्ञान था न तकनीक। किन्तु आज हमारे पास तकनीक है जिसकी सहायता से हम मौसम, बाढ़ जैसी आपदाओं से निपटने के लिए तैयार हैं। कुछ वर्ष पहले चेन्नई में आई भयंकर बाढ़ से भारी नुकसान हुआ, हवाई अड्डे बंद हो गए तथा हवाई जहाज ‘शो पीस’ बनकर रह गए। रेल तथा बस सेवाएँ ठप हो गई। किन्तु यह हमारी शक्ति एवं साहस का ही परिणाम था कि ठीक चार दिन बाद ही चेन्नई बिजली से जगमगा उठा, रेल फरारी भरने लगी, वायुयान आकाश का सीना चीरकर चुनौती देने लगे और आज स्थिति सामान्य है।

पिछले एक दशक से आपदाओं और हमारा चोली दामन का साथ रहा है, देश की अर्थव्यवस्था इतनी मजबूत है कि यदि सूखा पड़ता है तो किसानों को मुआवजा दे दिया जाता है, यदि बाढ़ आती है तो हमारी सेनाएँ अपने कौशल से लोगों की रक्षा करते हैं। गुजरात में आए भूकंप को देखकर यही लगता था कि शायद गुजरात देश के नक्शे से ही गायब हो जाएगा। किन्तु आज गुजरात पूरी दुनिया के लिए एक आदर्श राज्य बना है। यह सब हमारी तकनीकी और दृढ़-इच्छा शक्ति का परिणाम है कि हम एक और जहाँ प्राकृतिक आपदाओं से अपने देशवासियों को बचा रहे हैं वही दूसरी ओर अपने पड़ोसियों को मानवीय आधार पर भी सहायता उपलब्ध करा रहे हैं। जम्मू कश्मीर की बाढ़ हो या उत्तराखण्ड के केदरनाथ में शिव का तांडव हो चाहे पड़ोसी मुल्क नेपाल में भूकंप की त्रासदी। हम हर कसौटी पर खरे उतरे हैं। इतना ही नहीं अब तो हमने कोहरे का भी उपाय खोज लिया है जिसके कारण ट्रेनों को रद्द नहीं होना पड़ेगा। आज जल, थल और आकाश में हमने विजय प्राप्त कर ली है। मंगल पर हमारे कदम पड़ चुके हैं, तो फिर इन आपदाओं से घबराना कैसा? हमने परिणामों के भेद खोल लिए हैं। चाँद-तारों से संपर्क साध लिया है फिर ये आपदाएँ तो क्षणिक हैं। यह सच है कि ‘विपदाएँ केवल कायरों को ही डरा सकती हैं बहादुरों को नहीं।’

तनीष अग्रवाल
कक्षा-9 (दौलत सदन)

जीवन का मकसद समझा गई...

कोरोना वायरस ने करोड़ों लोगों की जान ले ली। पूरी दुनिया में मौत का तांडव है। शायद ही कोई परिवार ऐसा होगा जिसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इस वायरस ने हानि नहीं पहुँचाई हो? लोग अपनों के अंतिम संस्कार में चाहकर भी शामिल नहीं हो सके। इस महामारी का खौफ अभी भी बना हुआ है। इसके कारण पूरी दुनिया अपने घरों में कैद होने को मजबूर है। वर्तमान परिपेक्ष्य में सामाजिक दूरी ही एकमात्र साधन है जो इस वायरस को फैलने से रोक सकती है। हम भी काफी दिनों से लॉकडाउन में हैं। किसी के घर जाना या सगे संबंधियों के आने पर विद्यालय का सख्त प्रतिबंध है। सबके घरों की दहलीज पर अदृश्य लक्षण रेखा है और कौन भला इसे लाँधना चाहेगा? जान तो सभी को प्यारी है। घर पर बैठे-बैठे मेरा मन भी विचलित हो रहा था और घर की चार दीवारी के अंदर घुटन महसूस होने लगी थी। यद्यपि किले पर स्वच्छ हवा से मन को अत्यधिक सुकून मिल रहा था क्योंकि इस लॉकडाउन में हवा स्वच्छ हो गई है। आस-पास की नदियों का पानी भी पीने लायक हो गया है। इस 'लॉकडाउन' में कम से कम यह तो एक सकारात्मक पक्ष मिला।

इसी बीच हमें किसी आवश्यक कार्य से देहरादून जाना पड़ा। हम रास्ते में थोड़ी देर के लिए रुके कि लड़खड़ाते हुए एक वृद्ध महिला हमारे पास आ पहुँची। बदन पर फटे कपड़े, आवाज में कँपकँपाहट, शरीर लाठी के सहारे आधा झुका हुआ था। गरीबी और मजबूरी की मार उसके चेहरे पर साफ दिखाई दे रही थी। मेरा मन दया से भर गया। मैंने सोचा शायद इस 'लॉकडाउन' में ईश्वर ने मुझे इस बेसहारा की मदद के लिए ही भेजा है। 'नर सेवा नारायण सेवा' की भावना मेरे मन में जाग उठी। मेरी बेटी अदिति भी मेरे साथ थी और उसने भी कहा कि हम इस गरीब महिला की मदद करेंगे। जीवन और मृत्यु के मिलन के समय इससे अच्छा और क्या किया जा सकता है? मन ही मन सोचा और जेब से 200 के दो नोट निकाले और सोचा आज बूढ़ी अम्मा खुश हो जाएगी, लेकिन अम्मा की कोई प्रतिक्रिया न देखकर हम सब हैरान रह गए। अदिति ने कहा कि शायद यह 200 के नोट को 20 का नोट समझ रही हैं और इसको यह कम लग रहे हैं। इस बार मैंने जेब से 100 के चार नोट निकाले और मन ही मन

खुश होने लगा कि चलो आज कोई पुण्य कार्य करने का अवसर मिला। हैरानी की बात यह थी कि अम्मा के चेहरे पर अब भी कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखी। मुझे लगा कि शायद यह कोई मानसिक रूप से अस्वस्थ है जो पैसों को कोई महत्व नहीं दे रही है। अब मुझे हैरानी भी हो रही थी और परेशानी भी कि किसी की मदद करो तो उनके ये हाल हैं। कई तरह के विचार मेरे मन में आ रहे थे। मैंने थोड़े ऊँचे स्वर में कहा अम्मा बहरी हो क्या? और कितना चाहिए तुम्हें? तभी तो लोग आजकल किसी की मदद नहीं करते..... मन में तरह-तरह के ख्याल आने लगे। अम्मा की अभी भी कोई प्रतिक्रिया नहीं?

कुछ देर बाद अम्मा अपने हाथ से खाने का इशारा करने लगी। अदिति को न जाने क्या सूझा? वह दौड़कर गई और कार में से पूँड़ी ओर सब्जी लाकर अम्मा को दे दी। बेचारी उन पूँड़ियों पर टूट पड़ी और देखते ही देखते उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान दिखाई देने लगी। मुँह में दाँत न होने की बजह से अम्मा को पूँड़ी खाने में कुछ परेशानी भी हो रही थी लेकिन इस बात का हमें ज्ञान था कि भोजन मीठा नहीं भूख मीठी होती है। वह तुरंत ही जमीन पर बैठ गई और पूँड़ियों को खाने लगी। हमें लम्बा सफर तय करना था इसलिए सोचा अब अम्मा से विदा लेते हैं। वह दोनों हाथों से ईश्वर के प्रसाद की तरह सिर झुकाकर खाने लगी। उसका ध्यान सिर्फ और सिर्फ उस खाने पर ही केंद्रित था। उसे अब इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि यहाँ पर कोई है भी या नहीं? खाने के बाद मेरी ओर देखा और हँसकर बोली, बेटा एक बेटी ही माँ के दर्द को समझ सकती है। मुझे भूख लगी थी बिन बोले मेरी बेटी (अदिति) को पता चल गया कि अम्मा को भूख लगी है। खाना मिल गया, बस भूख मिट गयी और क्या चाहिए? मैं एक गरीब भिखारिन आपको दुआ के सिवाय और क्या दे सकती हूँ! रखो, तुम्हारे ये कागज के टुकड़े मेरे किस काम के? भला इन रूपयों से कभी किसी की भूख मिटी है? ये रूपये तो इंसान की भूख बढ़ाने में लगे हैं। इस भूख का जिंदगी भर कोई उपाय नहीं, कोई अंत नहीं। हमने कार स्टार्ट की और आगे बढ़ गए। सारे रास्ते यही सोचते रहे कि एक बेसहारा जीवन का मकसद समझा गई।

जगदीश जोशी
(हिंदी विभाग)



SHOT ON MI A1
MIUI 11

पहाड़ पर चढ़ना एक अद्भुत साहस का काम है.....

पहाड़ पर चढ़ना जान जोखिम में डालने जैसी चुनौती है। पहाड़ पर चढ़ना हर किसी के बस की बात नहीं है बिना जुनून के आप इतना बड़ा फैसला ले ही नहीं सकते। पर्वतारोहण सबसे साहसिक खेलों में से एक है जो रग-रग में जोश भर देता है। लोग इस गतिविधि में रोमांच और आनंद का अनुभव करते हैं। इसके अलावा, यह अपने आप को फिर से जीवंत करने के लिए यह एक शानदार गतिविधि भी है। पर्वतारोहण एक अभियान है जो आपको प्रकृति के करीब लाता है और आपको इसके साथ जुड़ने में मदद करता है। हमारे विद्यालय के कई विद्यार्थियों ने पर्वतारोहण के क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता का लोहा मनवाया है। इसी से प्रेरित होकर मैं भी पर्वतों की चुनौतियों का सामना करने वाले तिरसठ छात्रों के दल में शामिल हो गई। दल का नेतृत्व वरिष्ठ अध्यापक श्री मनोज मिश्रा जी के हाथों में था। 2 मार्च 2020 को हमारे दल ने देवभूमि की सुन्दर वादियों के लिए प्रस्थान किया। चौबीस घंटे की लम्बी यात्रा के बाद हम मोरी नामक एक स्थान पर पहुँच गए। वहाँ के परिसर का नाम टोंस है। टोंस नदी के तट पर स्थित होने के कारण ही इस स्थान का टोंस है। कुछ समय आराम करने के पश्चात् हमें दो समूहों में विभाजित कर दिया गया। मैं प्रथम समूह का हिस्सा थी। इस पूरी यात्रा में हमें ट्रैकिंग के साथ साथ घंटे साइकिलिंग भी करनी थी। दो दिनों तक हमें कड़े प्रशिक्षण से गुजरना पड़ा ताकि हमें आगे कोई परेशानी नहीं हो।

5 मार्च की सुबह पहला दल अपनी यात्रा के लिए निकल पड़ा। मन में उत्साह और साहस की कमी नहीं थी। इसी उत्साह के साथ हमें साइकिलिंग शुरू की और सुहावने मौसम ने भी हमारा साथ नहीं छोड़ा। हल्की बारिश की बूंदों ने 23 किलोमीटर तक हमारा साथ दिया जिसको तय करने में लगभग पाँच घंटे का वक्त लगा। यह था हमारी यात्रा का पहला चरण। मुझे साइकिलिंग करते समय वहाँ के लोग और बच्चों से बात करने का मौका मिला। उन सब से बात करके मन खुश हो गया था। अपने दूसरे कैप्प पर एक रात रुकने के पश्चात् हम अपनी मंजिल केदारकांठा के दूसरे चरण के लिए सुबह-सुबह रवाना हो गए। उस रात भारी बर्फबरी के चलते मार्ग में गीली मिट्टी और काफी फिसलन



थी। इस कारण हमें चलने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा। लेकिन एकजुट होकर सभी ने एक दूसरे की मदद कर इस कठिन कार्य को आसान बना दिया। अखिरकार हम अपने दूसरे चरण 'जुड़ा का तालाब कैम्प' पहुँच गए। अपने टैंट गाड़ने के बाद हमने प्रकृति की गोद में बर्फबारी का भरपूर आनंद उठाया। यहाँ का प्राकृतिक नज़ारा देखकर मुझे एहसास हुआ कि मानव ने प्रकृति के साथ कितनी छेड़-छाड़ की है।

चोटी फतेह करने की तिथि 7 मार्च निर्धारित की गयी थी। लगातार बर्फबारी के कारण दल के सभी सदस्यों के पास गर्म कपड़ों की कमी पड़ रही थी। अब मौसम ने भी हमारा साथ छोड़ दिया। दो दिन तक इंतजार करने के बाद हमारे प्रशिक्षकों ने अब आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। "जहाँ चाह वहाँ राह" को ध्यान में रखते हुए हम सब ने हार नहीं मानी और उनसे एक दिन और इंतजार करने की इजाजत माँगी। हमें यह मिशन हर हाल में पूरा करना था। भगवान की कृपा से अगले दिन सूरज चमका और उसी के साथ हमारी आशाओं की किरणें भी। 9 मार्च सुबह 4 बजे हम चाँद की रोशनी में अपनी मंजिल के लिए कैम्प से निकल पड़े। रास्ता कठिन होने के साथ साथ बहुत सुन्दर भी था। चाँद की कि रोशनी जब ताजी

-ताजी बर्फ पर गिर रही थी, तो मानो ज़मीन पर मोती चमक रहे हो। हमने प्रभु से उस दिन सूर्योदय पर्वत शिखर से देखने की कामना की थी और ईश्वर की कृपा से हमारी यह इच्छा भी पूरी हो गई। अपनी मंजिल पर पहुँचते ही जो खुशी हम सब को मिली उसे मैं शब्दों में बयाँ नहीं कर सकती। मेरी आँखे तो उस सुन्दर दृश्य से हट ही नहीं रही थी। चारों ओर बर्फ से ढँकी पर्वत चोटियों को देखकर मेरा वहाँ से जाने का मन नहीं कर रहा था। 'डाउनहिल' आते समय ताजी बर्फ पर चलना एक अलग ही चुनौती थी और इस चुनौती का हमें पहले ही प्रशिक्षण दिया जा चुका था। अंततः हम सकुशल अपने टोंस कैम्पस पहुँच गए। यहाँ आते ही होली का जश्न शुरू हो गया। दूसरा दल भी सफलतापूर्वक अपनी मंजिल फतेह कर वापस आ गया।



13 मार्च को हम उदास खुशियों में दिल्ली के लिए रवाना हो गए। प्रकृति को इतने नजदीक से देखने का यह मेरा पहला अवसर था। इतनी सुन्दर जगह को छोड़ना आसान नहीं था लेकिन विद्यालय भी तो जाना था ना....

अदिति जोशी

(पूर्व छात्रा-जयाजी 21)

प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में हमारा देश सक्षम है...

प्रक्ष

भारत प्रकृति की गोद में बसा देश है, हिमालय जिसका मुकुट है, वन जिसकी भुजाएँ हैं, सागर जिसके चरण धोता है ऐसे देश के निवासी हर प्रकार की आपदा से कुशलता पूर्वक बच जाते हैं।

जो देश गंगा को अपनी शर्त पर पृथ्वी पर ला सकता है, जो देश समुद्र का सीना चीर कर अमृत खोज सकता है, वह देश आपदा से निपट सकता है।

जिस देश के निवासी (सैनिक)-40 डिग्री तापमान में भी देश की रक्षा करता है, जिस देश के सैनिक समुद्र के तल पर अपना डेरा (पनडुब्बी) डाल देते हों, जिसके जहाजों से आकाश भी थरथराता है, वह देश अपना बचाव कर सकता है।

हमने गुजरात का भूकंप देखा, हमने उत्तराखण्ड का भूकंप, हमने महाराष्ट्र का भूकंप देखा और अपार क्षति के बाद भारत और भी मजबूत और आकर्षक रूप में उभरा है।

जिस देश के बच्चे बचपन में ही शेर के दांत गिन देते हों उनके सामने आपदा नहीं ठहर सकती।

हम उस देश के निवासी हैं जिसके पूर्वजों ने सूरज को निगल लिया था, जहर का गले से नीचे नहीं जाने दिया। हमारे पूर्वज संजीवनी की जगह पूरा पर्वत उठा लाए ऐसा देश प्राकृतिक आपदा से निपट सकता है।

विप्रक्ष

प्रकृति की लीला के आगे ज्ञान, विज्ञान, धन, दौलत सब व्यर्थ है। चार सेकंड का भूकंप सदियों तक अपने घाव छोड़ जाता है।

हमने केदारनाथ आपदा देखी, हमने बिहार की बाढ़ देखी, हमने बादलों का फटना देखा, हमने आकाशीय बिजली को गिरते देखा, लेकिन इनका उपाय करने में लाचार हैं।

हमारे देश की आर्थिक स्थिति इतनी खराब है कि 60 डॉलर प्रति बैरल कच्चा तेल होने पर भी हमें पेट्रोल, डीजल 100 रुपये लीटर खरीदना पड़ रहा है।

कौन भूल सकता है 2020 के उस मंजर को जब कोविड के दौरान लोगों का अपने बच्चों को गोद में लेकर हजारों किलोमीटर पैदल जाना।

कौन भूल सकता है उन किसानों द्वारा की गयी आत्महत्या को जो कर्ज में डूबकर मर गए।

यहाँ तो हर वर्ष सर्दी, गर्मी, बरसात, डेंगू, स्वाइन फ्लू आदि न जाने कितनी बीमारियाँ हैं जिनसे आज भी हम जूझ रहे हैं, प्राकृतिक आपदा की बात तो छोड़िए।

जो देश आज भी रोटी, कपड़ा जैसे बुनियादी वस्तुएँ नहीं जुटा सकता, जो देश आज भी लोटा लेकर रेल पटरियों पर बैठता हो, वह प्राकृतिक आपदा से क्या निपट पाएगा ?

अर्णव जोशी

कक्षा-8ए (महादजी सदन)

आने वाले समय में सभी वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन ऑनलाइन ही होना चाहिए

अंतर-सदनीय वाद-विवाद प्रतियोगिता (वरिष्ठ वर्ग)

प्रतियोगिता दिनांक 12 सितम्बर को आयोजित की गयी जिसका विषय था- आने वाले समय में सभी वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन ऑनलाइन ही होना चाहिए और मैं इस मत से पूर्णरूप से सहमत होते हुए अपने विचार आपके समक्ष प्रस्तुत करने जा रहा हूँ।

आज के इस दौर में तकनीक के बिना जीवन अधूरा है। इसका उपयोग साँस तक लेने के लिए भी जरूरी हो गया है। मेरे विपक्षी मित्रों हम सब जानते हैं कि बिना तकनीक के जीवन नहीं चल सकता। आज हर छोटी बड़ी चीज तकनीक पर ही आधारित है।

मैं अपने मित्रों से कहूँगा कि या तो स्वयं बदल जाओ नहीं तो समय आप को बदल देगा। परिवर्तन प्रकृति का नियम है और हमें इस परिवर्तन को खुशी-खुशी स्वीकार कर लेना चाहिए। ऑनलाइन वाद-विवाद पर विवाद ही क्यों? आप ऑनलाइन शॉपिंग का उदाहरण ले लीजिए। इसका विरोध करने वाले मेरे मित्र भी ऑनलाइन शॉपिंग के दीवाने होंगे ही। संसाधन सीमित होते जा रहे हैं। वैज्ञानिकों के

कविवर पंडित जगन्नाथ प्रसाद मिश्र ‘उपासक’ जी

कविवर पंडित जगन्नाथ प्रसाद मिश्र उपासक के बारे में चंद शब्द लिखना चाहता हूँ जो कि मेरे परम पूजनीय स्वर्गीय नाना जी हैं। उनका जन्म दिनांक 12 जून सन् 1912 को जौरा जिला मुरैना (मध्य प्रदेश) में हुआ था। उनकी साहित्य-साधना का क्षेत्र ग्वालियर और ‘साहित्य सृजन’ काल ईसवी सन् के चौथे दशक से सातवें दशक तक है। दिनांक 4 नवंबर 1969 को सरस्वती के इस मौन साधक ने अपनी परलोक लीला संवरण की।

उपासक जी का साहित्य काव्य-सृजन से लेकर कहानी एवं निबंध-लेखन तक फैला हुआ है। उनका कृतित्व रूप और कथ्य की दृष्टि से वैविध्य पूर्ण है ही, जीवन-दर्शन की दृष्टि से भी उसमें चेतना के अन्यान्य धरातलों पर सत्य के साक्षात्कार की अनूठी अभिव्यञ्जनाएँ सन्निहित हैं। उनकी कविता में वैयक्तिक स्वप्न-लोक विचरण के साथ-साथ सामाजिक सरोकार भी उतना ही तीव्र है। यह तथ्य उनको अपने युग के कवियों में विशिष्टता प्रदान करता है। उनके काव्य में छायावाद के सुमानी उन्मन मन की तन्द्रा के ठीक विपरीत राष्ट्र-प्रेम का उन्मेष भी पूरी तरुणाई के साथ मौजूद है।

उपासक की कविता में छायावादी शब्द सौष्ठव और अज्ञात के प्रतिप्रेम की अवसादोमुखी अभिव्यक्ति को देखते हुए आरंभिक स्तर पर उनकी कविता वैयक्तिक कुंठा या पलायन से उपजी अभिव्यक्ति मात्र दिखती है, परंतु तथ्यतः ऐसा नहीं है।

उनकी कविता का सौंदर्यशास्त्र बावजूद अपनी पारंपरिक छंदात्मकता, कोमलता, एन्द्रीय और अंतिंद्रीय के मध्य की रहस्यात्मकता के ऐसी सामाजिक यांत्रिकी से परिचालित है, जिसमें ऊर्जा का केंद्र व्यक्ति और समाज है।

इसी सामाजिक संदर्भ में उनका संत्रासविशिष्ट रूप में अभिव्यक्त हुआ है। यही कारण है कि कवि ‘पुकार’ और ‘दो पंछी’ जैसे प्रेम-शृंगार परक रचनाओं के साथ-साथ ‘नौकरी’ जैसे अनाकर्षक शीर्षक से काव्य लिख सके और ‘खेत और खलिहान’ शीर्षक से गीत गा सके।

यह गौरतलब बात है कि वायवीय चिंतन से कल्पना लोक की सृष्टि करने के स्थान पर यथार्थ से आँखें मिलाकर

अथक प्रयास से आज ऑनलाइन की सुविधा मिल रही है, उसे अपनाने से परहेज क्यों? यदि हम ऑनलाइन को नहीं अपनाएँगे तो भविष्य में कभी भी आर्थिक रूप से मजबूत नहीं हो पाएँगे। सब कुछ तो ऑनलाइन है आप का बैंक अकाउंट आपकी उंगलियों पर है, रेलवे आरक्षण आपकी उंगलियों पर है, इस कोरोना काल में कॉलेज एप्लीकेशन उंगलियों पर है, फिर यदि वाद-विवाद को ऑनलाइन कर दिया जाए तो फिर इतना शोर शराबा क्यों?

विकास चाहे देश का हो या फिर व्यक्ति का इसमें तकनीकी का बहुत बड़ा योगदान है। इस तकनीक ने मानव जीवन को अत्यंत सहज, सरल और रोचक बना दिया है। तकनीकी वरदान है तकनीक के सहारे जब हम ऑनलाइन पढ़ाई कर सकते हैं, तो वह वाद-विवाद करने में नुकसान ही क्या है? आप यात्रा कर रहे हैं, आप किसी भी जगह पर हैं, आप अस्पताल में बिस्तर पर हैं, ऑनलाइन प्रणाली सबके लिए वरदान है। आज इस कोरोना काल में शिक्षा पर बहुत बुरा असर पड़ा है लेकिन ऑनलाइन तकनीक के माध्यम से बच्चों को घर पर बैठकर ही शिक्षा दी जा रही है।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली ज्ञानियों, कामकाजी महिलाओं तथा पुरुषों के लिए सर्वोत्तम माध्यम है। आप किचन में हो या और किसी भी स्थान पर आप वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। यदि किसी खुली प्रतियोगिता में जेल का कैदी भी भाग लेना चाहे तो वह जेल से ही भाग ले सकता है।

आने वाले समय में ऑनलाइन वाद-विवाद ही नहीं अपितु गीत, संगीत, नृत्य सब ऑनलाइन ही होगा। ‘हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा’ न टीमों के लिए खाने की व्यवस्था न रहने की व्यवस्था न आने-जाने का खर्च और प्रतियोगिता भी सफल.....

ऑनलाइन वाद-विवाद में आप दुनिया के किसी भी कोने से ऑनलाइन जुड़ सकते हैं। वह भी घर बैठे। ऑनलाइन वाद-विवाद प्रतियोगिता होने से प्रतिभागियों की संख्या अधिक से अधिक बढ़ेगी।

अतः अंत में मैं यही कहना चाहता हूँ कि भविष्य में सभी वाद-विवाद प्रतियोगिताएं ऑनलाइन ही होनी चाहिए।

भरत जैन

कक्षा-11 (दौलत सदन)

लिखने की तड़प उपासक जी ने उस समय भी मौजूद थी जब छायावाद और प्रगतिवाद को ही अधिक प्रतिष्ठा दी जा रही थी।

इस नजरिए से देखें तो कवि उपासक अपने युग के परिवर्तन के अग्रदूत कहे जा सकते हैं।

रचनाएँ :- पुकार, नौकरी, खेल और खलियान, फुटकर

राहुल भारद्वाज

अध्यापक

गीत - पनघट टूट गया

सुधा-सलीम -सिंचित आशातट साथी छूट गया।

मंद-मधुर अत्यावली गुंजन,
कुंकुमयुत पग-नुपुर शिंजन,
स्मित आनन चंचल अवगुंठन,
ग्राम-वधु कल केलि-कलाशय, साथी रूठ गया।
पनघट फूट गया।

तृष्णा-विकल खेचर मँडराते,
खिन्न पथिक आगे बढ़ जाते,
लता विपट मरते मुरझाते,
ब्रज चूर्ण ले कोई पथ कीछाती कूट गया।
पनघट फूट गया।

खिलते नहीं सुमन शर्माले,
दुवदिल-कोपल हैं पीले,
छिन्न भिन्न पाषाण हठी ले,
घृष्ट पवन का अलक-उत्पीडन करना छूट गया।
पनघट फूट गया।

बीती का भूला सा सपना,
बरबस तोड़ रहा दम अपना,
शेष रही बस करुण कल्पना,
सजलोंत आँखों के आँसू कोई लूट गया।
पनघट फूट गया।

अब न सुलभ प्यासे को पानी,
अब न यहाँ पनघट की रानी,
अब न यहाँ पहचान पुरानी,
अब न यहाँ प्राणों को मिलता रस का घूँट नया।
पनघट फूट गया।

नयन गंगा के पहिली पार,
हृदय-मंदिर में रहता कौन?
देखते रहते किस की राह,
प्रणत पलकों के प्रहरी मौन।

राहुल भारद्वाज

अध्यापक

तोड़ा, मोड़ा, जोड़ा और हो गया।

आज के समय घटते जंगलों के कारण लकड़ी की कमी होती जा रही है। इस बजह से लोहे के सामानों की उपयोगिता बढ़ती जार ही है। लोहा लगभग दो हजार साल पूर्व से ही भारत की अर्थ व्यवस्था में मुख्य भूमिका निभाता आ रहा है। लोहा भारत से अफ्रीकी देशों में भी भेजा जाता रहा है। लोहा एक भूरे रंग की धातु होती है जो नमी में जल्द ही मलिन हो जाती है। लोहे में चुंबकीय गुण भी होता है जो चुंबक की तरफ तेजी से आकर्षित होता है। लोहा मनुष्य के शरीर के लिए भी एक आवश्यक तत्व है, इसलिए इसका उपयोग कुछ दवाइयों में भी किया जाता है। जब लोहे की कमी मनुष्य के शरीर में होती है तो यह शरीर के लिए संकटदायक हो जाता है। जब मनुष्य के शरीर में लोहे की मात्रा अधिक होती है तो वह भी हमारे लिए हानिकारक होता है। तो आप समझ सकते हैं कि लोहा मनुष्य के शरीर के लिए कितना ज़रूरी है।

लोहा एक ऐसी धातु है, जिसका उपयोग कई तरह के औजार और खम्भे बनाने में किया जाता है। लोहे का उपयोग घर में काम में आने वाली सामग्री एवं हथियार बनाने के लिये भी किया जाता है। मनुष्य आज घर बनाने से लेकर बस, रेल इत्यादि यातायात के साधनों के लिये भी लोहे का उपयोग करता है। कलियुग में लोहे का उपयोग भारत ही नहीं पूरी दुनिया में बहुत ही ज्यादा किया जाता है।

जिस युग में सबसे ज्यादा लोहे का आविष्कार तथा उपयोग किया गया उसे लौह युग कहते हैं जो कि पाषाण युग के बाद आता है। पुराने समय से ही मनुष्य के लिये लोहा उपयोगी साबित हुआ है, जो अब भी जारी है। मगर लोहे के उपयोग का एक ही तरीका रहा है चाहे वह पुराना युग हो या वर्तमान युग, गरम किया, तोड़ा, मोड़ा, जोड़ा और हो गया।

गरम मतलब गरम करके मनचाहा रूप बनाना। तोड़ा मतलब उसे अपनी आवश्यकता के अनुरूप काटा। मोड़ा मतलब सोचा गया रूप प्रदान करना। जोड़ा मतलब वैलिंग करके दो उपकरणों को जोड़ना। हो गया मतलब जो बनाना है, वो तैयार हो गया।

हमारे विद्यालय में इसी सिद्धांत पर आधारित होकर बच्चे विभिन्न प्रकार की कलात्मक वस्तुएँ बनाते हैं, इनमें से कुछ वस्तुएँ सजावटी होती हैं तो कुछ घर में उपयोग होने वाली वस्तुएँ। सबसे बड़ी बात तो यह है कि बच्चे अपनी कल्पनाशक्ति से कबाड़ि में फेंके गए लोहे के टुकड़ों को एक नया आकार देते हैं और वे बहुत मेहनत करके इसे बनाते हैं। अपनी बनाई हुई चीजों की तो खुशी ही अलग होती है।

अरुण कुमार शर्मा
मैटल आर्ट वर्क

मेरी मनाली यात्रा



हमारे विद्यालय ने व्यायाम के शिक्षक की देख-रेख में गर्मियों की छुट्टियों में पर्यटन की एक योजना बनाई। बीस विद्यार्थियों का एक समूह रेलगाड़ी से कालका के लिये रवाना हुआ। कालका से शिमला के लिये छोटी पटरी की रेलगाड़ी है। यह साठ किलोमीटर का पहाड़ी रास्ता है जिसे यह रेलगाड़ी आठ घंटे में तय करती है। गाड़ी टेड़े-मेड़े रास्तों पर धीरे-धीरे अपना सफर तय करती है। इसके छोटे से इंजन के साथ केवल सात-आठ ही डिब्बे होते हैं। कोई भी चलती गाड़ी को पकड़ सकता है। प्रकृति को नजदीक से देखेने का मेरा यह पहला अवसर था।

पहाड़ सूर्य की उजली धूप में चमक रहे थे। हर वस्तु चमक रही थी। वृक्ष इतने ऊँचे थे कि मानो वह आकाश से बातें कर रहे हों। चारों ओर हरियाली छायी हुयी थी।

हम मैदानों की चिलचिलाती गर्मी पीछे छोड़कर आये थे और अब सर्दी लग रही थी तथा गर्म कपड़े पहनने की आवश्यकता महसूस हो रही थी। हमारे अध्यापक ने हमारे लिये ग्रैंड होटल में कमरे बुक करा दिये थे जो बस अड्डे के निकट कार्ट रोड पर स्थित था। इसे 'ठाकुर होटल' भी कहते हैं। हमने अपने कमरे के दरवाजे-खिड़कियाँ अच्छी तरह से बन्द कर लिए क्योंकि कई बार बादल कमरे में घुस आते हैं एवं बिस्तर एवं कपड़े भिगो जाते हैं। जब हम रिज पर बैठे हुए थे तब वहाँ बादल हमारे पास से गुजर रहे थे हवा में ठंडक और नमी थी। शिमला पहाड़ों के खूबसूरत पर्यटन स्थलों में से एक है, इसीलिए

अंग्रेजों ने इस शहर को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया था। राज्यपाल के निवास को उच्च शिक्षा केन्द्र में बदल दिया गया है। अब यह हिमाचल प्रदेश की राजधानी है। यहाँ अब बहुत भीड़ बहुत बढ़ गयी है। अब यहाँ पर पर स्कैडल पांइट अथवा रिज पर वो एकान्त के क्षणों का आनंद नहीं उठाया जा सकता। रिज से जाखू मंदिर के लिये बहुत खड़ी चढ़ाई है। वहाँ पर पहाड़ की चोटियाँ चारों ओर ऊँचे वृक्षों से घिरी हुई हैं। ऐसा कहा जाता है कि हनुमान जी लक्ष्मण जी के लिये संजीवनी बूटी यहीं से ले गये थे। यहाँ पर चारों ओर बन्दर ही बंदर हैं जो पर्यटकों को गुस्से से देखते हैं। बन्दरों को खुश करने के लिये पर्यटकों को अपने साथ चने ले जाने पड़ते हैं।

माल रोड पर एक 'स्केटिंग रिंग' है जहाँ युवा स्केटिंग का शौक पूरा करते हैं। शिमला के चारों तरफ की खूबसूरती पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। कुफ्री का बर्फीला स्केटिंग रिंक केवल दस किलोमीटर दूर है। यहाँ आकर दिन कैसे बीत गये पता ही नहीं चला और अब वापस जाने का समय आ गया। होटल के मैनेजर ने हमें बताया कि हमारी बुकिंग समाप्त हो गयी है। जब हम कालका से वापिस आ रहे थे हमें लग रहा था काश! हम कुछ दिन ओर वहाँ रुक पाते।

विवेक सिंह
कक्षा-9 (दौलत सदन)

इंटरनेट और आज की दुनिया...

यद्यपि 'इंटरनेट' विषय वर्तमान और भविष्य दोनों से संबंध रखता है परन्तु मैं इसकी रूपरेखा अपने बचपन की स्मृतियों से जोड़ने का प्रयास करूँगी। मेरा बचपन आज से लगभग 40 वर्ष पूर्व ऐसे बीता जब न तो हर घर में टी.वी. फ्रीज जैसे उपकरण होते थे और न ही ए.सी. की सुविधा। गर्मियों की छुट्टियों में परिवार के सभी सदस्य एकत्रित होकर विदेश यात्रा या किसी द्वीप की यात्रा नहीं जाते थे, बल्कि हमारी छुट्टियाँ दादी-नानी के घर से शुरू होकर वहाँ समाप्त होती थीं और इससे हमें असीम आनंद की अनुभूति होती थी। आपस में कितनी पारिवारिक चर्चाएँ होती थीं, कितना आनंद आता था, समय तो वास्तव में जैसे पंख लगाकर उड़ जाता था। महीना डेढ़ महीना कब कट जाता था पता ही नहीं चलता था। पहले के घरों में अधिकांशतः एक रेडियो हुआ करता था जिसके माध्यम से शाम 8:00 बजे आकाशवाणी से प्रसारित देश-दुनिया के समाचार मिलते थे। सभी घर परिवार एक साथ इकट्ठा होकर कार्यक्रमों का आनन्द लेते थे। इस तरह परिवारों की एकता और संबंध चला करते थे। इसके अलावा पत्राचार ही संपर्क का एक मात्र साधन था। इतनी सी होती थी दुनिया.. न फोन थे, न मोबाइल और न इंटरनेट। दुनिया ने आज बहुत तरक्की कर ली है। परिवार समय की मांग के अनुरूप छोटे हो गए हैं। अपनी जिंदगी को सुखमय बनाने के लिए इंसान नए-नए आविष्कार कर रहा है। निःसंदेह यह एक अंतहीन प्रक्रिया है और कुछ पता नहीं है इसकी मंजिल कहाँ होगी ? समय के साथ चलना तो अति आवश्यक है, नए आविष्कारों का आत्मसात करना भी तर्कसंगत है लेकिन अच्छे-बुरे की परख करना भी जीवन का अति आवश्यक अवयव है। इंटरनेट के आविष्कार के बाद जिंदगी जितनी आसान हुई है, उतना ही भ्रम व जोखिम भी इसने पैदा कर दिया है। यह परोक्ष रूप से तो अवश्य है पर कब आपके लिए असामान्य स्थिति उत्पन्न करके आपको संकट में डाल दें कुछ पता नहीं। कंप्यूटर के उपयोग तक तो फिर भी जोखिम सीमित था पर स्मार्टफोन ने तो जिंदगी ही बदलकर रख दी है। जिंदगी की प्रत्येक आवश्यकता का आज एक ही समाधान है स्मार्टफोन और इंटरनेट। जब तक इसकी सेवाएँ मूल्य आधारित थी, फिर भी गनीमत था पर जब से कम से कम कीमत पर इस सुविधा को उपलब्ध कराने की कंपनियों में होड़ लगी है तब से हम

जानें-अनजानें में इसकी गुलामी की जंजीरों से बंध गए हैं। हमारा समय हमारा अपना नहीं रहा। बिडंबना ऐसी हो गई है कि साथ-साथ रहते हुए भी हम साथ नहीं रह पा रहे हैं। आज की परिस्थितियों में जीवन यापन, व्यवसाय इसके बिना संभव नहीं रह गया है। साथ ही हमें ज़रूरत की हर सुविधा घर बैठे उपलब्ध है और वह भी त्वरित गति से। मुफ्त में उपलब्ध कुछ ऐप जैसे गूगल, व्हाट्सएप, फेसबुक, टिकटर, यूट्यूब, इंस्टाग्राम आदि हमें हर सुविधा मुफ्त में उपलब्ध करा रहे हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? इस ऐप का संचालन जो भी संस्था करती है, उसके संचालन पर कितना खर्च आता है? कभी कल्पना करके देखिये! कितने आकर्षक वेतन पर इनके कर्मचारी कार्य करते हैं। उनके सर्वर की कीमत का अंदाज लगा पाना आम आदमी के लिए असंभव है। फिर भी ये हमें बिना किसी मूल्य के सभी सुविधाएँ क्यों उपलब्ध करा रही है? हम लोग पूरा दिन इनके उपयोग में निकाल देते हैं। बिना समझे कि हम इसका कितना मूल्य चुका रहे हैं और हमें मिलता क्या है? एक भ्रमित अनुभूति है कि हम कितनों के संपर्क में हैं, हमारा संबंधों का दायरा कितना विशाल है? हमारे हजारों की संख्या में मित्र हैं, अनुयायी हैं और यह सोचकर-सोचकर हम स्वयं को लोकप्रिय महसूस करने लगते हैं। हम यह भी जानते हैं कि आभासी दुनिया और वास्तविक दुनिया में बहुत फर्क होता है। वर्चुअल और 'एक्चुअल' में कोई मेल नहीं है। आपके ज़रूरत के समय 'एक्चुअल' ही साथ निभाएंगे जिनको 'वर्चुअल' के चक्कर में हम नजर अन्दाज कर देते हैं। कितना समय हम इन आभासी रिश्तों को 'गुड मॉर्निंग' करके और उनको चित्र भेज कर खुश होते हैं, क्योंकि ये सब सुविधाएँ हम मुफ्त में समझते हैं। मेरा इस लेख को लिखने का यह आशय कदापि नहीं कि हमें इन माध्यमों से दूरी बनाकर रखनी चाहिए। पर हाँ, अपने समय का मूल्य पहचानना चाहिए। आभासी दुनिया में ही तल्लीन न रहकर वास्तविकता को भी महसूस करते रहना चाहिए। आपसी रिश्ते और संपर्क व्यक्तिगत रूप से निभाने पर ज्यादा जोर देना संभवत अधिक श्रेयस्कर होगा, क्योंकि 'वर्चुअल, वर्चुअल' ही होता है, वास्तविकता से उसका कोई मुकाबला नहीं। आइए इस समस्या पर मंथन करें, अपने परिवार के लिए समुचित समय निकालें और वास्तविक संबंधों के महत्व को समझें।

शिखा चतुर्वेदी

हाउस मदर (जनकोजी सदन)

स्वच्छता एक यात्रा है मंजिल नहीं...

यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है। महात्मा गांधी जी की यह बात मुझे बहुत अच्छी लगती है और यह बात स्वच्छता पर पूर्ण रूप से लागू होती है। अगर हम समाज में बदलाव देखना चाहते हैं तो सबसे पहले हमें स्वयं में बदलाव लाना होगा और यह अपने घर से शुरू करना होगा। हर कोई सोचता है कि पहले दूसरा व्यक्ति शुरू करे फिर मैं.... एक दूसरे के कारण हम कभी भी शुरू नहीं कर पाते हैं। साफ-सफाई से हमारा तन-मन दोनों स्वस्थ और सुरक्षित रहता है। यह हमें किसी और के लिए नहीं, बरन् खुद के लिए करना है। यह जागरूकता जन-जन तक पहुँचानी होगी। हमें इसके लिए जमीनी स्तर से लगकर काम करना होगा। हमें बचपन से ही अपने अन्दर सफाई की आदत डालनी होगी। हमें सिखाना होगा कि एक कुत्ता भी जहाँ बैठता है, उस जगह को साफ कर बैठता है। जब जानवरों में साफ-सफाई के प्रति इतनी जागरूकता है, फिर हम तो इन्सान हैं। दुःख की बात तो यह है कि हम अपना कूड़ा पड़ोसी के घर के आगे सुबह-सुबह डाल देते हैं और बात करते हैं स्वच्छ भारत अभियान की....

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार का सराहनीय प्रयास है। देखा जाए तो अपने आस-पास साफ-सफाई रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। अगर सभी को अपनी जिम्मेदारियों का आभास होता, तो इस अभियान की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। कितनी शर्म की बात है कि हर कोई अपना घर तो ज़रूर साफ करता है, लेकिन अपनी सारी गंदगी, कूड़ा-कचरा बाहर गलियों, सड़कों और चौराहों पर फेंक देते हैं। ये नहीं सोचते कि पूरा देश ही हमारा घर है। इसे भी साफ रखना हमारा ही काम है। कोई पड़ोसी या बाहर का नहीं आएगा साफ करनें, इसे हमें ही साफ करना है।

इस अभियान से अब मुझे लगता है कि हमारे देश के लोग सफाई को लेकर काफी चिंतित हैं। जैसा कि हम सभी ने कहावत में सुना है 'स्वच्छता भगवान की ओर जाने का अगला कदम है।' हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि अगर भारत की जनता प्रभावी रूप से इसका पालन करे तो आने वाले समय में स्वच्छ भारत अभियान से पूरा देश भगवान का निवास स्थल सा बन जाएगा। एक सच्चे नागरिक होने का हमारा कर्तव्य है कि न गंदगी फैलाएँ

न फैलाने दें। देश को अपने घर की तरह चमकाएँ ताकि हम भी गर्व से कह सकें कि हम भारतवासी हैं। मैं इस अभियान की शुरुआत अपने छात्रावास के कमरे से करने का प्रयास करूँगा। यदि मैं अपने इस मिशन में कामयाब हो गया तो मैं समझूँगा कि मैंने भी इस पावन कार्य में अपना योगदान दिया है।

जय गोयल

कक्षा-11 (दौलत सदन)

समृद्ध प्राचीन संस्कृतियों वाला-नेपाल

दुनिया में नेपाल सबसे प्राचीन समृद्ध संस्कृतियों वाला देश है। नेपाल सैलानियों के लिए आदर्श गंतव्य है। आइए, आज कुछ अछूते और अनदेखे पहलुओं का आनंद लेते हैं। नेपाल जिस विशाल विविधता का दावा करता है उनमें कोहरे से भरे जंगल और तराई से लेकर दुनिया के सबसे ऊँचे पहाड़ों की बर्फीली चोटियाँ शामिल हैं। 'ट्रैकिंग', पर्वतारोहण, शानदार दृश्यों में राफिंग तीन मुख्य चीजें हैं जिनके लिए नेपाल प्रसिद्ध है। पंद्रह राष्ट्रीय और वन्यजीव पार्क (दो यूनेस्को विरासत स्थल हैं) के साथ नेपाल पृथ्वी पर ऐसी जगह हैं जहाँ आप एशियाई गेंडे और रॉयल बंगाल टाइगर को आसानी से देख सकते हैं।

अनादि काल से ही नेपाल और भारत के लोगों के बीच बहुत ही मधुर संबंध रहे हैं। खुली सीमा प्रणाली के कारण दोनों देशों के मध्य शादी-विवाह तथा आजीविका के अवसरों के लिए सीमा पार करने पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

पारिवारिक एवं सांस्कृतिक संबंध, सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा के अलावा राजनीतिक मामलों में भी दोनों देश साथ-साथ हैं। अपनी 'नेबरहुड फस्ट पॉलिसी' को महत्व देते हुए भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने सात साल के कार्यकाल में चार बार नेपाल का दौरा किया, जो उस प्राथमिकता को दर्शाता है जो भारत सरकार काठमांडू के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने के लिए कठिबद्ध है। हालाँकि आजकल नेपाल और भारत के मध्य राजनीतिक स्तर पर सब कुछ ठीक नहीं है। कई बार दोनों देशों के संबंधों में कुछ मतभेद भी पैदा हो जाते हैं। पिछले साल 2020 में भारत और नेपाल दोनों देशों के बीच संबंधों में खटास आ गई थी लेकिन भारत के साथ

संबंधों को फिर से मजबूत करने के प्रयास में नेपाली प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली ने 15 अगस्त को भारत के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर पी.एम. मोदी को फोन पर बधाई दी और बातचीत जारी रखने का संकल्प दोहराया। इसके बाद रॉ प्रमुख, सामंत गोयल सहित भारत के तीन वरिष्ठ गणमान्य व्यक्ति सेना प्रमुख एम.एम. नरवाने और विदेश सचिव श्री हर्षवर्धन श्रृंगला भारतीय जनता पार्टी के विदेशी प्रकोष्ठ के अध्यक्ष के अलावा, विजय चौथवाले दोनों देशों के बीच मतभेदों को दूर करने के लिए पिछले साल अक्टूबर और दिसंबर के बीच नेपाल गए थे। इस तरह के दौरों ने उन संचार चैनलों को फिर से खोल दिया जो एक साल से अधिक समय से रुके हुए थे।

नेपाल और भारत के बीच सांस्कृतिक संबंधों के कई पहलू हैं। धर्म शायद सबसे महत्वपूर्ण कारक है और इन दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को आकार देने में प्रमुख भूमिका निभाता है। दोनों देशों के लोग बड़ी संख्या में इधर से उधर जाते हैं। हर साल हजारों नेपाली नागरिक भारत में तीर्थ स्थलों की यात्रा करते हैं। चार धाम यात्रा लगभग सभी हिंदुओं की जीवन भर की आकांक्षा होती है। भारत में और भी कई जगह हैं जिन्हें नेपाली लोग पवित्र स्थल मानते हैं। इनमें हरिद्वार, ऋषिकेश, वाराणसी, गया, वैष्णोदेवी और कई अन्य शामिल हैं।

इसी तरह नेपाल में कई धार्मिक स्थल हैं जिन्हें बहुत ही पवित्र और महत्वपूर्ण माना जाता है। ऐसे धार्मिक स्थलों में काठमांडू में पशुपतिनाथ, रूपन्देही जिले में लुंबिनी (बुद्ध का जन्म स्थान), जनकपुर में राम-जानकी मंदिर (जनक और सीता का जन्म स्थान), और कई अन्य शामिल हैं। दोनों ही देशों के लोग समान धार्मिक विश्वासों और दर्शनों को साझा करते हैं, और समान देवताओं और अवतारों का सम्मान करते हैं और उनकी पूजा करते हैं। इस कारण दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंध बहुत मजबूत और अविभाज्य हैं।

अपने पड़ोसी देशों के साथ सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण संबंधों को विकसित करने और बढ़ावा देने की नेपाल की हमेशा इच्छा रही है। भारत के विरोधी किसी भी तत्व को अपने क्षेत्र का दुरुपयोग नहीं करने देने के नेपाल के इरादे आज भी स्पष्ट हैं। दोनों देशों के बीच खुली सीमा हमारे संबंधों की एक अनूठी मिशाल आज भी बनी हुई

है। बिना किसी प्रतिबंध के हमारे लोगों की एक दूसरे के क्षेत्र में मुक्त आवाजाही आज भी बरकरार है। भारत और नेपाल के बीच रक्षा क्षेत्र में व्यापक सहयोग है। भारत रक्षा उपकरण की आपूर्ति और प्रशिक्षण प्रदान करके नेपाल सेना (एन.ए) के आधुनिकीकरण में सहायता करता रहा है। आपदाओं के दौरान सहायता, संयुक्त सैन्य अभ्यास, साहसिक गतिविधियाँ और द्विपक्षीय यात्राएँ नेपाल के साथ भारत के रक्षा सहयोग के अन्य पहलू हैं। नेपाल सेना के कई रक्षा कर्मी भारतीय सेना के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण लेते हैं। भारत-नेपाल बटालियन स्तरीय संयुक्त सैन्य अभ्यास सूर्य किरण भारत और नेपाल में बारी-बारी से आयोजित किया जाता है। 14वां सूर्य किरण अभ्यास 03-16 दिसंबर 2019 तक नेपाल के सालझांडी में आयोजित किया गया था।

1950 से भारत और नेपाल दोनों सेनाओं के बीच आपसी सौहार्दपूर्ण संबंधों की मान्यता में एक दूसरे के सेना प्रमुख को जनरल के मानद रैंक से सम्मानित करते रहे हैं। लगभग 6,00,00,00 भारतीय नेपाल में रह रहे हैं। इनमें व्यवसायी और व्यापारी शामिल हैं जो लंबे समय से नेपाल में रह रहे हैं। 14 सितंबर 1990 को नेपाल में एक भारतीय नागरिक संघ (आई.सी.ए.) का गठन किया गया था। आई.सी.ए. नेपाल में निवासी भारतीय नागरिकों का एकमात्र संघ है जिसकी पोखरा, दमक और भैरहवा में शाखाएँ हैं। यह संगठन नेपाल में निवासी भारतीयों के हितों की सुरक्षा के लिए काम करता है।

नेपाल और भारत दोनों का क्षेत्रीय और बहुपक्षीय संस्थानों के लिए एक समान दृष्टिकोण है और इसलिए अधिकांश महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र, गुटनिरपेक्ष आंदोलन और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मिलकर काम करते हैं। इसके अलावा दोनों देश सार्क, 'बिम्सटेक' और बी.बी.आई.एन. के क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय ढाँचे में गहराई से लगे हुए हैं ताकि इस क्षेत्र में उपलब्ध संभावनाओं और पूरकताओं का सामूहिक रूप से दोहन करके अधिक से अधिक आर्थिक एकीकरण के लिए सहयोग बढ़ाया जा सके।

शुभ कुमार
कक्षा-11 (दौलत हाउस)

क्यूँ हर रात की सुबह ज़रूरी है...

दफन करना है हर उस ख्याल को
जो करता है परेशान जी को,
छीनता है दिल के सुकून को
और विचलित करता है मन को
दूर भगाना है उसको
इसीलिए तो
इस रात की सुबह ज़रूरी है।

हार गए
थक गए
शर्मिदा हुए
जो सोचा था न कर पाए
वक्त को न जीत पाए
मन अँधेरों में जब घिर जाए
तभी तो

हर रात की सुबह ज़रूरी है।
नई ऊर्जा के लिए
नई स्फूर्ति के लिए
हर कदम के लिए
मंजिल के लिए
विजय के लिए औ
हर रात के लिए सुबह ज़रूरी है।

क्यूँ नहीं रस्ते बंद होते ?
क्यूँ नहीं वक्त के पहिए रुकते ?
क्यूँ नहीं रुकती ये लहरें ?
क्यूँ नहीं रुकते ये पल ?
क्यूँ नहीं रुकती ये धरती?
क्योंकि

हर रात के बाद सुबह ज़रूरी है ।
जाओ अँधेरो छँट जाओ।
अब ना आओ।
देखो सूरज आने को है,
किरण फूटने को है,
रौशनी होने को है,
अब जाओ, आस आने को है
क्योंकि
इस रात की अब सुबह होने को है।

क्या मैं सब कुछ?
जो होना है होता है।
हम कौन तुम कौन
पर क्या चुप रहें
देखते रहें

मजबूर से
हताश से
खड़े खड़े
यूँ ही ताकते रहें
बिन कोशिश के....
पर क्यों?

सबल हैं हम,
है हममें दम
कुछ करने का
लड़ने का
सँभलने का
फिर क्यों हालात से मजबूर बनते हम
कायर कहलाते हम।
क्यों नहीं हम में दम
लड़ने का
कुछ करने का।

पूछो खुद से
अपने आप से,
सभी कुछ तुम,
भरपूर तुम,
सक्षम तुम,
बलवान तुम,
गुणों की खदान तुम।

पहचानो खुद को
पार्थ हो तुम,
विजय पताका लिए
अपने जीवन के सारथी हो तुम,
नहीं मजबूर,
नहीं असहाय,
दूसरों का सहारा हो तुम।

पहचानो खुद को
देखो खुद को,
बहुत लायक हो तुम,

क्यों नहीं समझते खुद को
कि क्या चीज हो तुम।

उठो इक नई ऊर्जा हो तुम,

तुम्हारा है आज,

तुम्हारा है कल,

सोचो... बस तुम ही तुम,

प्रश्न भी तुम,

समाधान भी तुम,

मुसीबत भी तुम,

हल भी तुम,

तुम्हीं हो .. खुद में पूरे

नहीं अधूरे,

सम्पूर्ण हो तुम,

सशक्त हो तुम,

चलो उठो !

न डरो !

न रुको !

बस चलो,

जो करना है करो,

बस वही करो,

एक सोच ही तो बदलनी है

तो बदलो तुम,

क्यों खड़े हो तुम ?

उठो, जागो !

कुछ करो तुम,

बस सोचो-

तुम ही तुम,

तुम ही तुम,

तुम ही तुम।

कि हस्ती मिट्ठी नहीं हमारी

कभी सोचती क्या ये वाक्य मेरे लिए हो सकता है?

और सोचती कौन हूँ मैं?

क्यों हूँ मैं?

क्या हूँ मैं?

कुछ हूँ क्या मैं?

है क्या मेरा?

क्या सवेरा मेरा?

क्या ये चाँद मेरा?

क्या ये बेटा मेरा?



क्या ये भाई मेरा?

और क्या ये सफर मेरा?

क्या ये किनारा मेरा?

क्या है मेरा?

क्या मैं मेरी?

क्या मैं किसी की?

क्या मैं किसी की नहीं?

क्या मैं कुछ भी नहीं?

क्या है मेरा अस्तित्व?

मेरा स्त्रीत्व?

मेरा मातृत्व?

मेरा नारीत्व?

मेरा दायित्व?

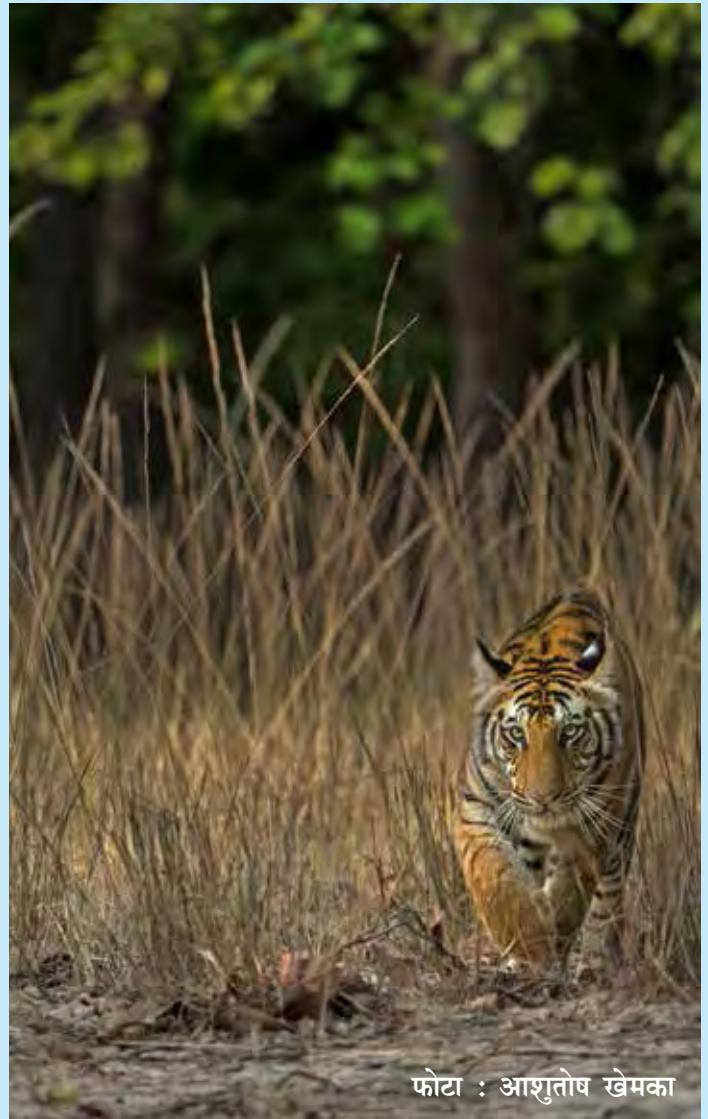
सीमा शर्मा

पूर्व छात्रा- विवेकानंद 1977

मेरा शैक



फोटो : आशुतोष खेमका



फोटो : आशुतोष खेमका

फोटोग्राफी का मेरा शैक सिर्फ कैमरे के बटन दबाने तक ही सीमित नहीं है। फोटोग्राफी मेरे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गई है। मैं इस मनोरंजक प्रवृत्ति को आत्मसात कर लेना चाहता हूँ। इसलिए मैं नियमित रूप से फोटोग्राफी से संबंधित पुस्तकें और सामयिक पढ़ता हूँ। उनसे मुझे फोटोग्राफी के बारे में नई-नई जानकारी प्राप्त होती है और मेरे ज्ञान में अभिवृद्धि होती रहती है।

मैंने अपने फोटो के कई बढ़िया अलबम बनाए हैं। जो भी इन अलबमों को देखता है वह मेरी सराहना करता है।

आशुतोष खेमका

कक्षा-11 (दौलत सदन)



मनाली साहसिक अभियान.....

“हमेशा जीत और हार आपकी सोच पर निर्भर करती है, मान लो तो हार होगी, ठान लो तो जीत होगी!” इसी भावना को ध्यान में रखते हुए मैंने भी अपने विद्यालय द्वारा आयोजित साहसिक अभियान में भाग लेने का निर्णय लिया। यह यात्रा थी- अटल बिहारी वाजपेयी पर्वतारोहण और संबद्ध खेल संस्थान मनाली की। हिमाचल प्रदेश में स्थित मनाली भारत के सबसे लोकप्रिय पर्यटक स्थलों में से एक है। मनाली जितना खूबसूरत है उतना ही शानदार इसका सफर भी है। मनाली का जिक्र होते ही दिल और दिमाग में एक ऐसी छवि बनती है जहाँ बर्फ से ढँके पहाड़ हैं, तेज जलधारा के साथ चट्टानों से बहती हुई व्यास नदी है और मन को छू लेने वाली वादियाँ हैं।

इसी के साथ अब मैं अपनी यात्रा का वर्णन करना चाहूँगा। हम पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अपने विद्यालय के दो अध्यापकों से दिल्ली बस अड़े पर मिले। दल में कुल उन्नीस छात्र थे। हमारी बस-यात्रा लगभग तेरह-चौदह घंटे तक चली और यह रात भर की यात्रा थी। अगले दिन सुबह हम प्रतिष्ठित अटल बिहारी वाजपेयी पर्वतारोहण और संबद्ध खेल संस्थान पहुँचे। थोड़ी देर विश्राम करने के पश्चात हमारा पर्वतारोहण पाठ्यक्रम उसी दिन आरम्भ हो

गया। सबसे पहले हमें छात्रावास और कमरे आवंटित किए गए। हमने खुद को छात्रावास के बैच के अनुसार कई समूहों में विभाजित किया। दोपहर का समय हमें अपने छात्रावास में अभ्यस्त होने के लिए दिया गया था ताकि हम संस्थान की गतिविधियों से परिचित हो सकें। इसके बाद एक ‘ब्रीफिंग’ और एक “रोलकॉल” सत्र का आयोजन किया गया, जहाँ सचिन चौधरी को हमारे ‘स्क्वाड्रन लीडर’ के रूप में चुना गया। प्रत्येक छात्र को पंक्तियों में निश्चित स्थान आवंटित किए गए थे। उस दिन हमारे पास करने के लिए और कुछ नहीं था। हमने रात का खाना खाया और समय पर सो गए क्योंकि अगले दिन का रोमांच हमारा इंतजार कर रहा था।

अगली सुबह जब हमें फिटनेस के लिए बुलाया गया तो हम चौंक गए। ऊँचाई वाले क्षेत्रों में ऑक्सीजन की कमी ने कसरत को और भी कठिन बना दिया। हमने साहस का परिचय देते हुए हर बाधा को पार कर अपने स्वस्थ होने का परिचय दिया। स्नान और अच्छे नाश्ते के बाद हम सभी पंक्ति में खड़े हो गए और अपनी पहली गतिविधि शुरू की, जोकि ‘रॉक क्लाइम्बिंग’ थी। इस गतिविधि को शुरू करने से पहले प्रशिक्षकों ने हमें विभिन्न प्रकार के

“होल्ड” और तरीकों के बारे में विस्तृत जानकारी दी और साथ ही उनका प्रदर्शन भी किया। शुरुआत में हम सभी को कुछ क्षेत्रों में कुछ समस्याओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन थोड़ा अभ्यास करने के बाद हम सभी सब कुछ आसान-सा लगने लगा। देर शाम तक हम वापस कैंप में आ गए थे। कुछ घंटों के विश्राम के बाद हमें कक्ष में बुलाया गया जहाँ उन्होंने हमें पर्वता रोहण के दौरान उपयोग की जाने वाली कुछ सामान्य शब्दावली से परिचित करवाया। प्रशिक्षकों ने हमें कुछ सुरक्षा प्रक्रियाएँ भी सिखाई और पर्वतारोहण के दौरान क्या करें और क्या न करें इसके बारे में विस्तार से सारी जानकारी दी। इसके बाद हमने भोजन किया और सोने के लिए अपने-अपने कक्ष में चले गए।

दूसरे दिन सुबह की फिटनेस और नाश्ते के बाद नदी पार करना हमारे लिए सबसे आश्चर्यजनक और अनोखे अनुभवों में से एक था। शुरुआत में धारा अपेक्षाकृत कम थी जिसके कारण क्रॉसिंग आसान थी लेकिन तीस मिनट के बाद धारा में बर्फ पिघलने के कारण भारी वृद्धि हुई। कुशल प्रशिक्षण से हम सभी को नदी पार करने में सफलता मिली। उसी शाम हमें विभिन्न प्रकार की गाँठों के बारे में सिखाया गया और व्यवहारिक रूप से उसी का प्रदर्शन भी किया गया। कुछ दिन पहले भी हमें गाँठ बाँधने का प्रशिक्षण दिया गया था जहाँ हमें रस्सियाँ दी गईं और हमें निश्चित समय सीमा में एक गाँठ बाँधनी थी। यह एक प्रतियोगिता जैसी थी जिसे मैं हमारे पूर्वज्ञान को परखा जा रहा था।

अगले दिन हमारी सबसे महत्वपूर्ण यात्रा थी - सोलंग घाटी के लिए। हमने अपने ‘बैकपैक्स’ के साथ चौदह किलो मीटर की पैदल दूरी तय की। सुबह करीब आठ बजे मनाली से चलने के बाद हम दोपहर दो बजे तक अपने कैंप सोलन पहुँच गए। रास्ता काफी चुनौतियों से भरा था लेकिन सभी छात्रों ने इसे सफलता पूर्वक पार कर लिया था। हम सभी काफी थक चुके थे इसलिए सभी अपने छात्रावास में गए और अपने सामान को व्यवस्थित करने के बाद छोटी-सी झपकी ली ताकि खुद को फिर से सक्रिय किया जा सके।

अगले दिन का ट्रैक थोड़ा कठिन था क्योंकि हमें बर्फ पर ट्रैक करना था। अनुभव की कमी के कारण हम सभी



फिसल रहे थे लेकिन साथ ही यह बेहद मजेदार भी था। हमेशा ऊर्जावान रहने वाले सिंधिया स्कूल के छात्र अपने पूरे जोश के साथ आगे बढ़ते रहे। जब हम अपने गंतव्य पर पहुँचे जो पूरी तरह से बर्फ से ढँकी एक छोटी-सी पहाड़ी थी, तब हमने वहाँ हर तरह की गतिविधियाँ की, जिसमें ‘स्नोबॉल फाइट्स’ से लेकर पहाड़ी से बर्फ पर फिसलना आदि। वहाँ कुछ घंटे बिताने के बाद हमने वापस अपने कैंप की यात्रा शुरू की। शाम को हमने अपने कुछ प्रशिक्षकों के साथ क्रिकेट का एक दोस्ताना मैच भी खेला।

अंत में सोलंग घाटी से हमने मनाली शिविर की और वापस अपना ट्रैक शुरू किया। मनाली पहुँचने पर उसी दिन शाम को एक “गाँठ बाँधो प्रतियोगिता” हुई, जहाँ हमें पहले सिखाई गई विभिन्न प्रकार की गाँठें बाँधनी थीं।

अब मनाली में हमारा आखिरी दिन था और हम सब बहुत भावुक हो रहे थे। हमारी अंतिम गतिविधि थी- दीवार पर चढ़ना और हम सभी ने इस में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया क्योंकि समय के साथ हमने शिविर में बहुत कुछ सीख लिया था। इसके बाद एक उत्कृष्ट और सम्मान जनक पुरस्कार समारोह हुआ जहाँ हम सभी को बैज और प्रमाण-पत्र दिए गए। अंतिम गतिविधि हम सभी के लिए सबसे कठिन और भावुक कर देने वाली थी क्योंकि हमें अपने सभी प्रशिक्षकों और अपने स्टाफ सदस्यों को अलविदा कहना था। रातभर सफर करने के बाद अगली सुबह तक दिल्ली पहुँच गए और इसी के साथ मनाली की यात्रा समाप्त हो गई। यह यात्रा मुझे जीवन भर याद रहेगी।

मयंक चौधरी

कक्षा-11 अ (शिवाजी सदन)



जीवन में साहस

रोमांच! एक शब्द के रूप में यह साहसिक लोगों में कई गुना भावनाओं और यादों का उफान ला देता है। मेरे साथ तो यह होता है, आपके साथ होता है? बचपन के शुरुआती दिनों में रोमांच आमतौर पर शरारतों, पारिवारिक छुट्टियों की यात्राओं और परिदृश्यों में कभी-कभी छलकता था। किशोरावस्था में, यह रोमांचकारी अनुभवों, जोश की अधिकताया और सामाजिक रीति-नियमों के प्रति विद्रोह में भी दिख जाता है। युवावस्था के दौरान इसमें यात्राओं की कहानियाँ, अवसर और जीवन के बदलते अध्याय शामिल होते हैं। इसके बाद जब पूर्ण परिपक्वता आती है, तब रोमांच की पिछली सभी कल्पनाओं को फिर से जीना अत्यंत अविस्मरणीय होता है।

एक युवा लड़के के रूप में मैंने अभी तक अपने परिवार की छाया के बिना जीना भी नहीं सीखा था, तब मेरा असली रोमांच शुरू हुआ था। मुझे “उरवाई घाटी” से सिंधिया स्कूल ले जाया जा रहा था। वह क्या क्षण था! मैं चकित, उत्साहित, थोड़ा सहमा हुआ था, लेकिन अपने जीवन को पूरी तरह से बदलने के लिए तैयार था। मैं

अपनी शरारतों की कहानियाँ लिखने के लिए तैयार था। स्कूल के “आधिकारिक और अनौपचारिक” नियमों का परिचय भी कम रोमांचकारी नहीं था जिसने मेरे जीवन की घटनाओं को 360 डिग्री मोड़ दिया था। इसमें भी मेरे बचपन के साहसिक कार्यों की आभा झाँकती है। मैंने बदली हुई हर परिस्थिति में अपने को ढाल लेने और मुखर होने की अपनी क्षमता को पहचाना। शरारतों के बाद होने वाली फजीहत ने मुझे अपने व्यक्तित्व के आदर्श पहलुओं को समझने में मदद की। इन सबमें, सबसे महत्वपूर्ण यह था है कि कैसे मैंने अपने शिक्षकों, गृहसंरक्षक और अपने से बड़ों के मार्गदर्शन से, उन दैनिक कठिनाई में शामिल होने के दौरान भी एक मजबूत चरित्र विकसित किया। कक्षा आठवीं के दौरान शिविर यात्राएँ सर्वश्रेष्ठ थीं क्योंकि हमें “व्हाइट वाटर राफिंग” से परिचित कराया गया था। मुझ जैसा एक ग्यारह-बारह साल का लड़का इन दिनों जितना सोच सकता है, उससे कहीं अधिक प्रकृति और खेल के बारे में मैंने सीखा। मैंने महसूस किया कि कैसे एक बोर्डिंग स्कूल में होने के रोमांच को पूरी तरह से



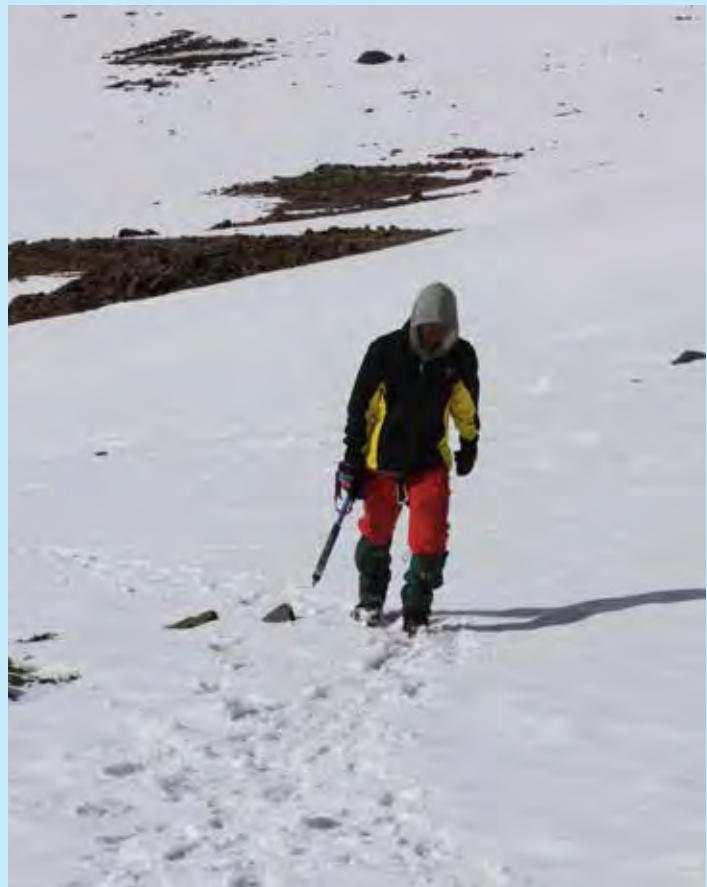
जीने की जरूरत है। यह मैंने तब जाना जब मैं अपने पहले ग्रीष्मकालीन अभियान- फूलों की घाटी, हेमकुंड साहिब और श्री बद्रीनाथ मंदिर की यात्रा पर गया। फूलों की घाटी की शानदार सुंदरता और हेमकुंड साहिब और श्री बद्रीनाथ मंदिर की दिव्य आभा को किसी विवरण की आवश्यकता नहीं है इसे अनुभव किया जाना चाहिए क्योंकि शब्द उस “दिव्य अनुभूति” के संग न्याय नहीं कर सकते। मुझे समझ आया कि छुट्टियों से भी अधिक, यात्रा करना, पैदल पहाड़ों में जाना और खोजबीन करने के रोमांचकारी अनुभव महत्वपूर्ण हैं।

अब जब किशोरावस्था में आया तो मैं थोड़ा प्रतिकारी परंतु विचारों से ईमानदार और आपसी व्यवहार में लचीलेपन के साथ थोड़ा सयाना हो गया था। हमारा स्कूल न केवल शैक्षिक बल्कि जीवन कौशल के साथ एक समग्र व्यक्तित्व विकसित करने हेतु हमारे विद्यार्थियों के लिए विशिष्ट अवसर प्रदान करने में अग्रणी रहा है। “ड्यूक ऑफ एडिनबर्ग पुरस्कार” इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। अपने वरिष्ठ साथियों और शिक्षकों से प्रेरित होकर मैंने उस कार्यक्रम के लिए नामांकन किया, जिसने मेरी विचार प्रक्रिया को एक संरचनात्मक आयाम दिया। मैं देखना चाहता था कि साहसिक गतिविधियों जैसे ट्रैकिंग, राफिंग आदि के अलावा सामुदायिक सेवा और सह-शैक्षणिक गतिविधियों में किस प्रकार योगदान दे सकता हूँ।

नौवीं कक्षा में, गर्मी की छुट्टियों के दौरान, मैंने साल 2009 में पर्वतारोहण अभियान दल का हिस्सा बनने का विकल्प चुना। यह मेरे लिए नया अनुभव था क्योंकि ट्रैकिंग का स्तर अधिक ऊँचा था। लक्ष्य समुद्र तल से 17,400 फीट

ऊपर सीतीधर चोटी के शिखर पर पहुँचना था। बारह छात्रों की एक टीम में से, वो ने इसे सफलतापूर्वक पूरा किया। मैं और देवरत पवार। लेकिन जैसा कि हम कहते हैं कि पर्वतारोहण में पूरी टीम सफल होती है, भले ही टीम का एक सदस्य शिखर पर पहुँच जाए और सुरक्षित लौट आए इसमें हम सभी की भूमिका है।

अब यह सिफ एक साहसिक गतिविधि नहीं थी, यह मेरे लिए गर्व का विषय बन गया था। इसलिए, अगली गर्मियों के दौरान वर्ष 2010 में दसवीं कक्षा में मैं पर्वतारोहण-अभियान के लिए गया और इस बार यह एक पायदान ऊपर था। हमारा उद्देश्य समुद्र तल से बीस हजार फीट की ऊँचाई पर “युनाम बी” शिखर पर चढ़ना था। हमें पर्वतारोहण उपकरण, उनके महत्व को संभालने का विस्तृत प्रशिक्षण और अभ्यास प्रदान किया गया। पर्वतारोहण के उपकरणों को केवल उपकरण ही नहीं बल्कि साथी के रूप में माना जाता है। एक कठिन अनुकूलन अवधि के बाद हमने बेस कैंप, एडवांस बेस कैंप और अंत में “कैंप-1” को कवर किया। कैंप-1 की रात कम ऑक्सीजन वाली और ठंड हमारा मनोबल ठंडा कर रही





थी। लगभग हार मान लेने वाली स्थिति में भी आखिरकार मैंने अपना मन जीत लिया और तड़के 3:30 बजे अंतिम चढ़ाई के लिए तैयार हो गया।

इसके बाद जयपुर से माउंट आबू तक का साइकिलिंग अभियान आया, जिसमें हमने सात दिनों में लगभग सात सौ किमी की यात्रा की। सूर्योदय के समय उठना और सूर्यास्त के समय चक्काजाम! ऐसा हमारे साइकिल चलाने का नियम था। हम राजस्थान के राजमार्गों और गाँवों के रास्ते साइकिल चला रहे थे। लोगों के साथ बातचीत करते थे। उन्हीं लोगों के साथ उनका स्थानीय भोजन खाते थे और राजस्थान के आसमान के सुंदर केसरी सूरज के सुन्दर दृश्य का आनंद ले रहे थे। जैसे ही हम माउंट आबू पहुँचे, तो यह उपलब्धि मेरी साहसिक यात्राओं का सिरमौर बन गई। जो महसूस हुआ, वह अब तक के अनुभवों से कहीं मीलों आगे था। पहली बार मुझे मानव देह की जीवट शक्ति और मन की दृढ़ता का एहसास हुआ।

मुझे ड्यूक ऑफ एडिनबर्ग गोल्ड अवार्ड, किंग कॉन्सटेटाइन मेडल, एडवैंचर स्पोर्ट्स ब्लेजर के रूप में उत्कृष्टता पुरस्कार और स्कूल में माउंटेनिंग ट्रॉफी जैसे विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। यह मेरे साथियों को उठने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने के मेरे सचेत प्रयासों का एक हिस्सा भर था।

स्कूल से शिक्षा पूरी होने के बाद मैं अपनी आगे की पढ़ाई के लिए “यूके” में डरहम विश्वविद्यालय गया। मैंने अपने प्रवेश, आवास और यात्रा की व्यवस्था स्वयं की। किंचित चिंतित और डरे होते हुए भी मैं वहाँ बस गया।

उत्साहित होकर नए जीवन का सामना करने के लिए तैयार हो गया। मेरी साहसिक कहानियों ने मुझे विभिन्न सामाजिक मेल-जोल में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया। मैं सबसे अलग बना और मुझमें बहुत आत्मविश्वास दिया। मैंने अपने साहसिक अभियानों के दौरान जो कुछ सीखा, उसकी मदद से मैंने कॉलेज में अपने आपको आगे बढ़ाया। मेरी दृढ़ता ने मुझे स्थिरता और आशा दी, दृढ़ संकल्प ने विश्वविद्यालय में मैंने डरहम पुरस्कार प्राप्त किया और मेरे यायावरी व्यक्तित्व के उत्साह ने मुझे लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में प्रवेश के माध्यम से मेरे सपने को साकार किया। जब मैं आत्मनिरीक्षण करता हूँ तो पाता हूँ कि कैसे मैंने लीक से हटकर रोमांचक कार्यों से खुद को परमार्जित किया।



आज मैं एक व्यवसायी हूँ, पहचान रखता हूँ, अपनी बिरादरी पर गर्व करता हूँ। अभी भी दिल कहता है कि एक लंबा रास्ता तय करना है क्योंकि मेरे भीतर के उस युवा लड़के ने एक बार जंगल में यात्रा करना, पर्वतों पर चढ़ाई करना, साइकिल चलाना, खुली हवा में साँस लेना, प्रकृति से जुड़ा होने के बारे में स्वयं से सीखा है। आज बहुत कठिन कार्य एक शिखर है और हर दिन एक मील का पत्थर है और मंजिल अभी दूर है। जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा तो मेरे पास बताने के लिए कहानियाँ होंगी। क्या आपके पास कोई कहानी है?

विभव सिंह किरार

(पूर्व छात्र- दौलत हाउस)



‘नेहरू पर्वतारोहण संस्थान’ के अविस्मरणीय अनुभव

‘एडवेंचर’ के क्षेत्र में जब कभी भी शारीरिक प्रशिक्षण, कुशल उपकरण, सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षक व इनके साथ ही उचित आवासीय सुविधाओं की बात आती है तो ‘नेहरू पर्वतारोहण संस्थान’ का स्थान भारत में सर्वोच्च है। प्रकृति की गोद में बसा यह संस्थान साहसिक गतिविधियों के लिए श्रेष्ठ प्रशिक्षण प्रदान करता है। साहसिक कार्यों के लिए प्रसिद्ध अनेक महान विभूतियों ने इसी संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त कर पर्वतारोहण के क्षेत्र में भारत का नाम रोशन किया है।

मैं उन सात भाग्यशाली छात्र दल का हिस्सा था जिनका चयन इस संस्थान से पंद्रह दिन के एडवेंचर कोर्स के लिए किया गया। मैंने इस कोर्स के रोमांच के विषय में वरिष्ठ छात्रों से काफी सुना था और मैं इसके लिए मानसिक रूप से तैयार था। गंतव्य तक पहुँचने की यात्रा मेरी उम्मीद से ज्यादा रोमांचक थी। चारों ओर चीड़ के जंगल, पहाड़,

पास ही बहने वाली भागीरथी नदी, प्रशिक्षण संस्थान के कैपस में वह सब कुछ था जो उस दृश्य को मनमोहक बना रहा था। वन्यजीवों, पक्षियों की कई प्रजातियां तथा ऊँचाई वाले क्षेत्र में उगने वाले पेड़-पौधे, बनस्पतियाँ इस संस्थान के परिसर की प्राकृतिक विशेषताएँ हैं।

प्राकृतिक व कृत्रिम दोनों माध्यमों की सहायता से यहाँ छात्रों को पर्वतारोहण की तकनीकियों का सत्र प्रशिक्षण दिया जाता है, जिसके लिए छात्रों को कठिन प्रशिक्षण के दौर से गुजरना होता है। पहले ही दिन हमें पंद्रह दिनों के लिए आवश्यक सामग्री दी गई, जिसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी हमें ही उठानी थी और जिसके प्रति लापरवाही बरतने पर दंड के प्रावधान से हमें प्रारंभ में ही अवगत करा दिया गया था। प्रतिदिन प्रातः काल छः बजे व्यायाम के लिए अनिवार्य उपस्थिति, जो प्रारंभ में कष्टदायक थी



क्योंकि जो नियत समय पर उपस्थिति दर्ज न करा पाए तो उसे प्रशिक्षिकों के बताए दंड को स्वीकार करना हा. ता था जो शारीरिक क्षमता को निश्चित ही बढ़ाता था परन्तु सुबह-सुबह यह अतिरिक्त अभ्यास हर प्रशिक्षार्थी को समय पर आने के लिए बाध्य कर ही देता था। यहाँ हमें पर्वतारोहण की बारीकियों से अवगत कराया गया, जिनमें उपकरणों को स्वयं उठाकर लाने से लेकर उनके प्रयोग का अभ्यास शामिल था। कृत्रिम दीवार पर "रॉक क्लाइंबिंग" का अभ्यास वहाँ के मुख्य आकर्षणों में से एक था, जिसका अनुभव मुझे रोमांच से भर देता था। प्रशिक्षण के दौरान वॉल क्लाइंबिंग, रॉक क्लाइंबिंग, रोप क्लाइंबिंग, विभिन्न प्रकार की गाँठों का अभ्यास, ट्रैकिंग की बारीकियाँ, रिवर क्रॉसिंग, नेवीगेशन, मैप रीडिंग तथा टीम के रूप में लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना, यह सभी हमारे प्रशिक्षण का हिस्सा था।

'सतर्क रहो'
 'तैयार रहो'
 'दल के रूप में कार्य करने में सफलता है'
 'कार्य से पूर्व कार्य की योजना का होना आवश्यक है'
 'असंभव केवल एक शब्द है जो कार्य को संभव की ओर ले जाता है'



इन्हीं कुछ प्रेरणादायक विचारों को अपने जीवन में उतार लेने के लिए अपना प्रशिक्षण पूरा कर हम अपने-अपने घरों की ओर चल पड़े।

नमन मित्तल

कक्षा-11 (रानोजी हाउस)



साहसिक अभियान और वन्य संरक्षण

समुद्र तल से 15,000 फीट ऊपर साँस लेने के लिए हाँफते हुए जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ने की कोशिश करता हूँ, मेरा हर कदम बर्फ में फँसकर भारी हो जाता है। मेरा शरीर तड़प रहा है, वह हार मान लेना चाहता है, एक कदम भी आगे नहीं बढ़ना चाहता। हालात मेरी परीक्षा ले रहे हैं, ऐसा लगता है जैसे मेरी मांसपेशियाँफट रही हैं, मेरी नाक से खून बह रहा है और लगता है मानो कि यह यात्रा समाप्त हो रही है। लेकिन मेरी अंतरात्मा कह रही थी कि शक्तिशाली हिमालय में रहने वाले धूल के रंग के उस भूत की खोज में निरंतर बढ़ते रहो। मैंने उसे भूत इसलिए कहा क्योंकि हिमालय में यह इतना ही दिखता है कि लोग इसे मिथक समझने लगे हैं। मैं धीरे-धीरे ऊपर की ओर अपना रास्ता बनाता हूँ, पहाड़ भयावह लगने लगता है। लेकिन मेरा पक्का निश्चय और इच्छा शक्ति मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है और मुझे मायाकी “हिम तेंदुए” की एक झलक पाने के लिए प्रेरित करती है। जब मैंने देखने

में सुरक्षित परन्तु खतरनाक और थकाऊ बारह घंटे के ट्रैक के बाद सारी आशा छोड़ दी थी कि अचानक इस जीव को बड़े ही शान से चलते हुए देखा, यह धीरे-धीरे बर्फीली चट्टान को पार कर रहा था। लगता था समय रुक गया है। मैं अचंभित था और हिम तेंदुए की भव्यता का वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं थे। मेरी आँखों से आँसू बहने के साथ ही प्रकृति में इस तरह के अद्भुत आनंद का अनुभव करने के लिए और इतना भाग्यशाली होने के लिए मुझे कृतज्ञता की भावना महसूस हुई। इस पल का मुझे पर गहरा प्रभाव पड़ा और इसने मुझे वन्यजीव संरक्षण के प्रति अपने जुनून का एहसास कराया। मैंने हिम तेंदुए जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों की मदद करने और लोगों में उनके प्रति जागरूकता बढ़ाने और शिक्षित करने के लिए वन्यजीव संरक्षण को “करियर-विकल्प” के रूप में अपनाने का फैसला किया ताकि वे भी प्रकृति की सुंदरता को देख सकें जो मैंने देखा था।

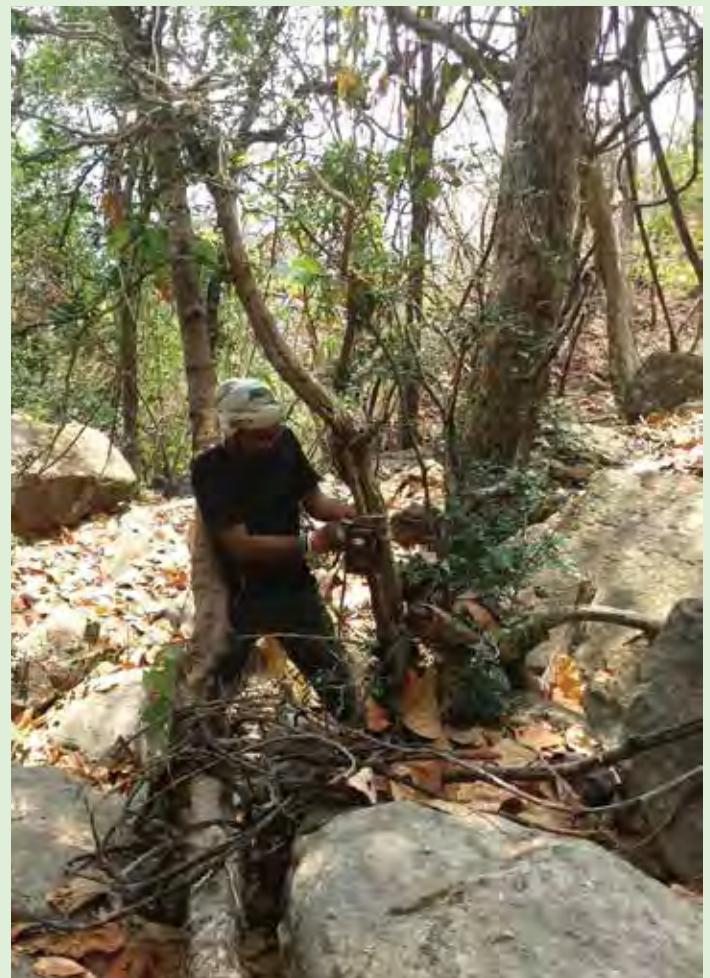


इस खोज के लिए, मैंने अपने रास्ते में आने वाली संभावित चुनौतियों के लिए खुद को तैयार करने की कोशिश की है। मैं भाग्यशाली था कि मैंने अपनी स्कूली शिक्षा भारत के बेहतरीन स्कूलों में से एक - सिंधिया स्कूल, ग्वालियर से पूरी की, जो एक शहर के शहरी जीवन के शोर-शारब से दूर एक प्राचीन किले के ऊपर स्थित है। मैंने जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान और भूगोल को अपने मुख्य विषयों के रूप में लिया क्योंकि मुझे लगा कि वे मेरे भविष्य की पढ़ाई की दिशा के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक हैं और इन विषयों में मैंने यथोचित रूप से अच्छा प्रदर्शन किया है इसके अतिरिक्त नाटक और संगीत मेरी अन्य रुचियाँ थीं।

एक बाहरी जीवन की तलाश में मैंने विभिन्न प्रतियोगिताओं में क्रिकेट, टेनिस और टेबल टेनिस में अपने स्कूल का प्रतिनिधित्व किया। मुझे क्रिकेट, हॉकी और शतरंज, हाउस प्रीफेक्ट के लिए हाउस कैप्टन नियुक्त होने और युवा लोगों के लिए ड्यूक ऑफ एडिनबर्ग इंटरनेशनल अवार्ड के लिए गोल्ड अवार्ड से सम्मानित होने का सम्मान मिला। चौदह साल की उम्र में, मैंने 2013, फीट माउंट स्टोक कांगड़ी और बाद में भारतीय हिमालय में कठिन माउंट सीतीधर (16500 फीट) की चढ़ाई की। अन्य साहसिक गतिविधियाँ जो मुझे प्रकृति के करीब ले आई, वे थीं 450 किमी का साइकिलिंग अभियान, गंगा में गढ़वाल श्रीनगर से ऋषिकेश तक की सफेद फेनिल राफिंग अभियान और मेरे पिता तथा एक भारतीय सेना अधिकारी के साथ भारतीय जंगलों में कई ट्रेक।

वन्यजीवों के संरक्षण के प्रति मैं अत्यंत उत्साही हूँ और मुझे पर्वतारोहण, ट्रेकिंग इत्यादि जैसे साहसिक खेलों से प्यार है।

अपने पूरे जीवन में मैं दुनिया भर के साथ-साथ भारत में विभिन्न राष्ट्रीय उद्यानों और वन संसाधनों की यात्रा कर रहा हूँ। मैंने लुप्तप्राय पर्वतीय गोरिल्ला देखने के लिए अफ्रीका में रवांडा जैसी जगहों का दौरा किया है-इंडोनेशिया के ऑरंगुटान देखने के लिए, शक्किशाली हिमालय (लद्दाख) में मायावी हिम तेंदुओं को देखने के लिए और भारत के सुदूर पूर्वोत्तर जंगलों में ट्रैकिंग करने के लिए। इन यात्राओं ने दुनिया भर में पर्यावरण व वन्यजीव संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों के प्रति मेरी आँखें खोल दी हैं और मेरा लक्ष्य ऐसे प्रभावी संरक्षण प्रयासों से सीखना और भारत में अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए उन्हें लागू करना है। मैं विभिन्न संगठनों के साथ मिलकर कार्य करने वाला एक सक्रिय स्वयंसेवक भी हूँ। स्नो लेपर्ड कंजरवेंसी, इंडिया ट्रस्ट, लद्दाख के लिए, मैंने स्वेच्छा से हिम तेंदुओं के बारे में स्थानीय लोगों में जागरूकता बढ़ाने में मदद की। मैंने एक संस्था के लिए भी कार्य किया है जो मलेशिया में पर्यावरण व वन्यजीव संरक्षण के लिए एक संगठन है।





फ्रंटियर ऑर्गनाइजेशन “यूके” के सहयोग से, मैंने मलय टाइगर्स को बचाने के लिए तमन नेगारा नेशनल पार्क में अवैध शिकार विरोधी इकाई के साथ काम किया। मैंने मध्य प्रदेश के वन विभाग के साथ काम किया है और गवालियर के पास चंबल नदी में लुप्त प्राय घड़ियाल (मगरमच्छ एक की प्रजाति) का सर्वेक्षण भी किया है। अंत में, एडिनबर्ग स्कॉटलैंड विश्वविद्यालय में एक एनजी.ओ ईजीपी (एडिनबर्ग ग्लोबल पार्टनरशिप) के साथ मैंने अनाथ बच्चों के लिए शौचालय बनाने के लिए खांडा में एक सामुदायिक विकास परियोजना में भाग लिया। इसके अलावा, मैंने स्थानीय बच्चों की अनेक कक्षाएँ भी लेकर इसके बारे में बहुत-सी बातें सिखाई। इन सभी ने विभिन्न विषयों में ज्ञान की अलग-अलग स्तर के साथ मेरे दृष्टिकोण को बहुत व्यापक बना दिया है।

इन सभी अनुभवों ने मुझे इस विषय में बिल्कुल स्पष्ट कर दिया कि मैं आगे क्या करना चाहता हूँ ... मैंने यूनाइटेड किंगडम के चेस्टर विश्वविद्यालय से वन्यजीव संरक्षण में मास्टर्स किया, जहाँ मेरे शोध विषय था—“कुनो नेशनल पार्क, एमपी में कैमरा ट्रैप का उपयोग करके तेंदुए की बहुतायत का अनुमान।”. यह सीखने का अद्भुत अनुभव था और सीधे शब्दों में कहें तो एक वन्यजीव संरक्षणवादी के रूप में यह मेरी यात्रा की शुरुआत थी।

मैं अपनी पढ़ाई खत्म करने के बाद सीधे एक परियोजना अधिकारी के रूप में डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ.-इंडिया में शामिल हो गया। यह दुनिया का सबसे बड़ा संरक्षण संगठन है और भारत में पचास से अधिक वर्षों से काम कर रहा है।

भारत के तराई क्षेत्रों के शानदार जंगलों में बाघ और तेंदुए की आबादी का अनुमान लगाने के लिए कैमरा ट्रैप लगाना, मानव और वन्यजीव-संघर्ष को कम करने के लिए जंगल के आसपास रहने वाले समुदायों के साथ काम करना अब मेरे दैनिक जीवन का हिस्सा है।

हर दिन मेरे लिए आश्चर्य के रूप में आता है! जब आप जंगल के अंदर होते हैं, तो आप कभी नहीं जानते कि क्या होने वाला है। इस संदर्भ में मैं आपसे एक किसा साझा करना चाहूँगा उस समय की जब मैं 2018 पूरे भारत में बाघों की संख्या पता लगाने वाले एक दल के सदस्य के रूप में भारत के विभिन्न अभ्यारण्यों में बाघों के घनत्व का अनुमान लगाने के लिए “लैसडाउन वन प्रभाग” में काम कर रहा था।

19 जून 2018 को मेरा जन्मदिन था जिसे मैं साधारण तरीके से ही मनाना चाहता था परंतु मेरे साथियों ने मुझे उस दिन छुट्टी लेने के लिए मनाने की कोशिश की, इसी बीच अचानक बाढ़ के कारण हमें कैमरा ट्रैप के बह जाने की खबर मिली तो हम चल पड़े इस समाचार की पुष्टि

करने और हमारे कैमरा ट्रैप को स्थानांतरित करने के लिए, हमने पहले कैमरा ट्रैप लोकेशन की ओर अपना ट्रैक शुरू किया। उमस भरा मौसम, धुंधली धाराएँ और घने जंगल, सभी बाधाओं के रूप में सामने आए। दोपहर एक बजे के आसपास, हम अपने पहले कैमरा ट्रैप पॉइंट पर पहुँचे, केवल यह देखने के लिए कि कैमरे अभी भी बरकरार हैं या नहीं। कुछ मीटर की दूरी पर हमें बड़े पगमार्क दिखाई दिए। एक मायावी बिल्ली के संभावित स्नैपशॉट के बारे में उत्साहित, हमने तस्वीरों के माध्यम से एक नर बाघ के उपस्थिति की पुष्टि की।

उत्साह के साथ अगले स्थान की ओर बढ़ते हुए, जिसे हम रोक नहीं सकते थे, हम लगातार कई पगमार्क देख सकते थे, कई चीतल और सांभर, यहाँ तक कि एक बाघ द्वारा मारे गए सांभर के अवशेष भी। इन सभी चिन्हों ने एक उपयुक्त बाघ आवास की ओर इशारा किया।

जंगल से गुजरते हुए, ढलानों से नीचे की ओर बहने वाली धाराओं के साथ, हम अंततः लैसडाउन फॉरेस्ट डिवीजन और कालागढ़ टाइगर रिजर्व की सीमा पर अपने कैमरा ट्रैप प्रिड पर पहुँचे। घनी झाड़ियों और ऊँचाई के कारण जानवरों का निशान अब दिखाई नहीं दे रहा था।

जीपीएस और मेरे मित्र सद्वाम के जंगल के ज्ञान पर आँख मूँदकर भरोसा करते हुए, हम जंगल के भीतर तक पहुँचने में कामयाब रहे। मुझे अभी भी वह सन्नाटा याद है, जहाँ जंगल अछूता और बहुत घना था। छोटी-छोटी घासों के क्षेत्र, निचली पहाड़ियों से घिरी नदियाँ, किनारों पर हरे-भरे साल और जामुन के पेड़, वास्तव में बाघों के लिए यह एक स्वर्ग था।

हमने अचानक पोखर के दूसरे किनारे के रेत पर बाघ के ताजे पगमार्क देखे। संभावना है कि हमारे आने जाने से बाघ दोपहर के समय परेशान हो गया होगा। बाघ अभ्यारण्य में घूमने के वर्षों के अनुभव में ताजे पगमार्क पाए जाने के कई उदाहरण शामिल हैं लेकिन इस शानदार जानवर को सामने से देखने का रोमांच कभी नहीं मिला।

जैसे ही हमने थोड़ा सा विराम लिया, जीपीएस ने हमारे कैमरा ट्रैप लोकेशन को मात्र 100 मीटर की दूरी पर दिखाया। एक कठिन यात्रा के साथ, हमें अपने पिछले अनुभवों के आधार पर बाघों की परवाह नहीं थी। वास्तव में, हम हाथियों से अधिक सावधान थे।

गंतव्य की ओर जाने वाला रास्ता एक छोटे से मैदान में खुला और जैसे ही मैंने आगे का रास्ता देखने के लिए सूखी लकड़ी के एक लट्ठे पर कदम रखा तो मैंने पहाड़ी की ओर जाते हुए एक छोटे जानवर के पैरों के निशान को देखा। जैसे ही मैं बाई ओर मुड़ा, अचानक धीमी गति से बढ़ने वाली गुरुहट ने मुझे चौकन्ना कर दिया। मैंने आगे देखा और वहाँ लगभग 20 फीट की दूरी पर, काली धारियों वाली एक गहरे नारंगी रंग की आकृति थी। शुरू में मैंने इसे चीतल समझा परंतु मुझे यह महसूस करने में कुछ ही क्षण लगे कि वास्तव में यह एक बहुत बड़ा बाघ है! डर से जमे हुए, मेरे शरीर ने हार मान ली थी, जबकि मेरा मन जिद कर रहा था कि मुझे कुछ करना चाहिए लेकिन किसी तरह से मैं कुछ भी नहीं कर पा रहा था।

चूँकि बाघ विपरीत दिशा में देख रहा था, इसीलिए अपने कैमरे से एक तस्वीर किलक करने की मूर्खता मेरे मन में आई। जैसे ही मैंने अपने कैमरे तक पहुँचने की कोशिश की, एक दूसरा बाघ झुक गया और गुर्ज उठा, झाड़ियों से वह मुझे वापस देख रहा था। उसकी आँखों का संपर्क मेरे पूरे शरीर में ठंडक पहुँचाने के लिए काफी था। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, सद्वाम (टीम का एक अन्य सदस्य) उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ से हम बाघों को देख पा रहे थे, वह जोर-जोर से आवाज देने लगा— “सर बाघ ! बाघ ! शेर! शेर! (बाघ-बाघ...) पीछे आओ, पीछे आओ (वापस आओ. वापस आओ)”。 दो बार बिना सोचे-समझे, मैं पीछे मुड़ा, मैंने अपने मित्र ज्योति को पहाड़ी के पीछे जाने के लिए आवाज लगाई। सद्वाम और मैं वापस लौटते समय चिल्लाने लगे। मैंने देखा कि सद्वाम दूर जाने की कोशिश में पोखर में गिर गया था। बाघ के गुराने के साथ हमें भारी कदमों की आहट सुनाई दी। जैसे ही हमने ऊपर देखा, लगभग दस फीट दूर, हमारे ठीक ऊपर पहाड़ी ढलान पर नुकीले पंजों वाली एक बाघिन ने हमारा ध्यान अपनी ओर खींचा। मैंने अपनी आँखें बंद कर ली, आत्मरक्षा के लिए हाथ की दरांती अपने आप हवा में ऊपर उठ गई। मुझे अपने घुटने में तेज दर्द महसूस हुआ, जैसे कि बाघ ने मुझे पकड़ लिया हो, लेकिन जब दरांती नीचे आई तो उससे मेरा घुटना छिल गया था। मैंने अपनी आँखें खोली और देखा कि बाघ मुझसे दूर जा रहा है।

सब कुछ ठीक होने के बाद भी मेरे पैर काँप रहे थे और मेरा मुँह सूख रहा था लेकिन जोश ऊँचा था। मैं अभी भी बाघों को गुराते हुए सुन सकता था। हम जानवरों को डराने के लिए जोर-जोर से चिल्लाते हुए मुख्य सड़क की ओर भागे। कैमरा ट्रैप तक जाने में लगे चार घंटे की यात्रा में हमें वापस जाने में डेढ़ घंटे से भी कम समय लगा। उस समय हमारे कपड़े फट गए थे, हम थके हुए, भीगे हुए और खून से लथपथ थे। एक बार जब हमें लगा कि हम सुरक्षित स्थान पर आ गए हैं, तो हम रुक गए और जमीन पर गिर पड़े। लेकिन हम अभी भी सदमे में थे, हमने चुपचाप थोड़ा पानी पिया और धीरे-धीरे डर समाप्त हो गया, जिसने हमें यह एहसास करवा दिया था कि मुठभेड़ कितनी खतरनाक थी और हम कितने भाग्यशाली थे कि हम भागने में सफल रहे।

जब हमने इस घटना को याद किया, तो हमें यह अविश्वसनीय लगा कि हमने उस दिन तीन बाघ देखे। संभवतः अल्प-वयस्क शावकों वाली एक माँ, जो अपने बच्चों की रक्षा के लिए हम पर गुराई होगी। यह एक अविस्मरणीय अनुभव था, जिसने निश्चित रूप से जीवन के बारे में मेरा दृष्टिकोण बदल दिया कि हम बाघों को कैसे देखते हैं। हाँ, वे शानदार और गौरवशाली हैं लेकिन सुरक्षित दूरी से उनकी सराहना करनी चाहिए, क्योंकि ऐसा नहीं करना खतरनाक हो सकता है।

कुल मिलाकर मैं उस घटना के बारे में जब भी सोचता हूँ कि तो मुझे लगता है कि उस समय मैं कितना असहाय था। प्रकृति के सामने मनुष्य की स्थिति कितनी दयनीय है। अब मेरे मन में बाघों के लिए पहले से कहीं अधिक सम्मान है। यह बेजोड़ ताकत और उग्रता वाला एक खूबसूरत जीव है।“

अचानक मुझे संस्कृत के एक प्राचीन श्लोक ने बहुत प्रभावित किया। “वसुधैव कुटुम्बकम्” जो दुनिया को परस्पर जुड़े हुए एक परिवार के रूप में मानता है, एक छोर पर होने वाली घटनाएँ परिवर्तनीय और अपरिवर्तनीय रूप से, अच्छे या बुरे के लिए, दूसरे छोर पर होने वाली घटनाओं को प्रभावित करती हैं। सर्वप्रथम हमें हमारे आस-पास के पर्यावरण को समझना होगा। जीवन को बचाने वाला वातावरण उनके विभिन्न अवयव, महासागर व उनसे उत्पन्न होने वाले जीव-जंतु और इसके अतिरिक्त



भविष्य के जीवन को बचाने वाली प्रकृति और इनके आपसी जुड़ाव को भी समझना होगा और फिर इनसे संबंधित बुराइयों को हमें दूर करना होगा।

पृथ्वी पर हमारे असंतुलित विकास के दुष्परिणाम के भारी पदचिह्नों के कारण हमारा भविष्य खतरे में पड़ सकता है। मेरा लक्ष्य एक वन्यजीव संरक्षणवादी बनना है जहाँ मैं अपने कौशल और क्षमताओं को आकार दे सकूँ और जानवरों के लिए एक सुरक्षित दुनिया बनाने के लिए अपने कौशल और क्षमताओं का उपयोग कर सकूँ। मैं समझता हूँ कि रास्ता हमेशा आसान नहीं होगा और मुझे खुद को लचीला और दृढ़ रहने के लिए तैयार करना होगा। मैं वन्य जीवों को बचाने का प्रयास करना चाहता हूँ और लोगों को इसके महत्व से अवगत कराना चाहता हूँ।

देवरत पवार

पूर्व छात्र

लदाख की सुंदरता...



काफी दिन तक घर में रहने के बाद हमने लदाख भ्रमण का कार्यक्रम बनाया। 23 अगस्त को मैं भुवनेश्वर से अपने पापा के साथ लदाख की यात्रा के लिए निकला था। लेह -लदाख अभी तक मैंने फिल्मों में ही देखा था, लेकिन हवाई जहाज के 'लैंडिंग' के समय जब खिड़की से बाहर देखा तो मन खुशी से भर गया। अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि इतनी सुन्दर जगह हमारे देश में ही है। यह कलाकारी सिर्फ प्रकृति ही कर सकती है। चारों ओर रेतीला भूरा पठार व वैसे ही भूरे पहाड़ नजर आए, लेकिन हवा में काफी ठंडक थी। हम जहाज से उतरकर होटल पहुँचे जहाँ अगले एक दिन हमें रुकना था ताकि हम वहाँ की जलवायु के आदी हो सकें।

कोरोना नियमों के तहत होटल पहुँचते ही हम सब अपने कमरों में आराम करने चले गए। हमें बताया गया कि वहाँ



फोटो : आशुतोष खेमका





फोटो : आशुतोष खेमका

'ऑक्सीजन लेवल' काफी कम रहता है, इसलिए हमारे शरीर को वहाँ के वातावरण में ढलने में लगभग 24 घंटे का समय लगता है। अन्यथा आप सिरदर्द, चक्कर, उल्टी व सांस की तकलीफ से आपका पूरा दौरा खटाई में पड़ सकता है।

अगले दिन 25 तारीख की सुबह हम तुरतुक के लिए निकले जो 1971 के पूर्व पाक अधिकृत कश्मीर यानि पी.ओ.के. में आता था। वहाँ हमने उनकी संस्कृति को अनुभव किया। तुरतुक एक छोटा सा गांव है जहाँ बाल्टी मूल के लोग होते हैं। 3 दिन तक वहाँ रुकने के पश्चात हम पुनः लेह आ गए। हमने लेह में एक दिन आराम किया और फिर त्सोकार के लिए निकल गए। त्सोकार लदाख की एक मुख्य झील है जो हमारे देश की सीमा को छूती है। दक्षिणी लदाख में रूपशु पठार पर स्थित, त्सोकार एक लुभावनी झील है, जो कि अपने आकार और गहराई के लिए प्रसिद्ध है। उसका पानी एकदम पारदर्शी है, जिसके

किनारे पर करीब 5 फुट भीतर तक के गोल बारीक पथर साफ नजर आ रहे थे।

दोपहर बाद जापानी मौक द्वारा विश्व शांति हेतु बनाया गया शांति स्तूप देखा, जो सचमुच ही शांति का प्रतीक था। बिलकुल बुद्ध की शांत आँखों-सा। उसके बाद हम 'वॉल ऑफ फेम' गए, जो सीमा पर शहीद हुए हमारे जवानों की याद दिलाता है। वहाँ मौजूद बैंड के साथ पुष्पचक्र अर्पित करते हुए स्वतः ही हाथ सैल्यूट के लिए उठ गए और हृदय नतमस्तक...। अच्छे बच्चों की तरह तमाम निर्देशों का पालन करते हुए, भीड़-भाड़ से बचते हुए हमने गाड़ी से पूरी घाटी की सुंदरता को आँखों के साथ-साथ कैमरे में कैद करते रहे। हम वहाँ दो दिन तक रहे और उसके बाद इन शांत वादियों से विदा लेकर अपने घर लौट आए।

आशुतोष खेमका

कक्षा-11 (दौलत सदन)

चहुमुखी विकास के लिए प्रतिबद्ध मेरा विद्यालय



मेरे व्यक्तित्व निर्माण में सिंधिया स्कूल ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके लिए मैं विद्यालय का जीवनभर आभारी रहूँगा।

इस विद्यालय परिवेश में विद्यार्थी के जीवन को सँवारने में शिक्षकों की महत्ती भूमिका है। विद्यालय में पठन-पाठन के अतिरिक्त जीवन के महत्वपूर्ण आयामों को महे नजर रखते हुए खेल-कूद, वाद विवाद, संगीत, नाटक में विद्यार्थियों को सम्मिलित कर उनके सांसेतिक एवं चारित्रिक निर्माण में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। विद्यालय प्राचीन भारतीय संस्कृति की गुरुकुल परंपरा एवं आधुनिकता को समाहित कर विद्यार्थियों को स्वदेशी मूल्यों एवं आदर्शों के साथ जीवन को सँवारने का अवसर प्रदान करता है।

इस विद्यालय में प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति में समन्वय स्थापित कर विद्यार्थियों को सामाजिक रीति-रिवाजों से अवगत कराने का प्रयास किया जाता है। इस परंपरा को सिंधिया स्कूल वर्तमान परिवेश में भी बखूबी निभा रहा है। निकटवर्ती गाँवों में सामाजिक सेवा करना एवं उनके साक्षरता-कार्यक्रम में सहयोग देना विद्यालय की प्राथमिकता में शामिल है। इसी प्रक्रिया में विद्यालय के विद्यार्थियों को गाँवों में ले जाकर ग्रामीणों की समस्याओं से अवगत करवाना, समस्याओं के कारण तथा निराकरण के साथ समाज की विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया जाता है जो भविष्य में

विद्यार्थियों के लिए बहुत ही उपयोगी साबित होता है। मेरा निकटवर्ती ग्राम के दिव्यांग (दृष्टिहीन) बच्चों को शिक्षा प्रदान करना एवं उनके साथ विचारों का आदान-प्रदान करना एक सुखद अनुभव रहा। इसी अनुभव एवं सेवा की बदौलत मुझे 'इंटरनेशनल अवार्ड फॉर यंग पीपल' स्वर्णपदक मिला।

विद्यालय में पठन-पाठन के अतिरिक्त जो रोचक एवं साहसिक कार्यों में सम्मिलित करने की परंपरा है उसमें साइकिलिंग, पर्वतारोहण, कैंपिंग आदि में विद्यार्थियों की सहभागिता उन्हें जीवन के विभिन्न आयामों से अवगत कराती है। विद्यार्थियों को गंभीर चुनौतियों का सामना करने का अनोखा प्रशिक्षण प्रदान कराया जाता है। इसी क्रम में मेरा कक्षा ग्यारह में साइकिलिंग अभियान भरतपुर से बीकानेर था और उसकी दूरी लगभग पाँच सौ किलोमीटर थी। इस साहसिक अभियान में मेरे चौदह सहपाठी एवं चार शिक्षक भी शामिल थे। हमें अपनी यात्रा के दौरान राजस्थान की अद्भुत एवं अनेक प्रकार की स्थानीय संस्कृति से परिचित होने का अवसर मिला। यह अभियान आपसी सहयोग, आत्मनिर्भरता, जुझारूपन एवं दृढ़ निश्चय जैसे जीवन के महत्वपूर्ण आयामों को मेरी जीवन शैली में समाहित करने में बहुत ही उपयोगी रहा। इस अभियान के अनुभव से हमने सीखा कि दृढ़ निश्चय एवं सत्त प्रयास से मनुष्य असंभव प्रतीत होने वाले लक्ष्यों को भी प्राप्त कर सकता है।





विद्यालय में बीते मेरे बहुमूल्य सात वर्षों ने मुझे अपने व्यक्तित्व को निखारने में बहुत ही महत्वपूर्ण पाठ सिखाया।

मुझे बड़ों ओर छोटों के साथ उचित व्यवहार का ज्ञान दिया और साथ ही यह भी सिखाया कि जीवन में नैतिक मूल्यों का क्या महत्व है। विद्यालय की गुरुकुल परंपरा ने जीवन में अनुशासन एवं गुरु-शिष्य संबंधों को समझने और उसके निर्वहन का बहुत ही उपयोगी सबक सिखाया। ‘इंटरनेशनल अवार्ड फॉर यंग पिपल’ में स्वर्णपदक प्राप्त कर बहुआयामी परिपेक्ष, जीवन के बहुमूल्य अनुभवों से अवगत होने का अवसर मिला। मैं अपने गुरुजनों, साथियों एवं प्यारे अनुजों का जीवनभर आभारी रहूँगा जिन्होंने मेरी सफलता में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अरिंदम भारद्वाज

(पूर्व स्कूल कैप्टन, दौलत सदन, 2016)

एम.एस.सी. छात्र, द लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स
एवं पोलिटिकल साइंस (ल.स.इ.)

आज के समय का एडवेंचर

जब हम लोग एडवेंचर (रोमांच) शब्द के बारे में सोचते हैं तो हम सबको साइकिल चलाना, पहाड़-पर्वतों की चढ़ाई या नदी की बहती धारा पर अठखेलियाँ करना (रिवर राफिंग) आदि याद आता है। लेकिन क्या आप सबको मालूम है कि हम सब लोग अभी भी एक एडवेंचर कर रहे हैं, और वह एडवेंचर है कोविड-19 से बचना जैसे हम लोग राफिंग में राफ्ट पर बैठकर पानी से बचते हैं, वैसे ही हम अपने घर के अंदर रहकर कोविड-19 से अपना बचाव कर रहे हैं। यह खतरनाक और रोमांचक एडवेंचर पूरे एक वर्ष से अधिक चला है और अभी खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। इस एडवेंचर में हमारी पूरी दुनिया शामिल है। हम सब लोग एक साथ यह एडवेंचर कर रहे हैं, जिसमें सारे स्कूल बंद हो गए, सबको घर रहना पड़ा। आज भी सबको मास्क पहनकर ही कहीं जाना पड़ता है। मेरे नजर में कोई और ऐसा एडवेंचर नहीं है। यह एक ऐसा रोमांच है, जिसमें हम बीमार पड़ सकते हैं और जान भी जा सकती है, बाकी सभी एडवेंचर गतिविधियों में सभी लोग बहुत खुश होते हैं और उत्साहित होते हैं, लेकिन इस एडवेंचर में लोग घर के बाहर निकलने से भी घबराते हैं।

कोविड-19 एक बहुत खतरनाक एडवेंचर है। इस एडवेंचर में डॉक्टर हमारे कोच है, जिन्होंने हमारी बहुत सहायता की है। इस कोविड-19 के एडवेंचर में बहुत सारे लोगों की जान चली गई और बहुत सारे लोगों ने हार मान ली। फिर भी हमने सभी प्रकार की सावधानियाँ बरतकर इससे आगे हार नहीं मानने का निश्चय कर लिया है और एक साथ इस एडवेंचर का हिस्सा बन हुए है। इस एडवेंचर से हमें पता चलता है कि हम कितने बहादुर हैं, खुद का कितना ध्यान रख सकते हैं ?

इस कठिन समय में हमें दुखी न होकर खुश होना चाहिए कि हमें सीख भी मिली है। हमें भगवान ने एक ऐसा एडवेंचर दिया है जिसमें छोटे से छोटे बच्चों को भी पता चलता है कि हम सब लोगों को खुद के लिए ही एक कवच बनाना है और हमें इस एडवेंचर को खुद का ध्यान रखते हुए पूरा करना है।

आन्या पिल्लई

सातवीं “ब”



मेरी पहली साहसिक यात्रा

“हिल स्टेशन” हमेशा लोगों के लिए एक बड़ा आकर्षण होते हैं। छुट्टियों के दौरान खासकर गर्मियों की छुट्टियों में लोग “हिल स्टेशन” पसंद करते हैं। मुझे सिंधिया स्कूल के विद्यार्थियों के साथ मनाली जाने का अवसर मिला। मनाली हिमाचल प्रदेश में स्थित है। यह ब्यास नदी पर स्थित है। हमें दिल्ली से मनाली पहुँचने में करीब 10 घंटे लगे। यह एक साहसिक तथा शैक्षणिक अभियान था।

हम ग्वालियर से ट्रेन से निकले तथा दिल्ली से बस द्वारा हम मनाली में अटल बिहारी वाजपेयी पर्वतारोहण एवं सहबद्ध संस्थान पहुँचे। वहाँ पहुँचकर सबसे पहले हमने आराम किया और फिर दोपहर का भोजन किया। शाम को हमने संस्थान के आस-पास की जानकारी ली तथा वहाँ के सौदर्य का लुप्त उठाया। फिर दूसरे दिन रॉक-क्लाइंबिंग से हमारा यह साहसिक अभियान शुरू हुआ। हम सबने बड़े जोश के साथ यह अभियान पूरा किया तथा संस्थान लौटकर विश्राम किया। दूसरे दिन की गतिविधि थी रैपलिंग। इस गतिविधि में हम रस्सी के सहारे पहाड़ों से नीचे उतरे और अपनी गतिविधि पूरी की।



शाम को हम वहाँ के एक प्रसिद्ध मंदिर गए जिसका नाम था हिंडिम्बा मंदिर। वहाँ पर हमें उस मंदिर के बारे में जानकारी दी गई कि हिंडिम्बा देवी मंदिर एक प्राचीन गुफा मंदिर है, जो महाभारत के भीम की पत्नी हिंडिम्बा देवी को समर्पित है। यह मनाली में सबसे लोकप्रिय मंदिरों में से एक है। इसे छुंगरी मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर एक चार मंजिला संरचना है जो जंगल के बीच में स्थित है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि इस मंदिर में देवी की कोई मूर्ति स्थापित नहीं है बल्कि हिंडिम्बा देवी मंदिर में हिंडिम्बा देवी के पदचिह्नों की पूजा की जाती है।

उसके बाद थी हमारी 16 किलोमीटर की ट्रैकिंग-मनाली से सोलंगधाटी तक। हम सभी ने बड़े जोश के साथ यह ट्रैकिंग शुरू की तथा शाम को हम अपने लक्ष्य पर पहुँच गए।

सोलंग घाटी एडवेंचर के शौकीनों के लिए एक पसंदीदा जगह है। इसके अलावा यहाँ पैराग्लाइडिंग, पैराशूटिंग, घुड़सवारी से लेकर मिनी ओपन जीपों की सवारी विशेष रूप से सभी आयु वर्ग के पर्यटकों के लिए उपलब्ध है। सर्दियों के दौरान जब घाटी बर्फ से ढँकी होती है इस दौरान स्कीइंग यहाँ एक लोकप्रिय खेल है। मई में जब बर्फ पिघलती है तो इस दौरान स्कीइंग जोरबिंग, पैराग्लाइडिंग और पैराशूटिंग में बदल जाती है।

सोलंग घाटी पहुँचने के बाद हम वहाँ के अंजनी महादेव के प्राचीन मंदिर के दर्शन के लिए गए। वहाँ पर एक झरना था जो सबके आकर्षक का केंद्र था। दूसरे दिन हम पतालस्थूं की चोटी पर अपने आप को उस वातावरण के अनुसार ढालने को चले गए।

अब था हमारा अंतिम पड़ाव धुंधी, हम लगभग 10,500 फीट ऊँचाई के लिए निकल पड़े। लगभग 8 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद हम धुंधी पहुँचे। वहाँ पहुँचकर प्रशिक्षकों ने हमें अगले अभियान के बारे में जानकारी दी। अब हमारा लक्ष्य था 11,000 फीट की चोटी फतह करना। प्रशिक्षकों ने हमारा हौसला बढ़ाया और हम लोग भी चल दिए अपने लक्ष्य की ओर। आखिरकार दोपहर तक हम अपने लक्ष्य तक पहुँचकर स्कूल का झंडा लहराया।

अब थी हमारी वापसी-धुंधी से नाश्ता करने के बाद हमने



फिर अपनी ट्रैकिंग सोलंग घाटी वापस पहुँचने के लिए शुरू की। सोलंग पहुँचने के बाद हमने शाम को 'रिवर क्रॉसिंग' की गतिविधि में भाग लिया और सबने अपना अच्छा प्रदर्शन कर इस गतिविधि को पूरा किया। रात को सोलंग में विश्राम करने के बाद अगले दिन हम निकल पड़े मनाली संस्थान के लिए। वहाँ रुकने के बाद दूसरे दिन मनाली बाजार घूमने गए, वहाँ पर खरीददारी व अनेक तरह के व्यंजनों का स्वाद लिया। शाम को हमारे प्रशिक्षण सफलता पूर्वक पूरा होने पर हमें प्रशिक्षकों द्वारा बैच दिया गया और अगले दिन हम निकल पड़े अपने स्कूल की ओर। हमने बहुत मजे किए, वहाँ की सुंदरता तो देखते ही बनती थी। मन कर रहा था कि वहाँ रुककर प्रकृति की सुंदरता का लुप्त उठाते रहें।

अर्णव जोशी

कक्षा-8 (महादजी सदन)



परिकल्पना से दूर 'एक सोच'

परिकल्पना अर्थात् तर्क के लिए किसी बात की कल्पना करना और उससे दूर अर्थात् तर्क और वितर्क की भावनाओं से निकलकर मन को पंख लगाकर परियों-सी ऊँची उड़ान देना। उपरोक्त सोच ही मुझे हमेशा प्रेरित करती है रोमांचक गतिविधियों में भाग लेने के लिए और यही भाव मैं हमेशा अपने साथ भाग ले रहे सहभागियों में भरने की चेष्टा करता हूँ।

पानी में उठे बुलबुले के समान इस छोटे से जीवन को एक रोमांच भरे पलों का एहसास करवाने के लिए हर वर्ष मैं किसी न किसी रोमांच भर देने वाली गतिविधियों में हिस्सा लेता हूँ। यह रोमांच मुझे सुदृढ़ कर, मेरे जीवन को भावनाओं से भर देता है। जब पहाड़ों के संग समय बिताते हैं तो ये ही पहाड़ संदेश देते हैं कि "जीवन में अडिग रहो और जीवन की सुंदरता को निखारते रहो। जब शीतल जल के पास रहते हैं तो यह जल जीवन को निर्मल, शीतल एवं बिना स्वार्थ के एक दिशा में बहने का संदेश देता है।

साइकिल अभियान में भाग लेने पर जीवन को संदेश मिलता है कि जीवन की राह कष्टों से परिपूर्ण होती है।

कभी रुकावट आती है तो कभी जीवन सरल हो जाता है। कहने का अर्थ है कि जहाँ पैदल न चलना पड़े, वहाँ सरल और जहाँ शारीरिक बल लगाना पड़े, वहाँ पर सख्त हो जाओ।

ये तीनों क्रीड़ाएँ सिंधिया स्कूल के सारे बच्चों को भाग लेने के लिए हमेशा प्रेरित करती हैं यही बच्चे जीवन का यह संदेश प्रकृति से लेकर, आने वाले जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए तैयार होते हैं।





मैंने अपने जीवन में अपनी परिकल्पनाओं की उड़ान को छूने के लिए वर्ष 2016 में भारत के श्रेष्ठतम इंस्टीट्यूट में से एक 'नेहरू इंस्टीट्यूट आफ माउंटेनियरिंग' में बेसिक कोर्स किया। यहाँ से रोमांचक जीवन जीने के हौसले के साथ-साथ उससे जुड़े कर्तव्यों का एहसास हुआ कि किस तरह अति विकट परिस्थितियों में बिना डगमगाए अपनी मंजिल की ओर अग्रसर रहना होता है।

इसका जीवंत उदाहरण देखने का अवसर तब हाथ लगा, जब सिंधिया विद्यालय के बच्चों के साथ मैं सागर माथा बेस कैंप के लिए सन् 2017 में अभियान का हिस्सा बना और अगुवाई करते हुए उसे सफलतापूर्वक पूरा किया। यारह दिनी इस रोमांचक यात्रा में हम सबने अपने जीवन में कुछ न कुछ ग्रहण किया। उसके कुछ अनुभव मैं आपसे साझा करना चाहूँगा।

इंदिरा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरने के पश्चात, हम 6 मई 2017 को काठमांडू, नेपाल स्थित एक होटल में ठहरे। अगले दिन हम लोग विश्व के सबसे खतरनाक हवाई अड्डे में से एक 'लुक्ला हवाई अड्डे' पर उतरे, यहाँ से शुरू होती है "माउंट एवरेस्ट बेस" कैंप की यात्रा दो दिन पश्चात हम नामचे बाजार पहुँचे हमने यहाँ पर अपने शरीर को वातावरण से तालमेल बैठाने के

लिए दो दिन लगभग कड़ा अभ्यास करते रहे। फिर यहाँ से अपनी यात्रा को दिशा देते हुए, छोटे-सँकरे रास्तों पर, तो कभी घाटियों में तो कभी वादियों से होते हुए, तो कभी नदी-नाले झरनों से होते हुए, अपनी मंजिल की ओर अग्रसर रहे।

यात्रा के छठे दिन आखिर हमने अपनी मंजिल प्राप्त कर ली और सिंधिया स्कूल का परचम लहरा दिया। इस कठिन एवं संकट से भरी राह में हमने अनेक चुनौतियों का सामना किया और यह सीखा कि इस चुनौती का समाधान कैसे हो सकता है। बच्चों के जीवन में सबसे बड़ी शिक्षा यही थी कि कोई भी चुनौती मजबूत इरादों के सम्मुख तिनके की तरह होती है, केवल हमें अपने आप पर और अपने बुलंद हौसलों पर विश्वास बनाए रखना होता है।



यात्रा दल का नेतृत्व करना, यात्रादल के हर सदस्य के हौसले को सही दिशा देना, मनोबल बढ़ाना और उनकी ऊर्जा के प्रवाह को एक दिशा प्रदान करना भी बच्चों के लिए एक अनुभव और अद्वितीय शिक्षा का एक कारण रहा!

अनिल पठानिया
गणित शिक्षक

साहसिक अभियानों में मेरा अनुभव...



कुछ महान लोगों ने कहा है कि रोमांच के बिना हमारा जीवन सिर्फ एक खाली किताब है।

साहसिक लोग अपने जीवन में हमेशा साहसिक कार्य करते हैं। उन्हें लगता है कि उनके जीवन में कुछ भी करने का साहस है। ऐसे बहुत से लोग हैं, जिनका जीवन साहसिक अनुभवों से भरा हुआ है। वे जोखिम भरे और खतरनाक जीवन जीने के अभ्यस्त हो जाते हैं। साहसिक कार्य के लिए परिणाम की चिंता किए बिना सख्त अनुशासन के साथ पूर्ण साहस और उत्साह की आवश्यकता होती है।

साहसिक कार्य किया था। मैं पिछले वर्ष जुलाई में उत्तराखण्ड के “वनवास” नामक पर्वतीय स्थल पर गया था। यह मेरे लिए आश्चर्यजनक था क्योंकि मैंने कभी भी पृथ्वी पर ऐसी सुंदरता नहीं देखी थी। यह स्थान हरियाली और प्राकृतिक सुन्दरता से भरा था। मेरे लिए यह सब कुछ आश्चर्यजनक था- जैसे कि बादलों को नजदीक से उड़ते हुए देखना, पक्षियों की मधुर आवाज, पानी के झरनों को नीचे गिरते हुए देखना आदि। इसने मुझे धरती पर स्वर्ग का एहसास दिलाया। कितना शांत और प्यारा वातावरण था। मैं पूरे दिन वहाँ घूमता रहा लेकिन मैं तरोताजा रहा और मेरी आँखें इन दृश्यों को देखने के लिए बार-बार बेचैन हो रहीं।

अब मैं आपको ‘रोप वॉकिंग’ के बारे में बताता हूँ। जैसा कि आप तस्वीर से देख सकते हैं कि रस्सी पर चलना वाकई काफी मुश्किल काम है। पूरा मार्ग बहुत कठिन है और चलना लगभग असंभव है। वहाँ से आप देख सकते हैं कि लकड़ी की कई तख्तियाँ हैं जो अलग-अलग हैं। जब आप इस पर चलते हैं तो फिर ये तख्तियाँ बहुत तेजी से हिलती हैं। इन सभी कठिनाइयों के बावजूद यह मेरे जीवन के सबसे अच्छे अनुभवों में से एक है। मैंने इस गतिविधि से यह सीखा कि डरने से कोई फायदा नहीं है। अगर आप डरते हैं तो आप इस तरह की गतिविधियों में कभी भी सफल नहीं होंगे।

अब मैं दूसरी गतिविधि ‘टायर और नेट क्लाइम्बिंग’ के बारे में बताना चाहता हूँ। इस गतिविधि में बहुत मेहनत से चढ़ना होता है और चढ़ने के लिए आपके हाथों और पैरों में बहुत शक्ति होनी चाहिए। इसमें सबसे कठिन काम एक टायर से दूसरे टायर पर जाना है। थोड़ी से लापरवाही से आप गिर सकते हैं। आपको केवल अपने पैरों को एक टायर पर रखना है और पूरी सावधानी के साथ धीरे- धीरे आगे बढ़ना है। यह गतिविधि कठिन ज़रूर है लेकिन जब हम इसे कर लेते हैं तो अथाह खुशी मिलती है। इस गतिविधि से मैंने यह सीखा कि हमें सदैव धैर्य रखना चाहिए। अंत में यह कहना चाहता हूँ कि आपको धैर्यशाली, सहनशील और निःड़र होना चाहिए। यही कारण है कि ये दोनों गतिविधियाँ मेरे जीवन की सबसे अच्छी और यादगार क्षणों में से एक रहीं हैं।





स्वर्गीय महाराजा माधवराव सिंधिया की स्मृति में सिंधिया स्कूल द्वारा हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन - २०२१

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष की स्वर्गीय महाराजा माधवराव सिंधिया जी की पुण्य स्मृति में सिंधिया स्कूल, दुर्ग ग्वालियर में महाराजा माधवराव सिंधिया स्मृति अंतर्विद्यालयीय हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। गत 20 वर्षों से लगातार आयोजित किए जाने वाले इस कार्यक्रम में भारत के 12 प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया जिनके नाम कुछ इस प्रकार से हैं- राष्ट्रीय इंडियन मिलिट्री कॉलेज देहरादून, द दून स्कूल देहरादून, महारानी गायत्री देवी गर्ल्स स्कूल जयपुर, वसंत वैली स्कूल नई दिल्ली, द हेरिटेज स्कूल वसंत कुंज नई दिल्ली, डेली कॉलेज इंदौर, मेयो कॉलेज अजमेर, मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल अजमेर, विद्या देवी जिंदल स्कूल हिसार, साइना इंटरनेशनल स्कूल कटनी, सिंधिया कन्या विद्यालय, ग्वालियर, सिंधिया स्कूल, ग्वालियर। प्रत्येक विद्यालय से तीन प्रतिभागियों ने इस वाद विवाद प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। वाद विवाद प्रतियोगिता का प्रथम चक्र ऑक्सफोर्ड पद्धति पर आधारित था जबकि द्वितीय चक्र टर्न कोर्ट पद्धति पर और तृतीय चक्र कैंब्रिज पद्धति पर आधारित था।

प्रथम चक्र में सभी 12 विद्यालयों ने भाग लिया जिसमें से 10 द्वितीय चक्र में पहुँचे और अंतिम चक्र में 4 विद्यालयों ने इस वाद विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया जिसका विषय था “राजनीति में युवाओं की भागीदारी ही देश को विकास के पथ पर ले जा सकती है।”

इस बात विवाद प्रतियोगिता के निणायिकों में राष्ट्रपति सम्मान से विभूषित श्री राम नयन दुबे, हिंदी क्षेत्र में 18

वर्षों से सेवा करने वाले ब्लॉगर यूट्यूब पर भाषा विशेषज्ञ और शिक्षक श्री सौमित्र कुमार जयसवाल तथा विभिन्न कार्य क्षेत्रों व मीडिया में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं व चैनलों से से जुड़े शिक्षाविद् डॉक्टर सत्य प्रकाश शर्मा प्रमुख रहे। सभी ने छात्रों को वाद विवाद और विषय की बारीकियों से परिचित करवाया। सभी निणायिकों ने बच्चों को स्वर्गीय महाराज माधवराव सिंधिया के व्यक्तित्व को याद करते हुए उनके दिखाए रास्ते पर चलने का आग्रह किया।

प्रतियोगिता में सिंधिया स्कूल ग्वालियर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया दूसरे स्थान पर डेली कॉलेज इंदौर और तीसरे स्थान पर दून स्कूल देहरादून रहा। प्रथम चक्र के पूल “अ” से सर्वश्रेष्ठ वक्ता रहे सिंधिया स्कूल के सत्यमराज तथा पूल “ब” से सर्वश्रेष्ठ वक्ता रही महारानी गायत्री देवी गर्ल्स स्कूल जयपुर से तीनों शर्मा। अंतिम चक्र में सर्वश्रेष्ठ वक्ता सिंधिया स्कूल की परीक्षिता सिंह रही।

इस अवसर पर सिंधिया स्कूल के प्रधानाचार्य डॉ. माधव देव सारस्वत, कंप्यूटर विभाग के प्रभारी श्री राजकुमार कपूर, तथा सह शैक्षणिक कार्यों के प्रभारी श्री धीरेंद्र शर्मा सहित हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष मनोज मिश्र आदि उपस्थित थे।

मनोज कुमार मिश्र
हिंदी विभागाध्यक्ष
सिंधिया स्कूल, दुर्ग ग्वालियर

अंतर-सदनीय (वरिष्ठ-वर्ग) वाद-विवाद प्रतियोगिता, २०२१

गत वर्षों के समान इस वर्ष भी अंतर-सदनीय वरिष्ठ वर्ग वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन ऑनलाइन प्रारूप में किया गया। प्रतियोगिता के नियम के अनुसार प्रत्येक सदन से कक्षा नौ से कक्षा बारह तक के तीन प्रतिभागियों को इसमें हिस्सा लेना था और कुल मिलकर प्रतियोगिता में चौबीस प्रतिभागियों ने भाग लिया। वाद-विवाद कैंब्रिज प्रारूप में करवाया गया जिसे कुल दो चरणों में विभाजित किया गया था। पहले चरण में सदनों को चार-चार के दो समूहों में बाँटा गया एवं दोनों समूहों से तीन सदन अंतिम चक्र में पहुँचे। पहले चरण का विषय था- “आने वाले समय में वाद-विवाद प्रतियोगिता ऑनलाइन प्रारूप में ही आयोजित की जानी चाहिए”। यह विषय बच्चों के बेहद करीब था जिसके कारण हमने वाद-विवाद में अनेक उत्तम तर्क सुने एवं छात्रों द्वारा बड़ी कुशलता से उन तर्कों का खंडन भी किया गया। पहले चरण में प्रतियोगिता बेहद काँटे की रही और महादजी, जीवाजी, राणोजी, शिवाजी, माधव एवं दौलत सदन ने अंतिम चक्र में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया। अंतिम चक्र का विषय पहले चक्र के ही समान एक दिन पूर्व दिया गया था जिससे छात्र अपने उत्तम विचारों व तर्कों के साथ वाद-विवाद करने के लिए आएँ। वाद-विवाद का विषय था- “अफगानिस्तान से बातचीत करना देशहित में है”। इस विषय पर आज असल जीवन में भी सभी व्यक्तियों के अलग-अलग विचार हैं और ऐसा ही हमने वाद-विवाद में भी पाया। प्रतिभागियों ने बेहद ही कुशलता से अपने विचार रखे और प्रश्न पूछा तथा उत्तर दिए। अनेक विद्यार्थियों ने इस वाद-विवाद को देखा और उन्हें सीखने और सोचने को को बहुत कुछ मिला। ऑनलाइन मंच पर आयोजित यह प्रतियोगिता मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक रही।

प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा:-

स्थान	सदन	अंक
प्रथम	जीवाजी	222.5
द्वितीय	महादजी	204
तृतीय	शिवाजी	200.5

सर्वश्रेष्ठ वक्ता के रूप में जीवाजी सदन के कक्षा 11 के विदित गुप्ता 78/90 अंकों के साथ प्रथम व दूसरे श्रेष्ठ वक्ता माधव सदन से कक्षा 11 के आदित्य सिंह 75.5/90 द्वितीय स्थान पर रहे।

सत्यमराज

कक्षा 11 महादजी सदन
(सचिव, हिंदी साहित्य सभा)

आज़ादी के पचहत्तर वर्ष पूर्ण होने पर वीरों की स्मृति में यशोगाथा पर काव्य पाठ...

“जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गदिपि गरीयसी” यानी की जननी (माता) और जन्मभूमि दोनों ही महान है। इनसे बढ़कर दुनिया में कुछ और नहीं। इसीलिए दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसका राष्ट्र, उसकी मातृभूमि ही प्रथम पूजनीय होती हैं। और प्रत्येक राष्ट्र के लिए उसकी सम्पूर्ण स्वतंत्रता ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है।

इसी स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए देश की सेना को हमेशा तैयार रहना पड़ता है और सैनिक ही सेना की सबसे बड़ी पूँजी होते हैं। जो अपनी मातृभूमि पर मर मिटने के लिए हर बक्त तैयार रहते हैं।

इन्हीं सैनिकों की वीरता, अदम साहस की वजह से देश और देश का प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षित महसूस करता है। हम अपने घरों में शांति से रहते हैं और बड़े खुशी व आनंद के साथ अपने त्योहारों को मनाते हैं। अपने देश की सेवा के लिए वो अपने परिवार, सगे संबंधियों से दूर रहते हैं।

इसी भावना को ध्यान में रखे हुए ए.एम.आई. शिशु मंदिर द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए दिनांक 14 सितम्बर 2021 को स्व. विजया राजे अंतर्विद्यायलयीन साक्षरता प्रतियोगिता के अंतर्गत हिंदी काव्य पाठ का आयोजन किया गया। जिसका विषय था - आज़ादी के पचहत्तर वर्ष पूर्ण होने पर वीरों की स्मृति में यशोगाथा पर काव्य पाठ।

हमारे विद्यालय से दो छात्रों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया-

1. अनुभव सचान, कक्षा-11



अनुभव सचान

2. कृष्णा गुप्ता, कक्षा-11



कृष्णा गुप्ता

अनुभव सचान को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ वक्ता घोषित किया गया।

कृष्णा गुप्ता को द्वितीय श्रेष्ठ वक्ता घोषित किया गया।

कमला जीवन वाद-विवाद प्रतियोगिता २०२१

दून स्कूल में आयोजित प्रतिष्ठित कमला जीवन वाद-विवाद प्रतियोगिता में विद्यालय के तीन विद्यार्थियों-आयुष्मान राय, परीक्षिता और आदित्य सिंह ने भाग लिया। आदित्य सिंह को पहले चरण में सर्वश्रेष्ठ वक्ता, आयुष्मान को चौथे चरण में तथा परीक्षिता को अंतिम चक्र में सर्वश्रेष्ठ वक्त्री घोषित किया गया। अंतिम चक्र में मुकाबला दून स्कूल और सिंधिया स्कूल के मध्य हुआ जिसमें हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कमला जीवन ट्रॉफी अपने नाम की।

विद्यार्थियों की सफलता पर प्राचार्य डॉ. सारस्वत ने बधाई दी तथा भविष्य में इसी प्रकार उन्नति करने को कहा।



परीक्षिता सिंह



सत्यमराज



आयुष्मान राय

कनिष्ठ वर्ग अंतर्सदनीय हिंदी वाग्मिता प्रतियोगिता- २०२१-२०२२

विद्यालय में कनिष्ठ वर्ग अंतर्सदनीय हिंदी वाग्मिता प्रतियोगिता दिनांक 05 जुलाई 2021 को 'ऑनलाइन' आयोजित की गई। प्रत्येक सदन से पाँच-पाँच (दो गद्य, दो पद्य खंड तथा एक पी.पी.टी.) प्रतिभागियों ने भाग लिया। सभी सदनों ने दृढ़ संकल्प के साथ इस प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रतिद्वंदी सदन प्रतिभागी को पराजित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। निम्नलिखित विद्यार्थियों को विजेता घोषित किया गया और प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

गद्य - खण्ड

- | | | |
|----------------|------------------------|-----------------|
| 1. सार्थक दलाल | - कक्षा - 8 (जानकोजी) | - प्रथम स्थान |
| 2. प्रणय गोयल | - कक्षा - 8 (जानकोजी) | - द्वितीय स्थान |
| 3. सहज अग्रवाल | - कक्षा - 7 (कनेरखेड़) | - तृतीय स्थान |



सार्थक दलाल



प्रणय गोयल



सहज अग्रवाल

पद्य - खण्ड

- | | | |
|-------------------|---------------------------|-----------------|
| 1. विवेक शर्मा | - कक्षा - 8 (निमाजी सदन) | - प्रथम स्थान |
| 2. अक्षत सहगल | - कक्षा - 6 (जानकोजी) | - द्वितीय स्थान |
| 3. अर्थर्व तिवारी | - कक्षा - 7 (जानकोजी) | - तृतीय स्थान |



विवेक शर्मा



अक्षत सहगल



अर्थर्व तिवारी

विजेता सदनों की स्थिति इस प्रकार रही -

जानकोजी को प्रथम, दत्ताजी द्वितीय एवं निमाजी सदन को तृतीय स्थान मिला।

अपने संक्षिप्त उद्बोधन में श्री धीरेन्द्र शर्मा (डीन ऑफ कोकरिकुलर एक्टिविटीज) ने विजेता विद्यार्थियों को बधाई दी तथा प्रतियोगिता के बढ़ते स्तर पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए भविष्य में और अधिक समुन्नति करने को कहा।

अंतर सदनीय हिन्दी वाक्पटुता प्रतियोगिता (वरिष्ठ वर्ग) २०२१-२२

वरिष्ठ वर्ग की अंतर-सदनीय वाक्पटुता प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 15 जुलाई 2021 को ऑनलाइन किया गया। इस प्रतियोगिता में कक्षा 10वीं से 12वीं तक के प्रतिभावान विद्यार्थियों ने पूर्ण आत्मविश्वास और ओजस्वी स्वर में अपनी प्रस्तुति की छठा बिखेरी। इस प्रतियोगिता के लिए छात्रों को लेखकों और कवियों के नाम पहले ही दे दिए गए थे। प्रत्येक सदन से दो-दो प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिसमें एक प्रतियोगी ने गद्य खंड तथा दूसरे ने पद्य खंड की प्रस्तुति दी। निम्नलिखित विद्यार्थियों को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ वक्ता घोषित किया गया और प्रधानाचार्य महोदय द्वारा बधाई दी गई।

गद्य-खण्ड -



शांतनु यादव
कक्षा-12 (जयाजी सदन)
प्रथम स्थान



गौरव मेहरा
कक्षा-11 (जयप्पा सदन)
द्वितीय स्थान

पद्य-खण्ड -



उज्ज्वल मेहरोत्रा
कक्षा-12 (माधव सदन)
प्रथम स्थान



अनुभव सचान
कक्षा-11 (जयाजी सदन)
द्वितीय स्थान

विजेता सदनों का स्थान निम्नवत रहा -

1. जयाजी सदन - प्रथम स्थान 2. माधव सदन - द्वितीय स्थान 3. जीवाजी - तृतीय स्थान

‘सुश्री लिनेल’ हिन्दी वाद- विवाद प्रतियोगिता

बेल्हम गर्ल्स स्कूल में 3 तथा 4 सितम्बर 2021 को ‘सुश्री लिनेल’ हिन्दी वाद- विवाद प्रतियोगिता ऑनलाइन आयोजित की गई। हमारे विद्यालय से तीन विद्यार्थियों की टीम ने इस वर्ष इस प्रतियोगिता में भाग लिया !

1. समीप मोदी - कक्षा 9वीं
2. आराध्य शिव शुक्ला - कक्षा 10वीं
3. आदित्य सिंह - कक्षा 10वीं

पहले चरण की प्रतियोगिता में देश प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया। हमारे विद्यालय के छात्रों ने शानदार प्रदर्शन किया। आराध्य शिव शुक्ला को पूँल ‘अ’ में सर्वश्रेष्ठ वक्ता घोषित किया गया।

‘आज तक’ हिन्दी वाद- विवाद प्रतियोगिता

वसंत वैली स्कूल में 17, 18 तथा 19 अगस्त 2021 को ग्याहरवीं ‘आज तक’ हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता ऑनलाइन आयोजित की गई। हमारे विद्यालय से तीन विद्यार्थियों की टीम ने इस वर्ष इस प्रतियोगिता में भाग लिया !

1. सत्यमराज - कक्षा 11वीं
2. आयुष्मान - कक्षा 11वीं
3. अंश गर्ग - कक्षा 10वीं

पहले चरण की प्रतियोगिता में देश और विदेश के 44 प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया।

हमारे विद्यालय की टीम भी क्वाटर फाइनल में अपना स्थान बनाने वाले अंतिम 12 विद्यालयों में से एक रही।

अंतर सदनीय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता (मध्य वर्ग) २०२१-२०२२

वाद विवाद जीवन का एक अहम हिस्सा है। प्राचीन काल से ही विभिन्न विषयों पर वाद विवाद होते रहे हैं और इनमें से कुछ न कुछ निष्कर्ष निकलता रहा है। वाद विवाद में हम विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने तर्कों को उदाहरणों के द्वारा सिद्ध करते हैं। विद्यालय हो या महाविद्यालय संसद हो या विधानसभा हर जगह वाद विवाद होते हैं।

विद्यालय में अंतर सदनीय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता (मध्य वर्ग) दिनांक 28 अगस्त 2021 को ऑनलाइन आयोजित की गई। वाद-विवाद का विषय था “भारत प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में सक्षम है” प्रत्येक सदन से तीन-तीन प्रतिभागियों ने विषय के पक्ष और विपक्ष में अपने विचार रखे। सभी सदनों ने दृढ़ संकल्प के साथ इस प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रतिद्वंदी सदन प्रतिभागी को पराजित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ दिया।

वक्ताओं के जोशीले एवं प्रभावपूर्ण विचारों को सुनकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हमारे देश की भावी पीढ़ी अत्यंत सजग एवं जागरूक हो गयी है। दौलत सदन ने प्रतियोगिता में अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ वक्ता रहे :-

- अर्णव जोशी (प्रथम) कक्षा - 8 (महादजी सदन)
- तनिष अग्रवाल (द्वितीय) कक्षा - 9 (दौलत सदन)



विजेता सदनों का स्थान निम्नवत रहा -

- दौलत सदन - प्रथम
- महादजी सदन - द्वितीय
- माधव तथा रानोजी सदन संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहे।

अर्णव जोशी (प्रथम)
कक्षा-8 (महादजी सदन)

तनिष अग्रवाल (द्वितीय)
कक्षा-9 (दौलत सदन)

अपने संक्षिप्त उद्बोधन में प्राचार्य महोदय ने विजेता विद्यार्थियों को बधाई दी तथा प्रतियोगिता के बढ़ते स्तर पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए भविष्य में और अधिक समुन्नति करने को कहा।

श्री ताराचंद निबंध प्रतियोगिता २०२१

“आओ सब अपनी लेखन क्षमता को दें नए आयाम। विचार दें कुछ इस तरह, कि स्वदेश का भी हो उत्थान”॥

जीवन के सभी क्षेत्रों में सफल विचार-विमर्श के लिए हमें श्रेष्ठ निबंध लेखन की आवश्यकता होती है। निबंध किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है। आज सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और वैज्ञानिक विषयों पर निबंध लिखे जा रहे हैं। संसार का हर विषय, हर वस्तु, व्यक्ति एक निबंध का केंद्र हो सकता है। प्रतियोगिता दिनांक 30 जून 2021 को आयोजित की गई। जिसके परिणाम इस प्रकार रहे।

वरिष्ठ वर्ग



आदित्य सिंह (प्रथम)
कक्षा-10 स



वेदांश बालसारिया (द्वितीय)
कक्षा-10 ब

मध्य वर्ग



नीव अग्रवाल (प्रथम)
कक्षा-9 अ



अर्णव जोशी (द्वितीय)
कक्षा-8 अ

कार्टून की दुनिया



सब कुछ
ऑनलाइन हो गया
है, लेकिन मुर्गा
अभी भी ऑफ
लाइन ही जाकर
बनना पड़ता है।



राधव महाजन, कक्षा- ११



हर यात्रा कुछ सिखाती हैं।



हर यात्रा का एक न एक उद्देश्य अवश्य होता है, हर यात्रा जोड़ती है आपको दुनिया से, धरती से, प्रकृति से, लोगों से, आपके आसपास से। बनाती है आपको एक सबको जानने वाला और सबसे अधिक अपने आपको जानने वाला इंसान क्योंकि ये यात्राएँ मानव के लिए हैं, एक शिक्षा का केंद्र, एक माध्यम और यदि इन यात्राओं में आपकी पसंदीदा है “रोमांचक यात्राएँ” तो निश्चित है कि जीवन ने आपको एक अवसर दिया है कुछ अलग तरीके से जीने का।

इन यात्राओं का रोमांच आपको नित नया सीखने, जो सीखा है उसे प्रयोग में लाने तथा जीवन में अपनाने के लिए हमेशा तैयार रखता है। इनका आकर्षण आपको हमेशा युवा, जिंदादिल, विनम्र और धैर्यवान बनाता है।

मैंने पाया है कि इन रोमांचक यात्राओं पर जब हम निकलते हैं तो एक अनोखे उत्साह से भरे, मन में आनंद लिए, किसी प्रकार की कोई चिंता नहीं बल्कि बिना कहे एक आत्मविश्वास साथ निकलते हैं और उस आत्मविश्वास को जगाने के लिए हमें विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं होती, यह स्वयमेव जाग्रत होता है क्योंकि इसके मूल में है प्रकृति के सानिध्य में स्वयं को पहचानने

अपने सामर्थ्य को परखने की चाहत जो सिखाती हैं कि जीवन की चुनौतियों का सामना इसी प्रकार किया जाना चाहिए आत्मविश्वास से भर उत्साहपूर्वक।

कुछ इसी प्रकार के विश्वास से भरकर मेरी साहसिक यात्राओं का सिलसिला प्रारंभ हुआ 2006 में एक पर्वतारोहण दल के सदस्य के रूप में। पैंतीस वर्ष की आयु में सोलह-सत्रह साल के नवयुवकों के कदम से कदम मिलाकर चलना, अपनी ऊर्जा को उनके समानांतर लाना है, इसी भाव ने तैयारियों को जो रूप दिया वह संतुष्टिदायक परिणाम देने वाला रहा क्योंकि वह शुभारंभ था एक नयी विचारधारा का जिसने जन्म दिया उन्मुक्त विचारों को, सीमित संकुचित को विस्तार में बदलने को, जीवन में संघर्षरत रहने को।

अपने पहले पर्वतारोहण ‘स्तोक कांगड़ी’ लेह, से लौटने के पश्चात मुझे ‘कोलन संक्रमण’ से जूझते हुए लगभग दस दिनों तक अस्पताल में रहना पड़ा। प्रकृति की गोद से सीधे अस्पताल का अनुभव मुझे इन यात्राओं को रोकने के लिए पर्याप्त हो सकता था परन्तु एक आकर्षण होता है।



इन यात्राओं का जो इन बाधाओं को क्षीण कर देता है। उसी आकर्षण के कारण मैं अक्टूबर 2006 में अपने पहले साइकिलिंग अभियान ‘ग्वालियर से अजमेर’ के लिए तैयार थी, परिस्थितियाँ विपरीत थीं क्योंकि मुझे साइकिल चलाना तक नहीं आता था। सीखने की चाह ने कल्पनाओं को पंख दिए, छात्रों एवं सहयोगियों का मनोबल बढ़ाने वाला साथ मिला। चार सौ अस्सी किलोमीटर की वह साहसिक यात्रा आज लगभग पाँच हजार किलोमीटर की साइकिलिंग करने के बाद भी मुझे सर्वप्रिय है क्योंकि उस यात्रा ने मुझे साइकिलिंग करना ही नहीं सिखाया बल्कि सीखने की



कोई उम्र नहीं होती बस स्वयं पर विश्वास होना चाहिए कि भावना को भी बल दिया फलस्वरूप राजस्थान के प्रत्येक शहर को साइकिल से घूमने का आनंद आज अविस्मरणीय है।

इन यात्राओं के दौरान जीवन की वास्तविकताओं से परिचय हुआ जिन्होंने स्वयं को बेहतर तरीके से जानने के अवसर प्रदान किए। लोगों से मिलने के अवसर दिए। इन रास्तों पर जब अनजान लोगों ने आगे बढ़कर हृदय से हमारा स्वागत किया, हमारे बिना कहे हमारी सहायता के लिए हाथ आगे बढ़ाया जो जीवन में यह सिखा गया कि वास्तव में दूसरों के लिए कुछ करने का सुख क्या होता है।

अनगिनत यात्राएँ, अनगिनत अनुभव सभी विशेष। इन यात्राओं से प्राप्त उपलब्धियों में मेरे लिए हर यात्रा के पश्चात प्राप्त होने वाली संतुष्टि को किन्हीं अन्य साधनों से प्राप्त करना असंभव है।

श्रीमती रक्षा सीरिया,
हिंदी अध्यापिका



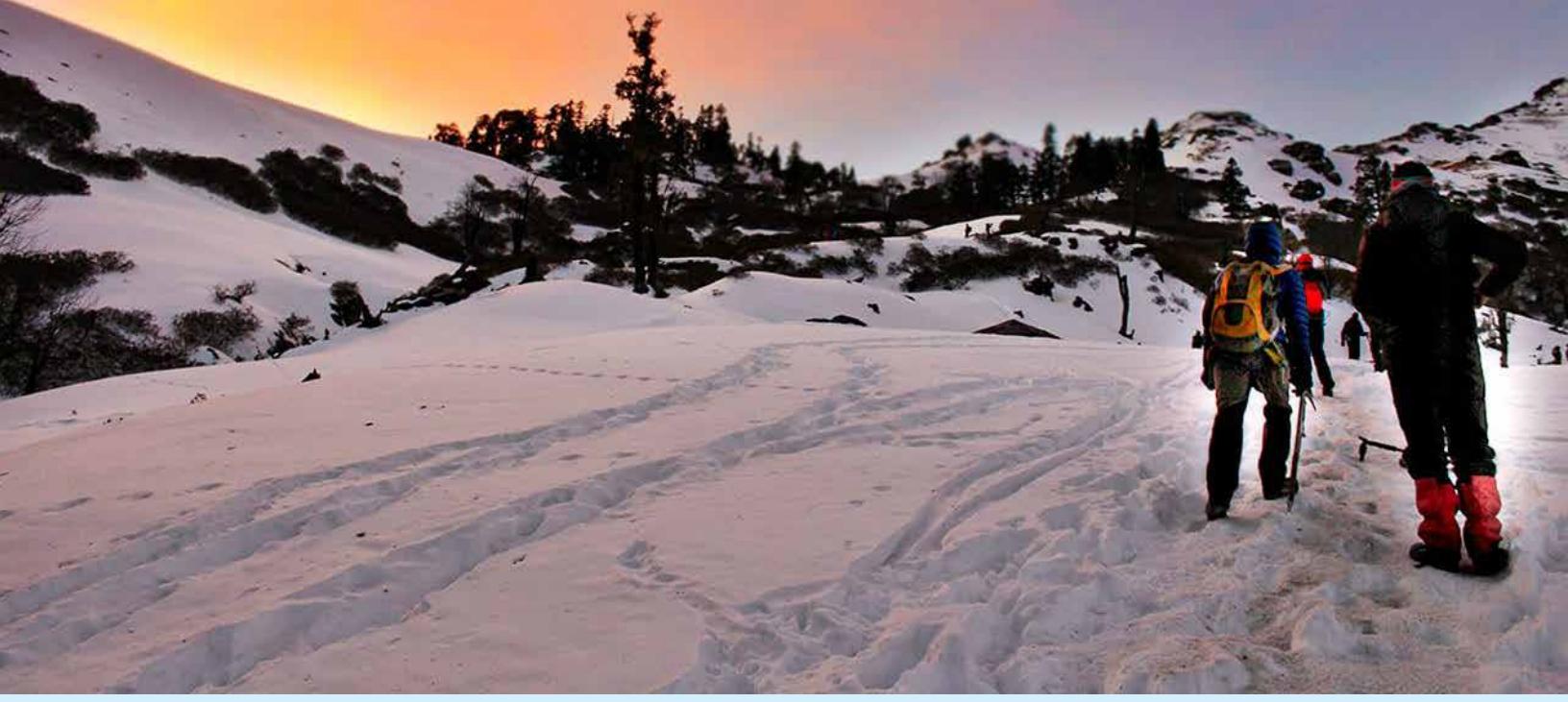


केदारकांठा की रोमांचक यात्रा

पिछले कुछ वर्षों में भारत साहसिक यात्राओं के प्रेमियों के बीच एक लोकप्रिय गंतव्य के रूप में उभरा है। जबकि कुछ साहसिक खेल जैसे 'स्कूबा डाइविंग', 'स्नोर्कलिंग' और 'पैरा ग्लाइडिंग' नए हैं। ट्रैकिंग और स्कीइंग जैसे खेलों का हमारे देश में काफी इतिहास रहा है। उत्तर भारत के एक बड़े हिस्से में पहाड़ी इलाका है जिसमें दुनिया की कुछ सबसे ऊँची चोटियां हैं, जो इसे पैदल यात्रा के लिए आदर्श मार्ग बनाती हैं। भारत में पर्वतारोहण के द्वारा आप इन चोटियों की सुंदरता का पता लगा सकते हैं। जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम और उत्तराखण्ड राज्य सबसे लोकप्रिय स्थानों में से हैं जहाँ भारत में पर्वतारोहण के रोमांच का अनुभव किया जा सकता है। ये स्थान हरे-भरे पहाड़ों से भरे हुए हैं जो साल भर बर्फ से सफेद रंग में रंगे हुए लगते हैं। साहसिक पर्वतारोही को पहाड़ भी सम्मान से आगे बढ़ने की इजाज़त दे देते हैं। इन पहाड़ों पर सीढ़ियां नुमा रास्तों को पैदल चलकर नापना कठिन काम है। ये सीढ़ियाँ आपको हजारों फीट की ऊँचाई तक ले जाती हैं और कुछ मनमोहक प्राकृतिक नजारों से

रूबरू कराती हैं। भारतीय संस्कृति और परंपराओं ने हमेशा पर्यटकों को आकर्षित किया है। भारत में पर्वतारोहण अभियान पर्यटकों द्वारा खूब पसंद किए जाते हैं इसका एक कारण यह भी है कि वे स्थानीय लोगों की जीवन शैली से भी परिचित हो जाते हैं। ये ट्रैक आपको विभिन्न गाँवों में ले जाते हैं, जिससे आप वहाँ के निवासियों के साथ संवाद कर सकते हैं और साथ ही साथ उनके जीवन व दिनचर्या आदि के बारे में जान सकते हैं।

मैंने विद्यालय में कई 'एडवेंचर ट्रिप' किए, उनमें से एक यादगार ट्रैक था केदारकांठा। केदारकांठा बहुत ही सुन्दर ट्रैक है जो गर्मियों में अपनी खूबसूरती के चरम पर होता है, और इसे भारत में सबसे सुंदर 'स्नोट्रैक' में से एक माना जाता है। केदारकांठा शीतकालीन ट्रैक बहुत मुश्किल नहीं है लेकिन इसके लिए आपको स्वस्थ होना आवश्यक है। यह आमतौर पर देहरादून से ही 6-8 घंटे की पहाड़ी मार्ग पर बस यात्रा से शुरू होता है। यदि मौसम साफ है तो केदारकांठा ट्रैक पर लगभग 5-6 दिन लगते हैं। गर्मियों में केदारकांठा शिखर तक की यात्रा आपको हरी



धास के मैदानों, सुगंधित देवदार के पेड़ों और 'ओक' के जंगलों में ले जाती है, जो पक्षियों की चहचाहट और जंगली फूलों से भरे होते हैं। आपके पैरों को छुबाने के लिए ताजी बर्फ और निर्मल-स्वच्छ पानी की धाराएँ हैं। केदारकांठा सर्दियों में आपको मोटी बर्फ में ले जाने के लिए सबसे आसान ट्रैक में से एक है। पहली बार यात्रा करने वालों के लिए यहाँ सब कुछ अनोखा होता है। बर्फ की पर्त इतनी मोटी और शुद्ध कि हम उसमें कूदे बिना नहीं रह सकते। रात में 'कैम्प फायर' शीतकालीन ट्रैक का आनंद और बढ़ा देता है।

केदारकांठा की यात्रा सांकरी के लिए एक सुंदर ड्राइव के साथ शुरू होती है, जो मसूरी और टोंस नदी के किनारे से गुजरती है। हमने यहाँ रात के लिए डेरा डाला और दूसरे दिन 'जुड़ा का तालाब' की यात्रा पूरी की। यह जगह अभी तक मेरे द्वारा देखे गए सबसे सुंदर शिविरों में से एक है। यहाँ देवदार के पेड़ों से घिरा एक छोटा-सा तालाब है, जिसके पीछे बर्फ से हँके पहाड़ हैं। हमने तय किया कि अगले दिन सुबह जल्दी उठेंगे और देखेंगे कि भोर पहाड़ों को कितना सुनहरा बना देती है। वास्तव में सुबह-सुबह का दृश्य देखने लायक था ऐसी सुंदरता देखकर मेरा मन खुशी से भर गया। तीसरे दिन हमने केदारकांठा

बेस कैंप के लिए प्रस्थान किया तथा दोपहर तक वहाँ पहुँच गए। शेष दिन शिविर में आराम किया, स्थानीय क्षेत्र की जानकारी ली और अगले दिन की तैयारी की। आज का एक लंबा ट्रैक था जिसमें लगभग आठ घंटे से अधिक का समय लग सकता था, इसलिए हमने ट्रैक जल्दी शुरू करने का फैसला किया। चोटी पर चढ़ते समय दोनों तरफ शानदार नजारे दिखाई दे रहे थे। चोटी फतह करने के बाद हम लोग वापस आधार शिविर पर पहुँचे। पहाड़ों की इन सुन्दर वादियों को अलविदा कहने का समय आ गया था। उदास होकर इन वादियों से विदा ली और मन में यह विचार बार-बार आ रहे थे कि मैं जल्दी ही एक बार फिर से आऊँगा। वाहन हमारा इंतजार कर रहे थे। शाम को हम लोग देहरादून पहुँचे और वहाँ से बस से ग्वालियर के लिए रवाना हो गए। इस तरह मेरी एक यादगार यात्रा का समापन हुआ।

सिद्ध अग्रवाल

(पूर्व छात्र - माधव 2021)



स्वच्छ नागपुर-सुन्दर नागपुर

“जो परिवर्तन आप दुनिया में देखना चाहते हैं वह सबसे पहले अपने आप में लागू करें।” - महात्मा गांधी



महात्मा गांधी जी की ये बात स्वच्छता पर भी लागू होती है। अगर हम समाज में बदलाव देखना चाहते हैं तो सर्वप्रथम हमें स्वयं में बदलाव लाना होगा। हर कोई दूसरों की राह तकता रहता है और पहले आप-पहले आप में गाड़ी छूट जाती है। साफ़-सफ़ाई से हमारा तन-मन दोनों स्वस्थ और सुरक्षित रहते हैं। यह हमें किसी और के लिए नहीं, वरन् खुद के लिए करना है। यह जागरूकता जन-जन तक पहुँचानी होगी। हमें इसके लिए ज़मीनी स्तर से लगकर काम करना होगा। हमें बचपन से ही बच्चोंमें

सफाई की आदत ड़लवानी होगी। उन्हें सिखाना होगा कि एक जानवर भी जहाँ बैठता है, उस जगह को झाड़-पौछ कर बैठता है। जब जानवरों में साफ़-सफ़ाई के प्रति इतनी जागरूकता है, फिर हम तो इंसान हैं। गांधी जी की इसी विचारधारा से प्रेरित होकर हमने भी ‘आई-क्लीन नागपुर’ नामक एक संगठन की स्थापना की जिसका उद्देश्य अपने शहर को साफ व सुन्दर रखना है।

‘आई-क्लीन’ नागपुर समूह सार्वजनिक क्षेत्रों की सफ़ाई करने, दीवारों को सफ़ाई से संबंधित संदेशों और आकर्षक वर्ली डिजाइनों के साथ चित्रित करने में माहिर है। सभी कार्यकर्ता इसी क्षेत्र के मूल निवासी हैं। उन्होंने इस क्षेत्र में लगभग 201 स्थानों को चिन्हित किया है, जिन्हें सजाया व सँवारा जाएगा। समूह ने हाल ही में अपने गठन के छह साल पूरे किए हैं।

समूह का मानना है कि स्वच्छता ईश्वर के नजदीक है, और एक स्वच्छ परिवेश निश्चित रूप से सभी नागरिकों के लिए एक स्वस्थ वातावरण को बढ़ावा देगा। इस विचारधारा पर काम करते हुए उन्होंने यह सुनिश्चित किया है कि इस गतिविधि के दौरान प्रतिभागियों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए पर्याप्त सावधानी बरती जाए। इसमें हाथ-दस्ताने, मास्क, टोपी, जूते, साबुन, सैनिटाइजर आदि का अनिवार्य रूप से प्रयोग शामिल था। सभी से अपने लिए पीने का

लोकमत समाचार

प्लेटफार्म की दीवारों पर मोर, झोपड़ी उकेरकर ‘आई क्लीन’ ने यात्रियों को किया जागरुक

कपड़े की थैली
का उपयोग करने
की दी सलाह

मालवा | 9 दिसंबर 2021 नेतृत्व

मालवाका लोगों ‘आई क्लीन’ को
जो भी सांचेयों को नाश्त करने
से दोषित है वह आपका नाश्त पा-
सिया बनानुहोस्त बनाएगा। के-
जाए जो दौड़ों और बिना ज्ञ-
प्तियों की घटनाओं की विषय
करते हैं। इसमें अकेले यात्री ने भी
सांचे का दूसरे बार में अकाला
बनाया दिया।

यात्रा की जीवन में शहर के
एक लोगों द्वारा बनाया जाना
जाना चाहिए। इसके लिए यात्री
को जानना चाहिए। यात्रा की जीवन
की दूसरी बार में अकाला



प्लेटफार्म की दीवारों पर मोर, झोपड़ी उकेरकर
‘आई क्लीन’ ने यात्रियों को किया जागरुक।

प्लेटफार्म की दीवारों पर मोर, झोपड़ी उकेरकर
‘आई क्लीन’ ने यात्रियों को किया जागरुक।

मालवाका लोगों को
प्लास्टिक के बदले कपड़ों की
सेवियों का उपयोग करने का सहा-
यता भी संभव करता जा सकता।

मालवा में 65 वर्ष की आयु
के सदस्य समिन हैं। दूसरे युवाओं,
जोड़, बाईट एकाई, बालायी
होती संगतिक बनायी जाती
है। संगठन के साथ वह
चाहीं 50 वर्ष एकाई का यह
सार्वजनिक करता है।

मालवा यात्री के भारत के
प्रत्येक शहर में यात्री की ओर से
और प्रत्येक यात्राकारी का साथ के
साथ यात्रा करते हैं। मालवा के यात्रार्थी
प्लेटफार्म की दीवारों का भी भींगा।

यात्री की ओर आकर्षणीय
प्लेटफार्म बनाने के लिए यात्रार्थी
यात्रा की दीवारों को यात्रा करना
यात्रा सांचारिक मरमत के बीच बनाना
भी नियमजात बनाना सामाजिक कार्य
करना है। यात्रा की दीवारों को
यात्रा की दीवारों को बनाना यात्रा करना है।

पानी को ले जाने का आग्रह किया गया। प्रतिभागियों ने
यह भी सुनिश्चित किया कि वे काम करते समय सुरक्षित
दूरी बनाए रखें। संगठन आम तौर पर क्षेत्र के उत्साही
निवासियों से जुड़ते हुए इस अभियान को आगे बढ़ाते रहते
हैं।

इन सफाई अभियान को न केवल आम जनता का समर्थन
मिला है, बल्कि नागपुर नगर निगम द्वारा भी भरपूर सरा.
हना की गयी। निगम भी हमारे इन अभियानों में सक्रिय
रूप से भाग लेता है और एकत्रित कचरे को हटाने और
निपटान के लिए आवश्यक उपकरण और श्रमशक्ति उपलब्ध
करवाकर संगठन का उत्साहवर्धन करता है। टीम एकल-उपयोग
वाले प्लास्टिक पर आवश्यक प्रतिबंध को लागू करवाने में
नागरिक प्रशासन का सक्रिय रूप से समर्थन कर रही है।
सभी प्रमुख स्थानों पर इस संदेश को प्रमुखता से चित्रित
किया जा रहा है। संगठन के सदस्य प्लास्टिक के संभावित
खतरे के बारे में विक्रेताओं और आम आदमी को जागृत
करने के लिए समय-समय पर अभियान चलाते हैं।

हमारे समूह के लिए उम्र की कोई बाधा नहीं है। हमारे
पास दस वर्ष से लेकर पैंसठ वर्ष तक के स्वयंसेवक हैं
जो हमारे शहर की स्वच्छता और सौंदर्यकरण की दिशा
में अपने तरीके से योगदान करते हैं। सदस्यों में कई
व्यवसायों के व्यक्ति शामिल हैं, जिनमें छात्र, गृहणियां, छोटे
बच्चे, सीए, डॉक्टर, वकील, व्यवसायी, आई.टी पेशेवर,
सेवानिवृत्त व्यक्ति और अन्य शामिल हैं। अपने शहर को
साफ़ और सुंदर बनाने की सच्ची भावना रखने वाले प्रत्येक
व्यक्ति का इस स्वैच्छिक संगठन में शामिल होने पर स्वागत
किया जाता है। प्रत्येक स्थान पर कम से कम तीन-चार

नए सदस्य समूह में शामिल होते हैं। इस टीम द्वारा पहले
किए गए स्पॉट में अंबाज़री झील, रेलवे स्टेशन, बस स्टॉप,
स्कूल, कॉलेज, वृद्धाश्रम, अस्पताल, मोक्षधाम, व्यस्त चौक,
छात्रावास, रिमांड होम, पुलिया, पार्किंग जोन, पुलिस स्टेशन
और जनहित के अन्य स्थान शामिल हैं।

अपनी गतिविधियों को आर्थिक रूप से मजबूत करने के
लिए प्रत्येक स्वयंसेवक हर महीने कम से कम पचास रुपए
का योगदान देता है। प्रत्येक स्थान पर नागरिकों से कुछ
स्वैच्छिक अंशदान भी प्राप्त होते हैं। यह समूह का सपना
है कि भारत के प्रत्येक शहर में एक ‘आई-क्लीन’ टीम
होनी चाहिए और प्रत्येक नागरिक को स्वच्छता व्यवस्था
का पालन करना चाहिए।

समूह ने नागपुर के सभी समान विचारधारा वाले लोगों से
शहर की सफाई और सौंदर्यकरण के अपने उत्साह में
शामिल होने की अपील की है। उन्होंने शहरवासियों से
अनुरोध किया कि वे कचरा निपटान के उचित तरीकों को
अपनाकर और निरंतर निगरानी के माध्यम से सुशोभित
स्थान की सफाई बनाए रखने में मदद करें। सभी उम्र
और व्यवसाय के लोग स्वेच्छा से इन प्रयासों का हिस्सा
बन सकते हैं।



संदीप अग्रवाल

पूर्व छात्र द सिंधिया स्कूल



स्वतंत्रता साहसी होने में है...

शरीर की ताकत मायने नहीं रखती है। आपका साहस मायने रखता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने सभी साहसिक अभियानों को अंजाम दिया है।

जैसे ही मैंने इस लेख को लिखना शुरू किया मुझे वह रात याद आ गई जो हमने पिछले साल अक्टूबर में धौलागिरी बेस कैंप (4,650 मीटर) में बिताई थी। हम नेपाल में धामपस चोटी (6,012 मीटर) पर चढ़ने का प्रयास कर रहे थे। 27 अक्टूबर 2011 को शाम के सात बज रहे थे, हमारे पास केवल 'रारा' सूप नूडल्स (नेपाली व्हाइट नूडल्स) था जिसे हमने अपने स्लीपिंग बैग के अन्दर आंशिक रूप से ढँका हुआ था। धौलागिरी पर्वत दुनिया की सातवीं सबसे ऊँची चोटी है, जो अब बिलकुल हमारे सामने थी। हम चोटी पर चढ़ने से पहले दो रातों के लिए ग्लेशियर पर डेरा डाले हुए थे। बाहर बह रही ठंडी हवा हमारे तंबू को कंपकपा रही थी। दरारों को ढीली करती पहाड़ से बर्फ के खिसकने की आवाज स्पष्ट सुनाई दे रही थी।

मैं अपनी पीठ के दर्द को एक स्थानीय आयुर्वेदिक औषधि का सहारा लेकर दूर करने का प्रयास कर रहा था। तापमान शून्य डिग्री से नीचे होने कारण मैं इस दर्द से काफी परेशान था। हमारे आधार शिविर का तापमान सुबह 3 बजे (शून्य से बीस डिग्री) की तुलना में शाम 6-7 बजे थोड़ा गर्म शून्य से 10 डिग्री नीचे था। सफेद बर्फ से ढँके राजसी धौलागिरी पर्वत को देखकर मन भाव-विभोर हो गया। अपने पीले रंग के तीन तंबू मुझे आज भी याद हैं। यह एक ऐसी छवि है जो मेरे दिमाग हमेशा-हमेशा के लिए अंकित हो गई है, जिसे कोई भी कैमरा कैद नहीं कर सकता। अपने तम्बू के बाहर कम लेकिन सार्थक समय बिताने के बाद मैं अपने आप को स्लीपिंग बैग के अंदर बंद कर लेता हूँ। सोते समय पढ़ने के लिए अपना 'हैरी पॉटर' और 'द फिलोस्फर स्टोन' खोलता हूँ।

लेकिन मेरे दिमाग में उस ठंडी रात का डर सता रहा है, जो अगले दिन आने वाली थी। कुछ ही पन्ने पढ़कर मेरी आँखें बंद होने लगी रात को मैं एक और दरार के खिसकने की आवाज सुनता हूँ और नींद खुल जाती है। हम ग्लेशियर पर सो रहे थे और शीत लहर शरीर को काटने को दौड़ रही थी। मेरी पीठ का दर्द अब और बढ़ रहा था। आराम करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा था, लेकिन दर्द कम होने का नाम ही नहीं ले रहा था। 'स्लीपिंग'



'बैग' से अपना सिर बाहर निकालकर देखा तो तंबू के अंदर बर्फ की एक पतली पर्त जमी हुई थी। यह मेरे अब तक के किसी भी ट्रैक की सबसे कठिन रात थी। जिसे मैं चाहूँ भी तो कभी नहीं भूल सकता, पर यही कष्टदायी, चुनौतीपूर्ण समय आपको शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत बनाता है।

उसके बाद 2016 में कुछ चुनौती पूर्ण अनुभव हुए हैं उनमें से एक है- जब मैं द्वीप चोटी (6,189 मीटर) के शिखर पर बीमारी के कारण लगभग गिर गया था। इसके बाद भी मैं हर साल वापस आता रहा और नए-नए क्षेत्रों की खोज कर पहाड़ों पर चढ़ता रहा। मेरे दोस्त और परिवार वाले अक्सर मुझसे पूछते हैं कि ऐसा जोखिम क्यों उठाते हो? पिछले पाँच वर्षों में मैं एक व्यक्ति के रूप में बहुत बदल गया हूँ। कुछ कार्यों के प्रति जो लगाव और जूनून है इसके लिए मैं सिंधिया स्कूल का आभारी हूँ। बास्केटबॉल प्रशिक्षण, गणतंत्र दिवस परेड के लिए बैंड अभ्यास, इंटर-स्कूल हो या इंटर-हाउस प्रतियोगिता, स्कूल में बिताए उन छह वर्षों ने मेरे मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ी है। स्नातक होने के नौ साल बाद भी मैं इन क्षणों को याद कर रोमांचित हो जाता हूँ। मैं किसी अभियान से पहले कुछ हफ्तों या महीनों के प्रशिक्षण में विश्वास नहीं करता।

प्रशिक्षण अब मेरी जीवन शैली का हिस्सा है। मौसम, स्थान, समय, या किसी भी अन्य बहाने की परवाह किए बिना मैं किसी न किसी रूप में एक वर्ष में 365 दिन प्रशिक्षण दे रहा हूँ। अगर मैं खुद को पूरे दिन में कम से कम एक घंटा नहीं देता तो मैं बेवैन महसूस करता हूँ। यही वह सरल मंत्र है जिसका मैं प्रतिदिन पालन करता हूँ। मैं स्वस्थ रहने के लिए साइकिल से काम पर आता-जाता हूँ तथा स्थानीय स्तर पर गाड़ी का इस्तेमाल करना मैंने छोड़ दिया है। यह मेरे लिए दैनिक आधार पर शारीरिक कसरत का ही एक रूप है। दो साल पहले नेपाल वापस आने के बाद मेरा प्रकृति के प्रति प्रेम कई गुना बढ़ गया है। मुझे मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और शहर की ज़िंदगी से दूर पहाड़ों में पगड़ंडियों पर दौड़ना, जंगलों के अंदर या ग्लेशियर पर घूमना अच्छा लगता है। प्रकृति की गोद में मुझे आत्म निरीक्षण करने का समय मिलता है।

जब मैं आस-पास की पहाड़ियों में अपनी लंबी दौड़ के लिए जाता हूँ तो मैं अच्छे संगीत और अपने विचारों से घिरा होता हूँ। मैं कुछ चीजों पर चिंतन करता हूँ और दिन भर की सारी निराशा को पसीने के रूप में बहाता हूँ। पिछले साल से अब योग को भी मैंने अपनी दिनचर्या में शामिल का लिया है। योग आपके शरीर को शांत करने और आराम करने में मदद करता है जिसका मतलब तनाव का कम होना है और आप अपने काम पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। यही कारण है कि बच्चों और किशोरों को योग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है क्योंकि यह उनकी पढ़ाई में बेहतर तरीके से ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है।

किसी भी कार्य को करने के पीछे हर किसी का विचार और अपना मत होता है। मेरी इन साहसिक यात्राओं के प्रेरणा स्रोत मेरे मामा जी हैं जो लगभग पचास साल के हैं। वे मेरे सुपर 'स्ट्रॉन्ग वर्कआउट फ्रेंड' और मेरे 'क्लाइंबिंग पार्टनर' हैं। 2015 में उनके द्वारा की गई एवरेस्ट बेस कैंप की ट्रेकिंग की तस्वीरों को देखकर मैं ट्रेकिंग और चढ़ाई की दुनिया की ओर आकर्षित हुआ। मैदान पर और मैदान के बाहर आज भी वह मेरी सबसे बड़ी ताकत है, मेरी अब तक की सभी प्रमुख उपलब्धियों के पीछे प्रमुख स्तम्भ और आदर्श मेरे हैं। हमारा अगला साहसिक कार्य नेपाल के ऊपरी और निचले डोलपो क्षेत्र के चारों ओर एक बाईस दिन लंबा ट्रैक है, जिसकी योजना अक्टूबर 2021 में है। मैं इस वर्ष के अंत में एक अनोखे साहसिक कार्य की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

हर्सोत्सव

पूर्व छात्र (दौलत सदन)



द सिंधिया स्कूल

द दुर्ग, ग्वालियर-474008, म.प्र., इंडिया दूरभाष : 91-751-2480750, फैक्स : 91-751-2480650
ई-मेल : office@scindia.edu, वेबसाइट : www.scindia.edu